नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 340, नई दिल्ली, रविवार 08 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है.. पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है..!!

03 -: मूर्तिपूजा :-

06 इसे ठीक करना होगा': सीजेआई सूर्यकांत ने फैसले सुनाने में देरी पर कहा....

08 राउरकेला में स्क्रैप गोदामों पर पुलिस की छापेमारी

राजधानी या गायब होती जिंदगियों का शहर?

(यह कोई मामूली क्राइम का आंकड़ा नहीं है जिसे रूटीन रिपोर्टिंग का हिस्सा मानकर नज़रअंदाज़ किया जा सके।)

संजय कुमार बाठला

देश की राजधानी दिल्ली को अक्सर ताकत, सुरक्षा और मॉडर्निटी के प्रतीक के तौर पर दिखाया जाता है।

ऊंची-ऊंची इमारतें, स्मार्ट सिटी के दावे, 24 घंटे निगरानी वाले कैमरे, और दुनिया के सबसे बड़े पुलिस सिस्टम में से एक — ये सब इस भरोसे को जन्म देते हैं कि दिल्ली सुरक्षित है।

लेकिन 2026 के पहले पंद्रह दिनों के आंकड़े इस भरोसे पर गहरा शक पैदा करते हैं।

दिल्ली पुलिस के आधिकारिक डेटा के मुताबिक, सिर्फ़ 1 से 15 जनवरी के बीच 807 लोग लापता हो गए। औसतन, शहर में हर दिन 54 लोग गायब हुए, या हर घंटे दो से ज़्यादा लोग।

यह कोई मामूली क्राइम का आंकड़ा नहीं है जिसे रूटीन रिपोर्टिंग का हिस्सा मानकर नज़रअंदाज़ किया जा सके।

इस पूरी तस्वीर का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि लापता लोगों में से 509 महिलाएं और लड़कियां हैं।

इसका मतलब है कि लगभग दो-तिहाई मामले सीधे महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े हैं।

एक ऐसी राजधानी में जो महिलाओं की सुरक्षा के बारे में सबसे ज़्यादा दावे करती है, इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं और लड़कियों का गायब होना सिस्टम पर गंभीर सवाल खड़े करता है।

यह सिर्फ़ अपराध का संकेत नहीं है, बल्कि असुरक्षा के सामान्य होने का संकेत है, जहाँ महिलाओं का गायब होना भी एक आंकड़ा बन जाता है।

इन 807 गुमशुदगी के मामलों में से,

*191 नाबालिग थे। इनमें से,

*146 लड़कियाँ हैं।

इसका मतलब है कि सिर्फ़ पंद्रह दिनों में, रोज़ाना औसतन 13 बच्चे लापता हुए, और उनमें से ज़्यादातर लड़कियाँ थीं।

यह बात किसी भी संवेदनशील समाज के लिए एक वेक-अप कॉल होनी चाहिए।

लेकिन हमारे समाज का रिएक्शन अक्सर उतना तेज़ नहीं होता जितना होना चाहिए। आँकड़े पढ़े जाते हैं, बहसें होती हैं, और फिर अगली खबर आ जाती है।

दिल्ली पुलिस के अनुसार, 235 लोग मिल गए हैं, लेकिन 572 अभी भी लापता हैं। यह संख्या सिर्फ़ एक एडमिनिस्ट्रेटिव प्रोग्रेस रिपोर्ट नहीं है। यह 572 परिवारों की अनिश्चितता, दुख और अंतहीन इंतज़ार का प्रतीक है।

हर गुज़रता दिन उन लोगों की उम्मीद को कम कर देता है जिनके अपने अचानक गायब हो गए हैं।

सवाल यह नहीं है कि कुछ लोग मिल गए हैं, बल्कि यह है कि इतने सारे लोग अभी भी क्यों नहीं मिले हैं।

एक असहज लेकिन ज़रूरी सवाल यह है कि क्या हर लापता व्यक्ति के मामले को उतनी ही गंभीरता से लिया जाता है।

असलियत यह है कि गरीब, प्रवासी मज़दूरों, घरेलू कामगारों, या झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों के गायब होने के मामलों को अक्सर हल्के में लिया जाता है।

कई मामलों में, शुरुआती रिएक्शन शक से भरा होता है — "हो सकता है वह घर से भाग गया हो," "हो सकता है वह किसी रिश्तेदार के यहाँ गया हो।"

यह सोच और भी खतरनाक साबित होती है, खासकर लड़कियों से जुड़े मामलों में, क्योंकि शुरुआती लापरवाही बाद में न ठीक होने वाला नुकसान पहुँचा सकती है।

महिलाओं और बच्चों के गायब होने के पीछे सिर्फ़ निजी कारण नहीं होते। इनमें मानव तस्करी, संगठित अपराध, अवैध मज़दूरी, यौन शोषण, घरेलू हिंसा और ज़बरदस्ती शादी जैसे कई खतरनाक पहलू शामिल होते हैं।

दिल्ली जैसे महानगर न सिर्फ़ इन नेटवर्क के लिए डेस्टिनेशन हैं, बल्कि ट्रांज़िट पॉइंट भी हैं।

इसलिए, यह ज़रूरी हो जाता है कि हर लापता व्यक्ति के मामले को सिर्फ़ लापता व्यक्ति के तौर पर दर्ज न किया जाए, बल्कि संभावित अपराध को ध्यान में रखते हुए गंभीरता से जाँच की जाए।

यह और भी चिंताजनक हो जाता है जब हम सोचते हैं कि यह सब टेक्नोलॉजी के ज़माने में हो रहा है।

मोबाइल फोन, लोकेशन डेटा, CCTV कैमरे, डिजिटल पेमेंट और सोशल मीडिया जैसी टेक्नोलॉजी होने के बावजूद, अगर लोग इतनी बड़ी संख्या में लापता हो रहे हैं, तो यह या तो संसाधनों के सही इस्तेमाल की कमी या इच्छाशक्ति की कमी को दिखाता है। जब एक VIP मूवमेंट के लिए कुछ ही मिनटों में पूरे शहर को रोका जा सकता है, तो जब कोई आम नागरिक गायब हो जाता है तो वही तेज़ी क्यों नहीं दिखाई जाती?

यह समस्या सिर्फ़ पुलिस या सरकार तक सीमित नहीं है।

समाज की भूमिका और हमारी सामूहिक चुप्पी भी उतनी ही ज़िम्मेदार है। हम खबरें पढ़ते हैं, थोड़ी देर के लिए चिंता करते हैं, और फिर अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में लौट आते हैं।

जब तक कोई लापता व्यक्ति हमारे परिवार, पड़ोस या जान-पहचान वालों के दायरे में नहीं मिलता, तब तक वे दूर की खबरें ही बने रहते हैं।

यह उदासीनता समस्या को और बढ़ा देती है।

हर सरकार महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता बताती है।

*हेल्पलाइन नंबर,

*मोबाइल ऐप,

*जागरूकता अभियान, और

*फास्ट-ट्रैक कोर्ट की घोषणा की जाती है।

लेकिन ज़मीनी हकीकत बार-बार इन दावों को झूठा साबित करती है।

अगर नीतियां सच में असरदार होतीं, तो देश की राजधानी में पंद्रह दिनों के अंदर 509 महिलाएं और लड़कियां गायब नहीं होतीं।

यह अंतर नीति और अमल के बीच की खाई को दिखाता है।

*यह आत्म-मंथन का समय है।

*यह पूछने का समय है कि क्या हमारी नीतियां सिर्फ़ कागज़ों तक सीमित हैं।

*क्या हर लापता मामले की समय पर समीक्षा की जाती है?

*क्या लापरवाही के लिए जवाबदेही तय की जाती है?

अक्सर, इन सवालों के जवाब चुप्पी में खो जाते हैं, और यह चुप्पी ही समस्या को और बढ़ा देती है।

इस संकट को कोई एक विभाग या एक आदेश से हल नहीं किया जा सकता। इसके लिए एक साथ मिलकर कोशिश करने की ज़रूरत है - पुलिस की संवेदनशीलता, प्रशासनिक सक्रियता, सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक इच्छाशक्ति, सभी को एक साथ आना होगा।

लापता महिलाओं और बच्चों के मामलों को रूटीन प्रक्रिया नहीं, बल्कि इमरजेंसी के तौर पर देखा जाना चाहिए।

आखिरकार, सवाल सिर्फ़ यह नहीं है कि दिल्ली कितनी आधुनिक या स्मार्ट है।

असली सवाल यह है

* कि क्या शहर अपने सबसे कमज़ोर नागरिकों की रक्षा कर पा रहा है।

* अगर जवाब नकारात्मक है, तो यह सिर्फ़ प्रशासन की नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक विफलता है।

*लापता लोग सिर्फ़ आंकड़ों में नाम नहीं हैं।

वे हमारी सामाजिक चेतना की परीक्षा हैं - और अभी, हम इस परीक्षा में फेल होते दिख रहे हैं।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

दिल्ली जल बोर्ड की लापरवाही: बड़ी दुर्घटना का खतरा मंडरा रहा

संजय कुमार बाठला

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के जनकपुरी में दिल्ली जल बोर्ड की लापरवाही से एक व्यक्ति की मौत हो चुकी है, फिर भी सबक लेने के बजाय शिवाजी इंक्लेव में वही घातक गलतियां दोहराई जा रही हैं।

मुख्य सड़क पर सीवर लाइन डालने के नाम पर बीच - बीच में गहरे गड्ढे खोदे गए हैं, जो बिना किसी सुरक्षा उपाय के खुले पड़े हैं।

न जाली, न रिफ्लेक्टर,

न ही कोई गार्ड

— यह सब कुछ ऐसी स्थिति पैदा कर रहा है जहां किसी भी वक्त बड़ी दुर्घटना हो सकती है।

सुरक्षा के नाम पर सिफर व्यवस्था

* गड्ढों की स्थितिः खुदाई 5 दिन पहले शुरू हुई, लेकिन आज भी गड्ढे खुले हैं; मदर डेयरी के सामने का गहरा गड्ढा विशेष रूप से खतरनाक।

* यातायात प्रबंधन की कमीः एक तरफ सड़क बंद, दूसरी तरफ वैकल्पिक रास्ता बिना किसी संकेत के खुला; कई लोग गिरकर चोटिल हो चुके।

*निवासियों पर असरः बच्चे - बुजुर्ग घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे; दूध, राशन जैसी जरूरी चीजें लाने में दिक्कत।

जनकपुरी हादसे के बाद दिल्ली सरकार के जल मंत्री परवेश वर्मा और गृह मंत्री आशिष सैनी ने घटनास्थल का दौरा किया था।

वहां कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया, तो भाजपा ने जवाबी धरना दिया। लेकिन ये राजनीतिक नाटक तो हो गए,

असल समस्या का हल कहां?

* राजनीतिक दायित्व से बचना बंद करें अधिकारी दिल्ली जल बोर्ड की यह लापरवाही अब क्रॉनिक बीमारी बन चुकी है। सीवर कार्य के दौरान बुनियादी सुरक्षा मानकों का पालन न करना न सिर्फ मानवीय भूल है, बल्कि आपराधिक लापरवाही भी।

निवासियों में जल बोर्ड और दिल्ली सरकार के खिलाफ व्यापक रोष व्याप्त है —

और सही भी।

* क्या अब भी इंतजार करेंगे कि कोई और जान गंवाए?

* जल बोर्ड को तत्काल निर्देश जारी करने चाहिएः

*हर गड्ढे पर जाली लगाएं,

*24x7 गार्ड तैनात करें,

*वैकल्पिक मार्ग चिह्नित करें।

दिल्ली सरकार को जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी— वरना जनता का गुस्सा सड़कों पर उतरेगा। जनकपुरी का सबक भूलिए मत, वरना शिवाजी इंक्लेव अगला शिकार बनेगा।

दिल्ली जल बोर्ड की लापरवाही: कानूनी अपराध बन चुका खतरा

जनकपुरी हादसे पर BNS 105 के तहत एफआईआर, फिर भी शिवाजी इंक्लेव में सुरक्षाहीन गड्ढे

जनकपुरी में दिल्ली जल बोर्ड के खुले गड्ढे में बाइक सवार कमल की मौत के बाद पुलिस ने ठेकेदार व बोर्ड अधिकारियों के खिलाफ बीएनएस धारा 105 (गैर-इरादतन हत्या) के तहत एफआईआर दर्ज की है, जो लापरवाही से मौत पर आजीवन कारावास या 5 -10 वर्ष की सजा का प्रावधान रखती है।

शिवाजी इंक्लेव के मुख्य सड़क पर सीवर खुदाई के गहरे गड्ढे अब भी बिना जाली, रिफ्लेक्टर या गार्ड के खुले हैं, जो जनकपुरी जैसी दुर्घटना को आमंत्रित कर रहे हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट ने पहले भी दिल्ली जल बोर्ड को सुरक्षा मानकों (जैसे बैरिकेडिंग, फ्लड चैंबर ढकना) का पालन न करने पर फटकार लगाई है।

कानूनी प्रावधानों का उल्लंघन

* बीएनएस धारा 105: लापरवाही से मौत का कारण बनना — जानबूझकर चेतावनी न लगाना,

* रोशनी न देना अपराध; जनकपुरी एफआईआर इसी पर आधारित।

*सुरक्षा मानकः

*खुदाई पर मजबूत बैरिकेडिंग,

*चिन्ह, 24x7 निगरानी अनिवार्य;

* सीएम के 8 - सूत्री आदेश लागू, लेकिन दिल्ली जल बोर्ड उल्लंघन कर रहा।

* कोर्ट के पूर्व निर्देशः दिल्ली जल बोर्ड मुख्य मालिक होने पर दायित्व से बच नहीं सकता; मुआवजा व सुधार के आदेश।

* प्रदर्शनों ने उभारा मुद्दा जनकपुरी हादसे पर आम आदमी पार्टी ने बीजेपी सरकार को 'हत्या' का जिम्मेदार ठहराया, प्रदर्शन किए;

* कांग्रेस व बीजेपी ने भी जवाबी धरने दिए, जिसकी तस्वीरें व वीडियो मीडिया में वायरल हुए।

* शिवाजी इंक्लेव निवासी रोष में हैं, लेकिन बड़े प्रदर्शन की तस्वीरें अभी नहीं आईं — हालांकि मदर डेयरी वाले गड्ढे से बच्चे - बुजुर्ग कैद।

राजनीतिक आरोप - प्रत्यारोप से आगे बढ़कर दिल्ली जल बोर्ड को तत्काल एफआईआर के डर से सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

कानूनी कार्रवाई व सस्पेंशन (जैसे जनकपुरी के 3 अधिकारियों का) ही जवाबदेही लाएंगे।

निवासियों का गुस्सा फूटने से पहले एक्शन लें, वरना अदालत कठोर कदम उठाएगी।

दिल्ली जल बोर्ड और दिल्ली सरकार ने जनकपुरी दुर्घटना से सबक नहीं लिया और कितनी दुर्घटनाओं के इंतजार में जल मंत्री

केके छाबड़ा

दिल्ली जल बोर्ड की लापरवाही से अभी और बहुत सी बड़ी दुर्घटना हों सकती है। जैसा सभी जानते हैं जनकपुरी में जल बोर्ड की लापरवाही से एक व्यक्ति को जान गंवानी पड़ी थो।

जल मंत्री प्रवेश वर्मा और गृहमंत्री आशिष सूद दोनों के द्वारा मौके का जयाजा लिया गया और तत्काल घोषणा भी कर दी की जल बोर्ड की लापरवाही नजर आ रही है, पर सिर्फ घोषणा करने से क्या अन्य दुर्घटनाओं पर अंकुश लग जाएगा।

जल बोर्ड की गलती से हुई दुर्घटना के बाद भी कोई सबक नहीं लिया गया है

पश्चिमी दिल्ली के शिवाजी इंक्लेव प्लाट नं 6 मदर डायरी के ठीक सामने बिगत 5 दिन से सीवर डालने के लिए गहरा गड़ा खोद रखा है और वह भी बिना किसी सुरक्षा के नाम पर।

ना कोई बोर्ड, ना कोई रुकावट, ना कोई बाड़, किसी भी समय यहां कोई भी बड़ी घटना घट सकती है।

कौन होगा इसका जिम्मेदार ?

1. दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारी
2. ठेकेदार या
3. रेखा गुप्ता सरकार

सड़क सुरक्षा एवम् दुर्घटना रहित सड़को के प्रति कोशिश

परिवहन विशेष न्यूज

सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत द्वारा आज छोटू राम चौक से लेकर बड़वासनी गांव तक उन सभी खंभों, रेलिंग, डिवाइडर, बेरीकेट्स, साइन बोर्ड इत्यादि पर मिशन सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा के अंतर्गत रेट्रो ठेप युक्त रिफलेक्टर लगाने का कार्य किया गया।

इस दौरान सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत द्वारा

* सड़कों के किनारे जंगली पौधों की कटाई,

* डिवाइडरों के बीच में उगी जंगली पौधों की सफ़ाई,

सभी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर की। सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत ने सरकार से सोनीपत, मुरथल, गोहाना, रोहतक इत्यादि आने जाने वाले वाहन चालकों की सुविधा हेतु

* साइन बोई

* सड़कों के किनारों की लेवलिंग

* कुछ खंभों की तार

* रोशनी का प्रबन्ध,

* रोड मार्किंग,

* रोड साइन,

* ज़ेब्रा क्रॉसिंग एवं

* सड़क के कुछ हिस्से में मरम्मत

* पुल के नीचे बरसाती पानी की निकासी

* नालों की सफाई एवं

* पर्याप्त रोशनी

की मांग करते हुए बताया की इन सभी का समाधान होने से काफी हद तक यातायात व्यवस्था में सुधार एवं सड़क दुर्घटनाओं में रोकथाम लाई जा सकती है।

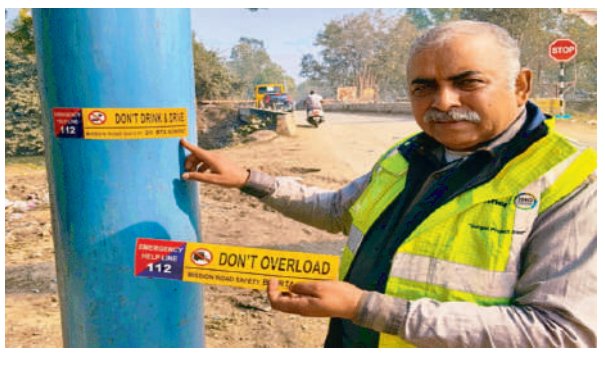

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : भारत का एआई इम्पैक्ट समिट (16–20 फरवरी, 2026) केवल एक सम्मेलन नहीं, बल्कि ग्लोबल साउथ की आवाज़ को वैश्विक एआई गवर्नेंस में

यह भारत को समावेशी, नैतिक और स्केलेबल एआई गवर्नेंस का रणनीतिक नेता बनने की स्थिति में लाता है।

भारत के लिए रणनीतिक महत्व

1. एआई गवर्नेंस में वैश्विक नेतृत्व

- भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित पहला वैश्विक एआई समिट।

- फ्रांस एआई एक्शन समिट में प्रधानमंत्री द्वारा घोषणा।

- तीन स्तंभः जन (People), धरती (Planet), प्रगति (Prosperity)।

- भारत का संदेशः एआई केवल तकनीक नहीं, बल्कि मानवता और पृथ्वी के लिए जिम्मेदारी है।

2. संयुक्त राष्ट्र की स्वीकृति

- यूएन महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत की पहल को "अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण" बताया।

- उनकी उपस्थिति भारत की एआई दृष्टि को वैधता, विश्वसनीयता और वैश्विक समर्थन प्रदान करती है।

3. विकसित भारत 2047 संरेखण

- एआई को समावेशी विकास, सार्वजनिक सेवा वितरण और शासन परिवर्तन का प्रमुख साधन माना गया।

- भारत की बहुभाषी और बहु-प्रारूप क्षमताएँ एआई को लोकतांत्रिक बनाने में अद्वितीय स्थिति देती हैं।

- "AI for All" का भारतीय मॉडल वैश्विक स्तर पर अनुकरणीय बन सकता है।

समिट के बाद प्रभाव

A. नीति और नियामक ढाँचे

भारत से अपेक्षा है कि वह वैश्विक मानकों का नेतृत्व करेगाः

- नैतिक एआई (Ethical AI)

- पक्षपात कम करना (Bias Mitigation)

- डेटा संप्रभुता (Data Sovereignty)

- सार्वजनिक हित के लिए एआई (AI for Public Good)

- AI-specific legislation और IT Act में संशोधन

B. बहुपक्षीय सहयोग

- भारत की भूमिका GPAI, AI for Africa और ग्लोबल साउथ पहल में मजबूत होगी।

- AI को जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे वैश्विक चुनौतियों के समाधान में साझा मंच बनाया जाएगा।

C. उद्योग और नवाचार को बढ़ावा

- 30+ देशों के 300+ प्रदर्शक एआई इम्पैक्ट एक्सपो में शामिल।

- स्टार्टअप्स, अकादमिक जगत और उद्योग सहयोग को बढ़ावा।

- एफडीआई प्रवाह, तकनीकी साझेदारी और एआई स्किलिंग कार्यक्रमों की संभावना।

- भारत को "Innovation Hub of Global South" के रूप में स्थापित करने का अवसर।

D. साइबर सुरक्षा और संप्रभुता

- राष्ट्रीय सुरक्षा, साइबर अपराध पहचान और दूरसंचार नियमन में एआई का एकीकरण।

- सिम बाइंडिंग, धोखाधड़ी पहचान और डिजिटल भुगतान सुरक्षा में एआई-संचालित समाधान।

- एआई एनालिटिक्स से कानून प्रवर्तन और साइबर अपराध जांच क्षमताएँ मजबूत होंगी।

- भारत का लक्ष्यः "Secure Digital Bharat"।

आगे क्या देखना है

1. एआई-विशिष्ट कानून और आईटी अधिनियम में संशोधन

2. सार्वजनिक सेवाओं में एआई का उपयोग – स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, न्याय वितरण

3. साइबर अपराध रोकथाम – एआई-संचालित धोखाधड़ी पहचान, सिम बाइंडिंग प्रवर्तन

4. एआई स्किलिंग और जन-जागरूकता – नागरिकों और अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण

5. वैश्विक साझेदारी – भारत को Responsible AI Governance का मानक स्थापित करना

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

जैसे-जैसे हम आयु के आगे के चरणों में प्रवेश करते हैं, हमारा शरीर कई जैविक परिवर्तनों से गुजरता है।

पिंकी कुंडू

चयापचय (Metabolism) की गति धीमी हो जाती है, मांसपेशियों का द्रव्यमान धीरे-धीरे घटने लगता है, हड्डियों का घनत्व कम होता है और कुछ आवश्यक पोषक तत्वों को अवशोषित करने की शरीर की क्षमता भी कमज़ोर पड़ जाती है। ऐसे में कहा गया सूत्र — "कम खाइए और अधिक चलिए" — एक गहरी और व्यावहारिक समझ प्रदान करता है। इसका आशय केवल भोजन की मात्रा घटाना नहीं, बल्कि भोजन की गुणवत्ता को प्राथमिकता देना और नियमित शारीरिक गतिविधि को जीवन का अभिन्न अंग बनाना है।

परंतु केवल कम खाना पर्याप्त नहीं है। वृद्धावस्था में प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन B12 जैसे आवश्यक पोषक तत्वों का पर्याप्त सेवन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि स्वास्थ्य, शक्ति और आत्मनिर्भरता बनी रह सके।

वृद्धावस्था में पोषण का महत्व क्यों बढ़ जाता है

1. प्रोटीनः शक्ति और जीवन्तता की आधारशिला उम्र बढ़ने के साथ शरीर में मांसपेशियों की शक्ति और आकार में स्वाभाविक कमी आती है, जिसे सार्कोपीनिया कहा जाता है। यह केवल बाहरी बनावट का विषय नहीं है; इसका सीधा संबंध संतुलन, गतिशीलता और गिरने के जोखिम से होता है।

* आश्चर्यजनक रूप से, वृद्ध व्यक्तियों को युवाओं की तुलना में अधिक प्रोटीन की आवश्यकता होती है, क्योंकि उम्र के साथ मांसपेशियाँ प्रोटीन का उपयोग उतनी दक्षता से नहीं कर पातीं।

* प्रोटीन के लाभ केवल मांसपेशियों तक सीमित नहीं हैं — यहः

* रोग प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करता है

* चयापचय स्वास्थ्य को बनाए रखता है

* घाव भरने की प्रक्रिया को तेज़ करता है

* दैनिक कार्यों में आत्मनिर्भरता बनाए रखता है

नवीन वैज्ञानिक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि प्रोटीन-समृद्ध आहार या संतुलित पोषण अनुपूरक (supplements) वृद्ध लोगों में मांसपेशियों की स्थिति और समग्र स्वास्थ्य संकेतकों में उल्लेखनीय सुधार ला सकते हैं।

दुग्ध-उत्पाद, अंडे, दालें, मछली, चिकन, सोया, टोफू और अंकुरित अनाज जैसे स्रोत उत्तम विकल्प हैं।

2. कैल्शियमः मजबूत हड्डियों की नींव हमारी हड्डियाँ निरंतर टूटने और बनने की प्रक्रिया से गुजरती रहती हैं। 60 वर्ष की आयु के बाद, विशेषकर रजोनिवृत्ति (Menopause) के पश्चात महिलाओं में, यह संतुलन हड्डियों के क्षय की ओर झुक जाता है। परिणामस्वरूप

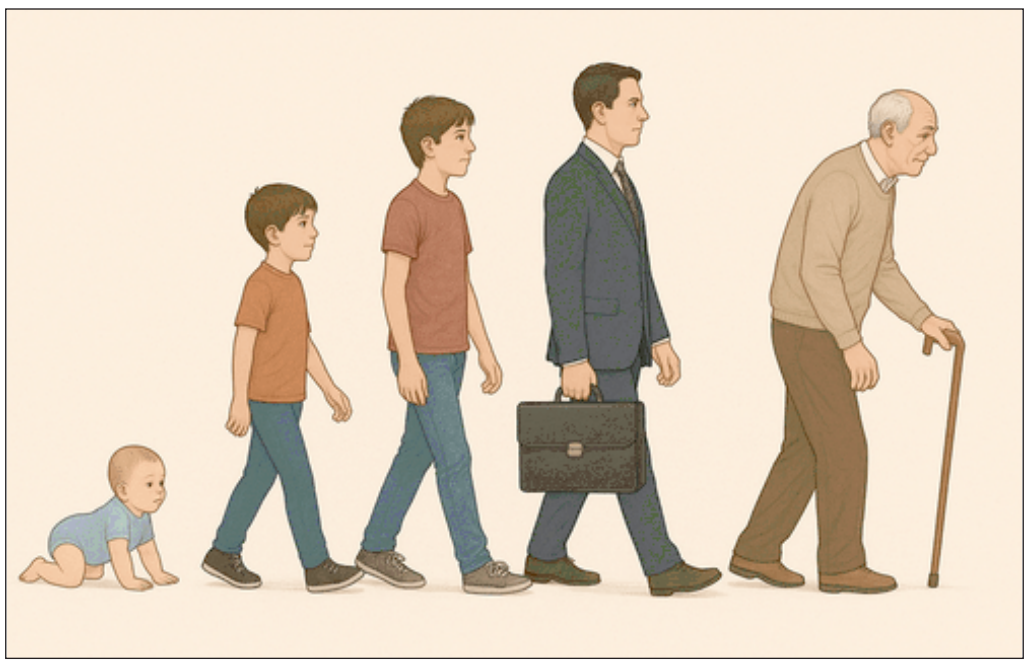

ऑस्टियोपोरोसिस और फ्रैक्चर का जोखिम बढ़ जाता है।

कैल्शियम इस प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

कैल्शियम की कमी से:

1. हड्डियाँ कमज़ोर और भंगुर हो जाती हैं

2. मांसपेशियों की कार्यक्षमता प्रभावित होती है

3. तंत्रिका तंत्र के संकेतों में बाधा आ सकती है

कैल्शियम का सर्वोत्तम अवशोषण विटामिन D की उपस्थिति में होता है। दूध, दही, पनीर, हरी पत्तेदार सब्जियाँ, तिल, बादाम और फोर्टिफ़ाइड खाद्य पदार्थ इसके अच्छे स्रोत हैं।

3. विटामिन B12: मस्तिष्क और रक्त स्वास्थ्य का रक्षक विटामिन B12 शरीर के कई महत्वपूर्ण कार्यों में आवश्यक है, जैसेः

1. लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण

2. डीएनए संश्लेषण

3. तंत्रिका तंत्र का संरक्षण

स्मरण शक्ति और संज्ञानात्मक क्षमता

उम्र बढ़ने के साथ पेट में अम्ल (Stomach Acid) का स्राव कम हो जाता है, जिससे B12 का अवशोषण घटता है। इसके परिणामस्वरूप एनीमिया, थकान, स्मृति-दोष और मानसिक क्षीणता हो सकती है।

नवीन शोध यह संकेत देते हैं कि पर्याप्त विटामिन B12 स्तर बनाए रखने से मस्तिष्क की कार्यक्षमता बेहतर बनी रहती है और उम्र - संबंधी मानसिक गिरावट की गति धीमी हो सकती है।

मछली, दूध, दही, अंडे, फोर्टिफ़ाइड अनाज और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सकीय सलाह से अनुपूरक उपयोगी होते हैं।

चलना क्यों आज भी उतना ही आवश्यक है नियमित शारीरिक गतिविधि, विशेषकर चलना और हल्के शक्ति-वर्धक व्यायाम, संतुलित आहार के प्रभाव को कई गुना बढ़ा देते हैं। येः

1. मांसपेशियों में प्रोटीन संश्लेषण को सक्रिय करते हैं

2. संतुलन और समन्वय में सुधार लाते हैं

3. हृदय और फेफड़ों को स्वस्थ रखते हैं

4. मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं

चलना पोषण का विकल्प नहीं है, बल्कि उसका पूरक है — दोनों मिलकर जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करते हैं।

नवीन वैज्ञानिक निष्कर्ष

1. हालिया क्लिनिकल अध्ययनों से पता चला है कि प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन B12 का संयुक्त और दीर्घकालिक सेवन वृद्धावस्था में शारीरिक क्षमता और जैव-रासायनिक संकेतकों में सुधार करता है।

2. विटामिन B12 पर हो रहे आधुनिक शोध इसके और गहरे संबंधों को उजागर कर रहे हैं, विशेषकर संज्ञानात्मक स्वास्थ्य और मानसिक स्थिरता के संदर्भ में।

3. विश्व-स्तरीय पोषण अध्ययनों में वृद्ध जनसंख्या में सूक्ष्म पोषक तत्वों की व्यापक कमी सामने आई है, जो सुनियोजित आहार की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए व्यावहारिक सुझाव

1. केवल कैलोरी घटाने के बजाय पोषक-घनत्व वाले भोजन को चुनें।

2. प्रत्येक भोजन में किसी न किसी रूप में प्रोटीन अवश्य शामिल करें।

3. कैल्शियम और विटामिन D का संतुलित सेवन करें।

4. विटामिन B12 स्तर की समय-समय पर जाँच कराएँ, विशेषकर यदि पाचन संबंधी समस्या हो या शाकाहारी आहार लेते हों।

5. सक्रिय रहें — रोज़ाना हल्की-फुल्की पैदल चाल भी दीर्घकालीन लाभ देती है।

निष्कर्षतः, वृद्धावस्था में मात्रा से अधिक गुणवत्ता का महत्व होता है। पर्याप्त प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन B12 से भरपूर संतुलित आहार तथा नियमित शारीरिक गतिविधि न केवल आयु को बढ़ाती है, बल्कि स्वस्थ जीवन-काल (Healthspan) को भी समृद्ध करती है — ऐसा जीवन जो ऊर्जा, आत्मनिर्भरता और मानसिक स्पष्टता से परिपूर्ण हो।

"बाकुची, बावची या बकुची"

पिंकी कुंडू

आयुर्वेद की दुनिया में कई ऐसी जड़ी-बूटियां हैं, जिनका उपयोग प्राचीन समय से रोगों के इलाज में किया जा रहा है। ऐसी ही एक प्रभावशाली औषधि है "बाकुची", जिसे बावची या बकुची के नाम से भी जाना जाता है।

इसकी खास बात यह है कि इसे सिर्फ आयुर्वेद में ही नहीं, बल्कि यूनानी चिकित्सा पद्धति में भी खूब प्रयोग किया जाता है। इसे कफ और वात दोष को शांत करने वाली औषधि माना जाता है। इसके सेवन से पाचन तंत्र मजबूत होता है और पेट में कीड़े, बवासीर, लीवर तथा मूत्र संबंधी समस्याओं में भी राहत मिलती है। बाकुची के बीजों और तेल में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट और सूजन कम करने वाले गुण गठिया और जोड़ों की सूजन जैसी समस्याओं में सहायक होते हैं। साथ ही इसका उपयोग सफेद दाग, सोरायसिस, खुजली, डैंड्रफ और अन्य त्वचा रोगों के उपचार में भी किया जाता है।

बाकुची (बावची) क्या है? बाकुची एक औषधीय पौधा है, जो एक साल तक जिंदा रहता है। सही देखभाल करने पर यह पौधा 4-5 वर्ष तक जीवित रह सकता है। बाकुची के बीजों से तेल बनाया जाता है। इसके पौधे और तेल दोनों का उपयोग चिकित्सा में किया जाता है। ठंड के मौसम में बाकुची के पौधों में फूल आते हैं और गर्मी में ये फल में बदल जाते हैं।

बाकुची (बावची) कहां पाया या उगाया जाता है? बाकुची के छोटे-छोटे पौधे वर्षा-ऋतु में अपने आप उगते हैं। इसकी खेती कई स्थानों पर की जाती है। भारत में बाकुची मुख्यतः राजस्थान, कर्नाटक और पंजाब में कंकरीली भूमि और जंगली झाड़ियों में पाया जाता है।

बाकुची (बावची) के फायदे और उपयोग—

1. पेट में कीड़े होने पर : पेट के रोग में बाकुची खाने से फायदा होता है। पेट में कीड़े होने पर बावची चूर्ण का सेवन करें। इसमें एन्टीवर्म गुण होता है, जिससे कीड़े मर जाते हैं।

2. दस्त में लाभ : दस्त को रोकने के लिए बाकुची के पत्ते का साग सुबह-शाम नियमित रूप से खाएं। कुछ हफ्ते खाने से दस्त की समस्या में लाभ होता है।

3. बवासीर का इलाज : बवासीर में भी बावची के औषधीय गुण से फायदा होता है। 2 ग्राम हरड़, 2 ग्राम सोंठ और 1 ग्राम बाकुची के बीज लेकर पीस लें। इसे आधी चम्मच की मात्रा में गुड़ के साथ सुबह-शाम सेवन करें, इससे बवासीर में लाभ मिलता है।

4. फाइलेरिया का इलाज : फाइलेरिया रोग में बावची के इस्तेमाल से फायदा होता है। बाकुची के रस और पेस्ट को फाइलेरिया (हाथी पांव) वाले अंग पर लगाएं। इससे फाइलेरिया में लाभ होता है।

5. पीलिया में लाभ : पीलिया में भी बावची के फायदे ले सकते हैं। 10 मिली० पुनर्नवा के रस में आधा ग्राम पिसी हुई बावची के बीज का चूर्ण मिला लें। सुबह-शाम रोजाना सेवन करने से पीलिया में लाभ होता है।

6. त्वचा रोग में : बावची के औषधीय गुण से त्वचा रोग का इलाज किया जा सकता है। इसके लिए दो भाग बाकुची तेल, दो भाग तुवरक तेल और एक भाग चंदन तेल मिलाएं। इस तेल को लगाने से त्वचा की साधारण बीमारी तो ठीक होती ही है, साथ ही सफेद कुष्ठ रोग में भी फायदा होता है।

7. कफ वाली खांसी का इलाज : आधा ग्राम बाकुची के बीज के चूर्ण को अदरक के रस के साथ दिन में 2-3 बार सेवन करें। इससे कफ ढीला होकर निकल जाता है।

8. ब्लड शुगर नियंत्रण : बाकुची का उपयोग ब्लड शुगर को नियंत्रित करने के लिए भी किया जा रहा है, जिससे यह मधुमेह के मरीजों के लिए भी उपयोगी बनती जा रही है।

9. प्रजनन और हॉर्मोनल संतुलन : यह औषधि प्रजनन क्षमता बढ़ाने में और महिलाओं के हॉर्मोन संतुलन में भी सहायक मानी जाती है।

10. सांसों से जुड़ी बीमारियों में : आधा ग्राम बाकुची बीज चूर्ण को अदरक के रस के साथ दिन में 2-3 बार सेवन करें। इससे सांसों से जुड़ी बीमारियों में लाभ होता है।

बाकुची के उपयोग —

1. बीज और तेल – त्वचा रोग, बालों की देखभाल, जोड़ों और हड्डियों की समस्याओं में उपयोगी।

2. चूर्ण या पत्ते – पेट, दस्त, बवासीर, फाइलेरिया और पीलिया में लाभकारी।

3. तेल का मिश्रण – त्वचा और सफेद दाग के लिए सीधे लगाने में उपयोगी।

किसी बीमारी में उपयोग करने से पहले योग्य आयुर्वेदिक वैद्य से सलाह अवश्य लें।

प्रभावी जड़ी-बूटी गोखरू

पिंकी कुंडू

आयुर्वेद में कई जड़ी-बूटियां ऐसी हैं, जिनका सदियों से इस्तेमाल कई गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता रहा है। ऐसी ही एक प्रभावी जड़ी-बूटी है गोखरू। इसे गोक्षुरा के नाम से भी जाना जाता है।

आयुर्वेद में गोखरू का फल, पत्ता और तना औषधि के रूप में प्रयोग किये जाता है। यह वात, पित्त और कफ दोष को संतुलित करने में मदद करती है और शरीर की कई समस्याओं को दूर करने में असरदार मानी जाती है।

गोखरू के प्रमुख स्वास्थ्य लाभ —

1. किडनी स्टोन से राहत :- गोखरू में मूत्रवर्धक गुण पाए जाते हैं। यह पेशाब बढ़ाने में मदद करता है और नियमित सेवन से किडनी की पथरी को बाहर निकालने में सहायक हो सकता है। आयुर्वेद में सदियों से इसे किडनी स्टोन के इलाज में प्रयोग किया जाता रहा है। 5 ग्राम गोखरू चूर्ण को 1 चम्मच शहद के साथ दिन में तीन बार दूध या गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पथरी टूटकर बाहर निकल जाती है।

2. सिरदर्द में राहत :- कुछ लोगों में पित्त की अधिकता के कारण बार-बार सिरदर्द की समस्या होती है। गोखरू का सेवन पित्त को संतुलित करने में मदद करता है और इससे लगातार होने वाले सिरदर्द में राहत मिल सकती है।

3. डायबिटीज में फायदेमंद :- डायबिटीज के मरीजों के लिए गोखरू का सेवन लाभकारी हो सकता है। इसमें मौजूद सैपोनिन ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करने में मदद करता है और शुगर को संतुलित रखने में सहायक माना जाता है।

4. स्पर्म काउंट बढ़ाए :- आजकल खराब खानपान और जीवनशैली की वजह से पुरुषों में लो स्पर्म काउंट और फर्टिलिटी की समस्या आम हो गई है। गोखरू का नियमित सेवन स्पर्म उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ उसकी गुणवत्ता और गतिशीलता सुधारने में भी मदद करता है। गोखरू के 20 ग्राम फलों को 250 ml दूध में उबालकर सुबह-शाम पिलाने से स्पर्म संबंधी समस्याओं में फायदा मिलता है।

5. यूरिन इन्फेक्शन से राहत :- गोखरू में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-माइक्रोबियल गुण पाए जाते हैं। ये गुण यूरिन इन्फेक्शन को दूर करने में मदद करते हैं। साथ ही इसमें मूत्रवर्धक गुण होने के कारण बैक्टीरिया पेशाब के जरिए बाहर निकल जाते हैं, जिससे संक्रमण कम होता है। 20-30 ml गोखरू काढ़े में एक चम्मच शहद डालकर दिन में दो बार पिलाने से यूरिन इन्फेक्शन से राहत मिलती है।

उपयोग करने का तरीका —

1. चूर्ण के रूप में:- रोजाना 3–6 ग्राम गोखरू चूर्ण को दूध या गुनगुने पानी के साथ ले सकते है।

2. काढ़ा के रूप में:- गोखरू को काढ़े के रूप में 20–40 ml सेवन कर सकते हैं।

सावधानियां — अगर आप गर्भवती हैं या किसी बीमारी की दवा ले रहे हैं तो आयुर्वेदिक वैद्य की सलाह अवश्य लें।

गोखरू आयुर्वेद की एक ऐसी जड़ी-बूटी है, जो किडनी, यूरिन, ब्लड शुगर और पुरुष प्रजनन स्वास्थ्य में असरदार मानी जाती है। इसे सही मात्रा और नियमितता से लेने पर शरीर के कई महत्वपूर्ण दोष संतुलित रहते हैं और सेहत बेहतर होती है।

काला आलू

पिंकी कुंडू

काले आलू में कई औषधीय गुण होते हैं और यह कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता हैं। काला आलू, आम आलू की तुलना में अधिक एंटीऑक्सीडेंट और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होता हैं और इसमें कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता हैं। जो शरीर को कई बीमारियों से बचाने में मदद करता हैं।

काले आलू की क्या हैं खासियत :--

1. शुगर को नियंत्रित करता हैं : काले आलू में शर्करा की मात्रा बहुत कम होती हैं, जिससे यह डायबिटीज के मरीजों के लिए सुरक्षित होता हैं।

2. एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर : काले आलू में सामान्य आलू की तुलना में तीन गुना अधिक एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं, जो शरीर को रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करता हैं।

3. आयरन का अच्छा स्रोत : काले आलू में आयरन की मात्रा अधिक होती हैं, जो खून की कमी (एनीमिया) को दूर करने में मदद करता हैं।

4. दिल के लिए फायदेमंद : काले आलू में फ्लोरिक एसिड और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो हृदय रोग के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं।

5. अन्य स्वास्थ्य लाभ : काले आलू में कॉपर, मैंगनीज और फाइबर जैसे तत्व होते हैं, जो लिवर, फेफड़ों और समग्र स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं।

काले आलू का उपयोग :--

1. इससे सब्जी, चिप्स, पापड़ और अन्य खाद्य उत्पाद बनाए जाते हैं, जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्यवर्धक भी होते हैं।

2. काले आलू में एंथोसायनिन नामक तत्व होता हैं, जो इसे गहरा बैंगनी रंग देता हैं और खाद्य रंग के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता हैं।

भारत में काले आलू की खेती कहाँ होती हैं :-- काला आलू मुख्य रूप से अमेरिका के एंडीस पर्वत क्षेत्र में पाया जाता हैं, लेकिन अब भारत के कुछ राज्यों में भी इसकी खेती की जा रही हैं। काले आलू की खेती मुख्यतः उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र के कुछ किसान कर रहे हैं और इससे अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं।

प्रभु कि लीला... हरि अनंत हरि कथा अनंता..!

पिंकी कुंडू

यह कहानी बद्रीनाथ धाम की उत्पत्ति से जुड़ी एक बहुत ही प्रसिद्ध और रोचक पौराणिक कथा है। यह कथा मुख्य रूप से यह दर्शाती है कि कैसे भगवान विष्णु ने अपनी चतुराई और भगवान शिव ने अपनी उदारता के कारण इस पवित्र स्थान का आदान-प्रदान किया।

यहाँ इस कहानी का मूल संदर्भ और सार दिया गया है:

कथा का मूल भाव: 'लीला' और 'त्याग'

इस कहानी को श्बद्रीनाथ का छलश् या श्विष्णु की बाल लीलाश् के नाम से भी जाना जाता है।

एक दिन नारायण यानी विष्णु के पास नारद गए और बोले, 'आप मानवता के लिए एक खराब मिसाल हैं। आप हर समय शेषनाग के ऊपर लेटे रहते हैं। आपकी पत्नी लक्ष्मी हमेशा आपकी सेवा में लगी रहती हैं, और आपको लाड़ करती रहती हैं। इस ग्रह के अन्य प्राणियों के लिए आप अच्छी मिसाल नहीं बन पा रहे हैं। आपको सृष्टि के सभी जीवों के लिए कुछ अर्थपूर्ण कार्य करना चाहिए।'

इस आलोचना से बचने और साथ ही अपने उत्थान के लिए (भगवान को भी ऐसा करना पड़ता है) विष्णु तप और साधना करने के लिए सही स्थान की तलाश में नीचे हिमालय तक आए। वहां उन्हें मिला बद्रीनाथ, एक अच्छा-सा, छोटा-सा घर, जहां सब कुछ वैसा ही था जैसा उन्होंने सोचा था। साधना के लिए सबसे आदर्श जगह लगी उन्हें यह। वह उस घर के अंदर गए। घुसते ही उन्हें पता चल गया कि यह तो शिव का निवास है और वह तो बड़े खतरनाक व्यक्ति हैं। अगर उन्हें गुस्सा आ गया तो वह आपका ही नहीं, खुद का भी गला काट सकते हैं। ऐसे में नारायण ने खुद को एक छोटे-से बच्चे के रूप में बदल लिया और घर के सामने बैठ गए। उस वक्त शिव और पार्वती बाहर कहीं टहलने गए थे। जब वे घर वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि एक छोटा सा बच्चा जोर-जोर से रो रहा है।

पार्वती को दया आ गई। उन्होंने बच्चे को उठाने की कोशिश की। शिव ने पार्वती को रोकते हुए कहा, 'इस बच्चे को मत छूना।' पार्वती ने कहा, 'कितने क्रूर हैं आप ! कैसी नासमझी की बात कर रहे हैं? मैं तो इस बच्चे को उठाने जा रही हूं। देखिए तो कैसे रो रहा है।' शिव बोले, 'जो तुम देख रही हो, उस पर भरोसा मत करो। मैं कह रहा हूं न, इस बच्चे को मत उठाओ।'

अगर आपको कथा संग्रह की पोस्ट पसंद आती है तो आज ही सब्सक्राइब करें कथा संग्रह

बच्चे के लिए पार्वती की स्त्रीसुलभ मनोभावना ने उन्हें शिव की बातों को नहीं मानने दिया। उन्होंने कहा, 'आप कुछ भी कहें, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे अंदर की मां बच्चे को इस तरह रोते नहीं देख सकती। मैं तो इस बच्चे को जरूर उठाऊंगी।' और यह कहकर उन्होंने बच्चे को उठाकर अपनी गोद में ले लिया। बच्चा पार्वती की गोद में आराम से था और शिव की तरफ बहुत ही खुश होकर देख रहा था। शिव इसका नतीजा जानते थे, लेकिन करें तो क्या करें? इसलिए उन्होंने कहा, 'ठीक है, चलो देखते हैं क्या होता है।' पार्वती ने बच्चे को खिला-पिला कर चुप किया और वहीं घर पर छोड़कर खुद शिव के साथ गर्म पानी से स्नान के लिए बाहर चली गईं।

वहां पर गर्म पानी के कुंड हैं, उसी कुंड पर स्नान के लिए शिव-पार्वती चले गए। लौटकर आए तो देखा कि घर अंदर से बंद था। शिव तो जानते ही थे कि अब खेल शुरू हो गया है। पार्वती हैरान थीं कि आखिर दरवाजा किसने बंद किया? शिव बोले, 'मैंने कहा था न, इस बच्चे को मत उठाना। तुम बच्चे को घर के अंदर लाईं और अब उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया है।' पार्वती ने कहा, 'अब हम क्या करें?'

शिव के पास दो विकल्प थे। एक, जो भी उनके सामने है, उसे जलाकर भस्म कर दें और दूसरा, वे वहां से चले जाएं और कोई और रास्ता ढूंढ लें। उन्होंने कहा, 'चलो, कहीं और चलते हैं क्योंकि यह तो तुम्हारा प्यारा बच्चा है इसलिए मैं इसे छू भी नहीं सकता। मैं अब कुछ नहीं कर सकता। चलो, कहीं और चलते हैं।'

इस घटना के बाद, जब शिव और पार्वती को अपना घर छोड़ना पड़ा, तो वे केदारखंड (केदारनाथ) की ओर चले गए।

यही कारण है कि:

* बद्रीनाथ को 'विष्णु धाम' माना जाता है।

* केदारनाथ को 'शिव धाम' माना जाता है।

* माना जाता है कि बद्रीनाथ की यात्रा तब तक अधूरी है जब तक श्रद्धालु केदारनाथ के दर्शन न कर ले, क्योंकि शिव ने विष्णु के लिए उस स्थान का त्याग किया था।

आध्यात्मिक संदेश: -

यह कहानी हमें सिखाती है कि संसार में सब कुछ परिवर्तनशील है। यहाँ तक कि देवताओं को भी अपनी प्रिय वस्तुओं का त्याग करना पड़ता है। शिव का वहां से चले जाना उनकी कमजोरी नहीं, बल्कि उनकी अनासक्ति और प्रेम को दर्शाता है।

-: मूर्तिपूजा :-

केके छाबड़ा

कोई भी आस्तिक भक्त मूर्ति की पूजा नहीं करता, वह तो मूर्ति में अपने इष्टदेव की पूजा करता है, इसलिये जब तक अपना भास रहे, तब तक अपने इष्टदेव की पूजा करते रहना चाहिये।

जब मनुष्य किसी पुस्तक या चिट्ठी को पढ़ता है, तब कागज या स्याही को नहीं पढ़ता; किंतु उसमें लिखे हुए संकेत के द्वारा उसके अर्थ को पढ़ता है । कागज, स्याही और अक्षर तो उस अर्थ को समझने के लिये चिह्न मात्र हैं । अर्थ तो पढ़ने वाले को बुद्धि में परम्परा से विद्यमान है । इसी प्रकार भक्त मूर्ति को संकेत बनाकर अपने इष्ट की पूजा करता है, मूर्ति की पूजा नहीं करता ।

इसी तरह गीता आदि में समझ लेना चाहिये । पढ़ने वाला उसे भगवान्‌की वाणी समझ कर पढ़ता है और उसी भाव से उसका आदर करता है ।

श्री तुलसीदास जी राम-नाम का जप करते थे तो उनके भाव में परमेश्वर और उनके पूर्ण ऐश्वर्य, माधुर्य आदि समस्त गुण नाम में भरे हुए थे, वे राम और ब्रह्म दोनों से नाम को बढ़कर मानते थे । उनके विषय में कोई भी यह नहीं कह सकता कि वे परमेश्वर का स्मरण नहीं कर रहे थे, शब्द मात्र का जप कर रहे थे । इससे साधक को यह समझ लेना चाहिये कि कोई भी साधन नीचे दर्जे का नहीं है ।

जिस साधक को जो साधन प्रिय हो, अपनी योग्यता के अनुसार जिस साधन को वह सुगमता से कर सके, जिसमें उसका पूर्ण विश्वास हो, किसी प्रकार का भी सन्देह न रहे, वही साधन उसके लिये सर्वश्रेष्ठ है । किसी प्रकार का सन्देह न रहने से साधक की बुद्धि साधन में लग जाती है । प्रेम होने से हृदय द्रवित हो जाता है । विश्वास होने के कारण मन में किसी प्रकार का विकल्प नहीं उठता । उसमें मन लग जाता है । अतः साधन में कोई छोटा-बड़ा नहीं है ।

किसी भी साधक को यह नहीं समझना चाहिये कि 'मुझे अमुक प्रकार की योग्यता प्राप्त नहीं है, इसलिये मुझे भगवान्‌नहीं मिल सकते ।' यह मानना भगवान्‌की माहिमा को न जानकर उनकी कृपा का अनादर करना है । क्योंकि भगवान् अपनी कृपा से प्रेरित होकर ही साधक को मिलते हैं । उनकी कृपा प्राप्त करने का एकमात्र उपाय उनसे मिलने की उत्कण्ठा, उनके प्रेम की अतिशय लालसा ही है । धन, बल, सुन्दरता या किसी प्रकार के साधन के बल से भगवान् नहीं मिल सकते । साधन उनका या उनके प्रेम का मूल्य नहीं है । साधन तो अपने बनाये हुए दोषों को मिटाने के लिये हैं, जो भगवान्‌द्वारा दी हुई योग्यता का सदुपयोग करने मात्र से होता है ।

मनुष्य चाहे कैसा ही दीन-हीन मलिन क्यों न हो, कितना ही बड़ा पातकी क्यों न हो, वह जैसा और जिस परिस्थिति में है, उसी में यदि विश्वास पूर्वक भगवान्‌का हो जाय और उनको पाने के लिये व्याकुल हो उठे, भगवान्‌के वियोग में उसे किसी प्रकार चैन न पड़े, तो भगवान् अवश्य मिल जाते हैं ।

भगवान् उसी पतित को मिलते हैं, जो पतित नहीं रहना चाहता अर्थात्‌पुनः पाप नहीं करना चाहता । ऐसे साधक को भगवान्‌परम पवित्र बनाकर अपना लेते हैं, परंतु जिसको अपने पापों का पश्चात्ताप नहीं है, जो उनको छोड़ना नहीं चाहता, उसे भगवान् नहीं मिलते । वैसे ही जिसको अपने गुणों का अभिमान होता है, उसे भी नहीं मिलते । साथ ही यह बात भी है कि जबतक साधक के मन में किसी दूसरी वस्तु की चाह रहती है, तबतक भगवान्‌नहीं मिलते । किंतु उसकी चाह के अनुरूप वस्तु और परिस्थिति, यदि उसके पतन में हेतु न हो तो प्रदान कर देते हैं ।

भगवान्‌की यह शर्त है कि मुझसे मिलने के बाद अन्य किसी से साधक नहीं मिल सकता, परंतु ऐसा साधक कोई बिरला ही होता है, जो हर समय एक मात्र उन्हीं से मिलने के लिये इच्छुक रहता हो, जिसके समस्त काम पूरे हो चुके हों, जिसके मन में अन्य किसी प्रकार के संयोग की चाह नहीं रही हो ।

स्यमन्तक मणि

पिंकी कुंडू

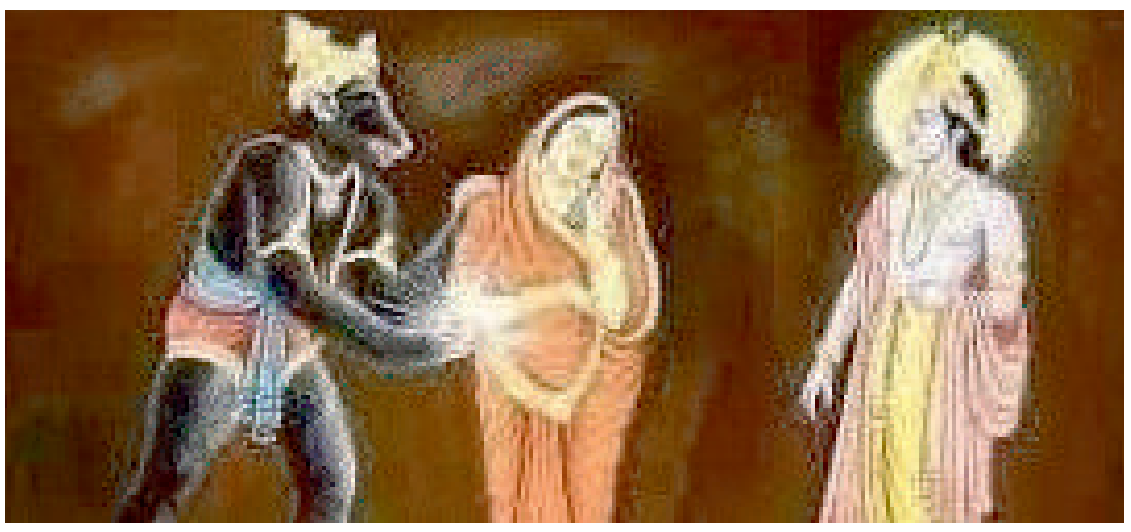

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक बार सत्राजित ने भगवान सूर्य की उपासना की जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने अपनी स्यमन्तक नाम की मणि उसे दे दी।

एक दिन जब कृष्ण साथियों के साथ चौसर खेल रहे थे तो सत्राजित स्यमन्तक मणि मस्तक पर धारण किए उनसे भेंट करने पहुंचे। उस मणि को देखकर कृष्ण ने सत्राजित से कहा की तुम्हारे पास जो यह अलौकिक मणि है, इनका वास्तविक अधिकारी तो राजा होता है। इसलिए तुम इस मणि को हमारे राजा उग्रसेन को दे दो। यह बात सुन सत्राजित बिना कुछ बोले ही वहाँ से उठ कर चले गए। सत्राजित ने स्यमन्तक मणि को अपने घर के मन्दिर में स्थापित कर दिया। वह मणि रोजाना आठ भार सोना देती थी. जिस स्थान में वह मणि होती थी वहाँ के सारे कष्ट स्वयं ही दूर हो जाते थे।

एक दिन सत्राजित का भाई प्रसेनजित उस मणि को पहन कर घोड़े पर सवार हो आखेट के लिये गया। वन में प्रसेनजित पर एक सिंह ने हमला कर दिया जिसमें वह मारा गया। सिंह अपने साथ मणि भी ले कर चला गया। उस सिंह को रीछराज जामवंत ने मारकर वह मणि प्राप्त कर ली और अपनी गुफा में चला गया। जामवंत ने उस मणि को अपने बालक को दे दिया जो उसे खिलौना समझ उससे खेलने लगा।

जब प्रसेनजित लौट कर नहीं आया तो सत्राजित ने समझा कि उसके भाई को कृष्ण ने मारकर मणि छीन ली है।

कृष्ण जी पर चोरी के सन्देह की बात पूरे द्वारिकापुरी में फैल गई। अपने उपर लगे कलंक को धोने के लिए वे नगर के प्रमुख यादवों को साथ ले कर रथ पर सवार हो स्यमन्तक मणि की खोज में निकले। वन में उन्होंने घोड़ा सहित प्रसेनजित को मरा हुआ देखा पर मणि का कहीं पता नहीं चला। वहाँ निकट ही सिंह के पंजों के चिन्ह थे। सिंह के पदचिन्हों के सहारे आगे बढ़ने पर उन्हें मरे हुए सिंह का शरीर मिला।

वहाँ पर रीछ के पैरों के पद-चिन्ह भी मिले जो कि एक गुफा तक गये थे। जब वे उस भयंकर गुफा के निकट पहुँचे तब श्री कृष्ण ने यादवों से कहा कि तुम लोग यहीं रुको। मैं इस गुफा में प्रवेश कर मणि ले जाने वाले का पता लगाता हूँ। इतना कहकर वे सभी यादवों को गुफा के मुख पर छोड़ उस गुफा के भीतर चले गये। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि वह मणि एक रीछ के बालक के पास है जो उसे हाथ में लिए खेल रहा था। श्री कृष्ण ने उस मणि को उठा लिया।

यह देख कर जामवंत अत्यन्त क्रोधित होकर श्री कृष्ण को मारने के लिये झपटा। जामवंत और श्री कृष्ण में भयंकर युद्ध होने लगा। जब कृष्ण गुफा से वापस नहीं लौटे तो सारे यादव उन्हें मरा हुआ समझ कर बारह दिन के उपरांत वहाँ से द्वारिकापुरी वापस आ गये तथा समस्त वृतांत वासुदेव और देवकी से कहा। वासुदेव और देवकी व्याकुल होकर महामाया दुर्गा की उपासना करने लगे। उनकी उपासना से प्रसन्न होकर देवी दुर्गा ने प्रकट होकर उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा पुत्र तुम्हें अवश्य मिलेगा.

श्री कृष्ण और जामवंत दोनों ही पराक्रमी थे। युद्ध करते हुये गुफा में अट्ठाईस दिन बीत गए। कृष्ण की मार से महाबली जामवंत की नस टूट गई।

वह अति व्याकुल हो उठा और अपने स्वामी श्री रामचन्द्र जी का स्मरण करने लगा। जामवंत के द्वारा श्री राम के स्मरण करते ही भगवान श्री कृष्ण ने श्री रामचन्द्र के रूप में उसे दर्शन दिये। जामवंत उनके चरणों में गिर गया और बोला, "हे भगवान ! अब मैंने जाना कि आपने यदुवंश में अवतार लिया है."

श्री कृष्ण ने कहा, "हे जामवंत ! तुमने मेरे राम अवतार के समय रावण के वध हो जाने के पश्चात मुझसे युद्ध करने की इच्छा व्यक्त की थी और मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुम्हारी इच्छा अपने अगले अवतार में अवश्य पूरी करूँगा. अपना वचन सत्य सिद्ध करने के लिये ही मैंने तुमसे यह युद्ध किया है."

जामवंत ने भगवान श्री कृष्ण की अनेक प्रकार से स्तुति की और अपनी कन्या जामवंती का विवाह उनसे कर दिया।

कृष्ण जामवंती को साथ लेकर द्वारिका पुरी पहुँचे। उनके वापस आने से द्वारिका पुरी में चहुँ ओर प्रसन्नता व्याप्त हो गई। श्री कृष्ण ने सत्राजित को बुलवाकर उसकी मणि उसे वापस कर दी।

सत्राजित अपने द्वारा श्री कृष्ण पर लगाये गये झूठे कलंक के कारण अति लज्जित हुआ और पश्चाताप करने लगा। प्रायश्चित के रूप में उसने अपनी कन्या सत्यभामा का विवाह श्री कृष्ण के साथ कर दिया और वह मणि भी उन्हें दहेज में दे दी। किन्तु शरणागत वत्सल श्री कृष्ण ने उस मणि को स्वीकार न करके पुनः सत्राजित को वापस कर दिया।

कड़े में कड़ा हनुमान बाबा मेरे धौरे खड़ा (स्वयं-सिद्ध शाबर मंत्र। नाथ परंपरा का शक्तिशाली सुरक्षा कवच)

पिंकी कुंडू

"कड़े में कड़ा हनुमान बाबा मेरे धौरे खड़ा" — यह एक पंक्ति साधारण शब्द नहीं, बल्कि नाथ परंपरा का आज़माया हुआ शाबर सुरक्षा सूत्र है।

शाबर मंत्रों की ताक़त यही होती है कि ये सीधे ऊर्जा पर काम करते हैं, ज़्यादा कल्पना या कठिन नियम नहीं मांगते।

जब जीवन में डर, अचानक संकट, नज़र-बाधा, घर का कलेश या अनजानी बेचैनी बढ़ने लगे, तब यह मंत्र हनुमान तत्व को तुरंत सक्रिय कर देता है और साधक के चारों ओर एक मज़बूत सुरक्षा घेरा खड़ा करता है।

साधना विधि (सीधी और असरदार)

* 5 माला जप करना होता है।

* यह साधना लगातार 11 दिनों की है।

* समयः सुबह स्नान के बाद या रात को सोने से पहले

* आसनः साधारण आसन, ज़मीन पर बैठना बेहतर

* जपः रोज़ 5 माला

* भावः जप करते समय बस इतना भाव रखें कि हनुमान बाबा मेरे आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ खड़े हैं

बहुत से लोगों ने अनुभव किया है कि 3–4 दिन में ही डर, घबराहट, भारीपन और नकारात्मक घटनाओं की आवृत्ति कम होने लगती है। यह इसलिए होता है क्योंकि शाबर मंत्र मन नहीं, प्राण और नाभि क्षेत्र पर काम करता है।

11 दिन बाद शाबर हवन 11 दिन की साधना पूरी होने के बाद इस मंत्र का शाबर विधि से हवन किया जाता है।

हवन सामग्रीः गुग्गुल, कपूर, लौंग, थोड़ा सा देसी घी।

हवन का उद्देश्य दिखावा नहीं, बल्कि यह है कि जो मंत्र-ऊर्जा बनी है, वह घर और साधक के चारों ओर स्थायी रूप से बैठ जाए।

इसके बाद एक स्थिति आती है जहाँ बिना जप किए भी अंदर से सुरक्षा का भाव बना रहता है — यही शाबर साधना की असली पहचान है।

एक बहुत ज़रूरी बात यह कोई खेल या प्रयोग की चीज़ नहीं है। शाबर मंत्र भाव और मर्यादा से चलते हैं। डराने, दिखाने या दूसरों को नीचा करने की भावना से किए गए प्रयोग उल्टा असर भी कर सकते हैं।

---- कूर्म पुराण ----

पिंकी कुंडू

इन 8 की ओर नहीं करने चाहिए पैर हिंदू धर्म में बच्चों को शुरू से ही शिष्टाचार संबंधी बातें बताई जाती हैं। इसमें ये भी बताया जाता है कि देवता, गुरु, अग्नि आदी की ओर पैर करके नहीं बैठना चाहिए। इसी से संबंधित बातें कूर्म पुराण में भी बताई गई है। कूर्म पुराण में बताया गया है कि किन 8 की ओर पैर नहीं करने चाहिए।

श्लोक

नाभिप्रसारयेद् देवं ब्राह्मणान्गामथापि वा।
वाय्वग्निगुरुविप्रान् वा सूर्यं वा शशिनं प्रति।।

अर्थ - देवता, ब्राह्मण, गाय, अग्नि, गुरु, विप्र, सूर्य व चंद्रमा की ओर पैर नहीं फैलाना चाहिए।

देवता – देवता सदैव पूजनीय हैं, जान-बूझकर इनके मंदिर की दिशा की ओर पैर नहीं करना चाहिए, इससे इनका अपमान होता है।

ब्राह्मण – ऋग्वेद के अनुसार ब्राह्मणों की उत्पत्ति भगवान विष्णु के मुख से हुई है। इसलिए इनकी ओर भी पैर नहीं करना चाहिए।

गाय – ग्रंथों के अनुसार, गाय में सभी देवताओं का वास माना गया है। इसलिए गाय की ओर भी पैर नहीं करना चाहिए।

अग्नि – अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है, इसलिए जिस स्थान पर अग्नि जल रही हो, उस ओर पैर नहीं फैलाना चाहिए।

गुरु – गुरु ही समाज को सही दिशा दिखाता है। इसलिए जहां गुरु बैठे हों, उस दिशा में पैर फैलाकर नहीं बैठना चाहिए।

विप्र – ग्रंथों के अनुसार, वेदों की पढ़ाई करने वाले ब्राह्मण बालक को विप्र कहते हैं। इनकी ओर भी पैर नहीं करने चाहिए।

सूर्य – सूर्य पंचदेवताओं में से एक है। पूजा-पाठ आदि में सूर्य की पूजा भी की जाती है, इसलिए सूर्य की ओर पैर नहीं करना चाहिए।

चंद्रमा – चंद्रमा वनस्पतियों के स्वामी हैं। इन्हें प्रत्यक्ष देवता भी कहा जाता है। इसलिए चंद्रमा की ओर भी पैर करना चाहिए।

मातृशक्ति उद्यमिता योजना से महिलाएं बन रहीं आत्मनिर्भर : डीसी

सरकार द्वारा 5 लाख रुपए तक का ऋण उपलब्ध, स्वरोजगार को मिल रहा बढ़ावा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 7 फरवरी। हरियाणा सरकार द्वारा महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बनाकर आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से मातृशक्ति उद्यमिता योजना प्रभावी रूप से संचालित की जा रही है। योजना के तहत पात्र महिलाओं को बैंकों के माध्यम से 5 लाख रुपए तक का ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है, जिससे वे अपना स्वयं का रोजगार स्थापित कर सकें।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से इस योजना को लागू किया गया है। इसके अंतर्गत डेयरी सहित उद्योग विभाग की नकारात्मक सूची तथा केवीआईबी से संबंधित गतिविधियों को छोड़कर अन्य विभिन्न स्वरोजगार गतिविधियों को शामिल किया गया है।

उन्होंने बताया कि महिलाएं योजना के तहत यातायात सेवाओं में ऑटो रिक्शा, ई-रिक्शा, थ्री-व्हीलर, छोटे मालवाहक वाहन व टैक्सी संचालन जैसे कार्य शुरू कर सकती हैं। इसके अलावा सामाजिक व व्यक्तिगत सेवा क्षेत्रों में सैलून, ब्यूटी पार्लर, टेलरिंग, बुटीक, फोटोस्टेट दुकान, पापड़ व अचार निर्माण, फूड स्टॉल, टिफिन सर्विस, आइसक्रीम व बिस्कुट यूनिट तथा मिट्टी के बर्तन बनाने जैसे व्यवसाय भी स्थापित किए जा सकते हैं।

उपायुक्त ने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए महिला का हरियाणा का स्थायी निवासी होना तथा वार्षिक पारिवारिक आय 5 लाख रुपए से कम होना आवश्यक है। आवेदिका की आयु 18 से 60 वर्ष के बीच होनी

चाहिए और वह किसी भी वित्तीय संस्थान की डिफाल्टर नहीं होनी चाहिए। योजना के तहत समय पर ऋण की किस्तें चुकाने पर तीन वर्षों तक सात प्रतिशत ब्याज अनुदान हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से प्रदान किया जाएगा।

आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज

उन्होंने बताया कि आवेदन पत्र के साथ परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, प्रशिक्षण या अनुभव प्रमाण पत्र सहित सभी दस्तावेजों की दो-दो प्रतियां संलग्न करना अनिवार्य है। योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए इच्छुक महिलाएं हरियाणा महिला विकास निगम के नजदीकी कार्यालय से संपर्क कर सकती हैं।

धूमधाम से सम्पन्न हुआ सन्त अवध दास महाराज का तिरोभाव महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। लक्ष्मण शहीद स्मारक भवन में श्रीमद्भागवत के प्रकाण्ड विद्वान व वैष्णव सन्त अवध दास महाराज का 89वां तिरोभाव महोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ मनाया गया।जिसमें सन्तों व विद्वानों के द्वारा श्रीहरिनाम संकीर्तन के मध्य बाबा महाराज के चित्रपट का पूजन-अर्चन किया गया।साथ ही उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा की।

इस अवसर पर आयोजित वृहद सन्त-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए दंडी स्वामी भक्ति वेदान्त मधुसूदन गोस्वामी महाराज एवं महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद महाराज ने कहा कि बाबा अवध दास महाराज ने जीवन भर भागवतमय जीवन जिया। उन जैसे विरक्त सन्त अब पृथ्वी पर बहुत ही कम देखने को मिलते हैं। सुदामकुटी आश्रम के महंत अमरदास महाराज व आचार्य रामविलास चतुर्वेदी ने कहा कि बाबा अवध दास महाराज श्रीधाम वृन्दावन के प्राचीन स्वरूप के परिचायक थे।यदि उन्हें सन्त शिरोमणि कहा जाय तो कोई

अतिश्योक्ति नही होगी। प्रख्यात साहित्यकार रयूपी रत्नरु डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं भागवत प्रवक्ता आचार्य राम निहोर त्रिपाठी ने कहा कि बाबा अवध दास महाराज ने वृन्दावन स्थित प्रेम गली में भागवत मन्दिर की स्थापना की। साथ ही उसमें श्रीमद्भावत जी को विराजित करके उनकी आजीवन पूजा अर्चना की।

इस अवसर पर परमहितधर्मी डॉ. चन्द्र प्रकाश शर्मा, पंडित सुरेश चन्द्र शास्त्री, श्रीहरि सुरेशाचार्य महाराज, बाबा कर्मयोगी, पण्डित राधाकृष्ण पाठक, करन कृष्ण गोस्वामी, दीपक कृष्ण गोस्वामी, पंडित जुगेंद्र भारद्वाज, पंडित विशन कौशिक, दिग्विजय दीक्षित, डॉ. केशवाचार्य महाराज, पंडित राजेंद्र द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा, महंत रामदास महाराज, महंत गोपीकृष्ण दास महाराज, पंडित गंगाधर पाठक, डॉ. राधाकांत शर्मा, कृष्ण कन्हैया पदरेणु, अपर नगर आयुक्त सीपी पाठक, भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज, उप-सभापति मुकेश सारस्वत, देवेश वशिष्ठ, एडवोकेट सुनील चतुर्वेदी, पंडित उदयन शर्मा, ब्रजेश गिरि, आचार्य ईश्वर चन्द्र रावत, डॉ. जमुना शर्मा, साध्वी राधानन्द महाराज आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। संचालन डॉ. रामसुदर्शन मिश्र ने किया।

महोत्सव में पधारे सभी आगंतुकों का स्वागत-सत्कार बाबा अवध दास महाराज के पंती चेला पंडित बिहारी लाल वशिष्ठ व प्रमुख समाजसेवी श्रीगोपाल वशिष्ठ ने ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके किया।

सायं काल प्रख्यात रासाचार्य स्वामी नृत्यगोपाल शर्मा के निर्देशन में चंद्रसखी लीला का अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया गया।इससे पूर्व आयोजित सरस भजन संध्या में प्रख्यात भजन गायकों द्वारा ठाकुरश्री राधा-कृष्ण की महिमा से ओत-प्रोत भजनों व होली से संबंधित रसियाओं का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।महोत्सव का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय में 'प्राचीन भारतीय परम्पराओं में नैतिकता और मूल्य' विषयक पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

समानता स्वतंत्रता और बंधुत्व आदि लोकतांत्रिक मूल्य पश्चिम से नहीं, बल्कि विशुद्ध भारतीय हैं।

वेद पुराण, उपनिषद्, बौद्ध और जैन मत आदि में इनका सार स्पष्ट रूप से मौजूद – प्रो निरंजन कुमार

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय की मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति द्वारा 'प्राचीन भारतीय परम्पराओं में नैतिकता और मूल्य' विषय पर दो दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला (कैपिसिटी बिल्डिंग वर्कशॉप) का आयोजन किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए आयोजित इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष प्रो. निरंजन कुमार ने प्रश्न उठाया कि आज रोबोटिक्स और एआई के युग में हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति पर बात करने की आवश्यकता क्यों है? उन्होंने कहा जो समाज अपनी संस्कृति से कट जाता है, वह उस वृक्ष के समान है जिसकी कोई जड़ ही नहीं होती है। हमारे देश में साजिशन हमारी संस्कृति को भुलाने का कार्य किया गया है। संस्कृति के खिलाफ कई प्रकार के नैरेटिव इतिहास की पुस्तकों के माध्यम से गढ़े गए। आज इतिहास की पुस्तकों को पुनः लिखे जाने की आवश्यकता है। हमें अपने वेद-उपनिषदों को आज और भी अधिक जानने की आवश्यकता है क्योंकि समाज में यह भ्रम है कि विभिन्न लोकतांत्रिक मूल्य तत्व यूरोप से आए हैं। कहा जाता है कि समानता स्वतंत्रता और बंधुत्व या लोकतंत्र इत्यादि मूल्य पश्चिम से हमारे यहाँ आए। जबकि सत्य तो यह है कि वेद पुराण, उपनिषद्, बौद्ध और जैन मत आदि में इनका सार स्पष्ट रूप से मौजूद है। आगे प्रो. कुमार ने देश के लिए भारत नाम पर जोर देते हुए कहा कि देर से ही सही लेकिन आज पुनः भारत अपनी अस्मिता को प्राप्त कर रहा है। नरेंद्र मोदी की वर्तमान सरकार के समय पहली बार हमने देखा है कि 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' या फिर 'प्राइम मिनिस्टर ऑफ भारत' का प्रयोग हो रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दैनिक जागरण के कार्यकारी संपादक श्री विष्णु त्रिपाठी ने कहा कि नैतिकता और मूल्य भारतीय समाज के डीएनए में रहे हैं। हालाँकि प्रत्येक पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी से अधिक तार्किक होती है, लेकिन यदि उसे सही दृष्टि प्रदान की जाए तो निश्चित रूप से वह उन नैतिक मूल्यों को और आगे लेकर जाएगी। नई पीढ़ी को यह दृष्टि प्रदान करने का कार्य हमारे शिक्षकों का है। उन्होंने कहा कि बहु-अनुशासनिकता हमारी ज्ञान परम्परा में मौजूद रही है. हमारे विद्वान एक साथ संस्कृत, खगोलशास्त्र, ज्योतिष, चिकित्सा में महारत रखते थे. यूरोप के पद्धति से अलग हमारे यहाँ ज्ञान खांचो में नहीं बंटा था। हमें अपनी प्राचीन परम्पराओं को अगली पीढ़ी तक लाना चाहिए। आजादी के बाद वाममार्ग या पश्चिमी प्रभाववश सत्ताधारी वर्ग ने कौटिल्य और पतंजलि जैसे दार्शिनिकों को पाठ्यक्रम में न पढ़ाकर अरस्तू और मार्क्स आदि लगाये गए।

कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र के महासचिव रंजन चौहान जी ने कश्मीर के शारदा पीठ का उदाहरण देते हुए कहा भारतीय संस्कृति में संवाद की प्राचीन परंपरा रही है। आदि शङ्कराचार्य जी का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि कैसे शारदा पीठ में पाँच आचार्यों से उनका प्रश्नोत्तर और शास्त्रार्थ हुआ था। पाँचों आचार्यों ने उनकी श्रेष्ठता स्वीकार की। इस परंपरा की आज बहुत ज़रूरत है।

प्रो हीरामन तिवारी, डॉ. बीरेन्द्र प्रसाद डॉ शोभना सिन्हा आदि ने तकनीकी सत्रों में अपना व्याख्यान दिया। प्रो. प्रभात मित्तल और प्रो. रजनी साहनी, डॉ अनन्या बरुआ आदि की आयोजन में प्रमुख भूमिका रही। यहाँ बता दें दिल्ली विश्वविद्यालय की मूल्य संवर्धन पाठ्क्रम समिति शिक्षकों के लिए इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन लगातार करती रहती है।

कोपल कंपनी द्वारा थाईलैंड में डिस्ट्रीब्यूटर मीटिंग; नए उत्पादों की दी जानकारी

संगरूर,7 फरवरी (जगसीर सिंह)-

कीटनाशक दवाओं के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी 'कोपल' द्वारा बीते दिनों अपने सुपर डिस्ट्रीब्यूटर्स के लिए विदेशी धरती थाईलैंड में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरे के दौरान जहाँ डिस्ट्रीब्यूटर्स ने थाईलैंड के विभिन्न शहरों का आनंद लिया, वहीं कंपनी द्वारा आने वाले समय में लॉन्च किए जाने वाले नए उत्पादों के बारे में विस्तार से जानकारी साझा की गई।

कंपनी के डायरेक्टर (मार्केटिंग) श्री हरजीत सिंह ढिल्लों ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि कंपनी अपने डिस्ट्रीब्यूटर्स को हर साल अलग-अलग विदेशों के दौरे पर लेकर जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य कंपनी और डीलर के आपसी तालमेल को और अधिक मजबूत करना है। कंपनी के एम.डी. श्री संजीव बंसल ने भविष्य में आ रहे नए उत्पादों की जानकारी साझा की और अगले साल किसी अन्य देश में यह मीटिंग करने का वादा किया।

इस पूरे टूर का आयोजन पंजाब के खन्ना से श्री संजू बत्ता की ट्रैवल कंपनी 'बिग डैडी' द्वारा बहुत ही कुशल ढंग से किया गया। इस टूर की खास विशेषता यह रही कि इसे विशेष रूप से 'कोपल' के लिए ही डिजाइन किया गया था, जिसका डिस्ट्रीब्यूटर्स ने भरपूर आनंद लिया और 'बिग डैडी' कंपनी की सराहना की।

अंत में, कंपनी के सीनियर मैनेजर (मार्केटिंग) जनाब मोहम्मद नसीर ने सभी आए हुए डिस्ट्रीब्यूटर्स और 'बिग डैडी' टीम के संजू बत्ता और अरमान आहूजा का धन्यवाद किया।

प्राकृतिक खेती से बढ़ेगी किसानों की आय, रासायनिक-मुक्त कृषि को मिल रहा बढ़ावा : उपायुक्त

- प्राकृतिक खेती योजना के तहत सभी गांवों में चलाया जा रहा विशेष जागरूकता अभियान

- गाय खरीद पर 30 हजार रुपये व ड्रम के लिए तीन हजार रुपये की दी जा रही सब्सिडी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 07 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा प्राकृतिक खेती योजना के अंतर्गत रासायनिक-मुक्त कृषि को प्रोत्साहित करने तथा किसानों की आय में वृद्धि के उद्देश्य से जिला झज्जर के सभी गांवों में विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य खेती की लागत को कम करना, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार लाना तथा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है।

उपायुक्त ने बताया कि प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं होती। किसान गाय के गोबर एवं गौमूत्र से तैयार जैविक खाद का उपयोग कर शून्य लागत खेती की ओर अग्रसर हो सकते हैं। विभाग द्वारा किसानों को खाद तैयार करने हेतु ड्रम खरीदने के लिए तीन हजार रुपये तथा गाय खरीद पर 30 हजार रुपये प्रति किसान अनुदान राशि प्रदान की जा रही है। किसानों को इस योजना का अधिकतम लाभ दिलाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए विभाग द्वारा समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें जीवामृत, घनजीवामृत एवं बीजामृत बनाने की विधियों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्राकृतिक खेती अपनाने के इच्छुक किसानों को हमेटी, जींद तथा गुरुकुल, कुरुक्षेत्र के माध्यम से निःशुल्क प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

उपायुक्त ने किसानों से अपील की है कि प्राकृतिक खेती से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा सहायता के लिए वे अपने नजदीकी कृषि विकास अधिकारी, खंड कृषि अधिकारी अथवा उपमंडल कृषि अधिकारी कार्यालय से संपर्क करें। इसके अतिरिक्त किसान विभागीय पोर्टल एग्रीहरियाणा.जीओवी.इननेचुरलफार्मिंग पर पंजीकरण कर योजना का लाभ उठा सकते हैं।

सभी कोचिंग से एकदम अलग है आर. बी. क्लासेज

सभी योग्य शिक्षक छात्रों की समस्याओं को अच्छे से समझते हैं

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

सुल्तानपुर। गोमतीनगर के आर बी क्लासेज कोचिंग इस समय सभी कोचिंग से एकदम अलग दिखती है। यूपीएससी/आर.ओ-ऐ.आर.ओ/लोवर पी.सी.यस फ़ाउंडेशन कोर्स प्रिलियम+मेन्स सामान्य अध्ययन (प्री+मेन्स) टॉपिक वाइज टेस्ट ऑफलाइन-कोर्स में शामिलः उत्तर लेखन अभ्यास करेंट अफेयर्स की कक्षाएं। इसका कारण ये है कि सुयोग्य शिक्षकों की टीम, फ्री टेस्ट, फ्री टेस्टिंग क्लासेज बाहर से आने वाले छात्रों के लिए होती है। इंस्टीट्यूट के फाउंडर और सीईओ आर.बी. सर ने बताया कि उनकी क्लासेज में न केवल बेहतरीन पढ़ाई होती है बल्कि छात्रों को बहुमुखी विकास भी किया जाता है। छात्र सभी प्रकार की

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए यहां आते हैं।उनकी संतुष्टि ही हमारा ध्येय है। इसमें एक दिन सभी कक्षाओं की क्लास चलती है। कई छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता भी प्राप्त कर चुके है। पूर्व छात्रा नाम न लिखने की शर्त पर मीडिया को बताया कि शिक्षकों के पढ़ाने का तरीका बहुत सरल है। सभी शिक्षक बहुत योग्य है। हेल्पिंग नेचर है। छात्रों की समस्याओं को अच्छे से समझते है।

कांच की चूड़ियां (कहानी)

रंजना एक सरकारी स्कूल में अध्यापिका थी। समय पर स्कूल जाना, समय पर लौटना, बच्चों की कॉपियाँ जाँचना और घर की व्यवस्था संभालना-उसका जीवन एक अनुशासित लय में चलता था। उसके पति महेश एक कॉलेज में सेक्शन ऑफिसर थे। सीमित आमदनी थी, पर स्थिर। शहर के एक ठीक-ठाक मोहल्ले में उनका छोटा-सा घर था, जहाँ सुविधा थी, सादगी थी और सबसे बढ़कर आत्मसम्मान। उनके दो बच्चे थे-नीलिमा और अरुण। नीलिमा समझदार और शांत स्वभाव की, जबकि अरुण चंचल, सवालों से भरा हुआ। दोनों बच्चों को रंजना ने हमेशा यही सिखाया था कि मेहनत से कमाया गया हर सुख सम्मान के साथ जीना चाहिए। अरुण के चाचाजी, यानी महेश के छोटे भाई, शहर के पास ही एक कस्बे में महिला प्रसाधन की दुकान चलाते थे। छोटी दुकान थी-चूड़ियाँ, बिंदी, कंघी, सिंदूर, नेल पॉलिश। दुकान से जैसे-तैसे घर चलता था। उनकी पत्नी आराध्या बिल्कुल देहाती थी। सादा पहनावा, कम बोलना, आँखों में हमेशा संकोच। वह गाँव में ही पली-बढ़ी थी, शहर में कभी आई नहीं थी। उस साल दिवाली नज़दीक थी। चाचाजी को किसी काम से शहर आना पड़ा, तो पहली बार आराध्या भी साथ चली आई। शहर की चमक-दमक, चौड़ी सड़कें, रोशनी से सजे बाज़ार-सब कुछ उसके लिए नया था। रंजना ने औपचारिकता में ही सही, उनका स्वागत अच्छे से किया। बच्चों को मिठाई दी, चाय नाश्ता कराया।आराध्या पूरे घर को चुपचाप देख रही थी-सोफ़ा, अलमारी, फ्रिज, टीवी। वह कुछ कहती नहीं थी, बस उसकी आँखें बहुत कुछ कह रही थीं। नीलिमा ने देखा कि उसकी चाची अपनी कलाई पर बँधी टूटी-सी काँच की चूड़ियों को बार-बार छू रही है। शाम को जब सब लोग बैठकर बात कर रहे थे, तभी आराध्या ने धीमी-सी आवाज़ में कहा, 'भाभी त्योहार आ रहा है अगर हो सके तो दो डिब्बी चूड़ियाँ' कमरे में कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। महेश ने अख़बार

से नज़र उठाई। रंजना की भौंहें तन गईं। 'कौन-सी चूड़ियाँ?' उसने सपाट स्वर में पूछा। 'काँच की वही बीस रुपये वाली' आराध्या ने जैसे हिम्मत जुटाकर कहा। रंजना के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आई, लेकिन उसमें मिठास नहीं थी। 'आराध्या,' उसने कहा, 'कुछ डिमांड करने से पहले घर भी देख लेना चाहिए। हम कोई अमीर लोग नहीं हैं। हमारी भी ज़िम्मेदारियाँ हैं।' शब्द साधारण थे, लेकिन उनके पीछे छुपा भाव तीखा था।आराध्या का चेहरा उतर गया। उसने सिर झुका लिया। 'जी भाभी' और इसके बाद उसने कुछ नहीं कहा। अगले दिन चाचा-चाची वापस चले गए। जाते समय आराध्या ने बच्चों को सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया। रंजना ने औपचारिक विदा दी। किसी ने नहीं देखा कि सीढ़ियाँ उतरते हुए आराध्या की आँखों से दो बूँद आँसू टपक पड़े। दिवाली आई। घर रोशनी से जगमगा उठा। रंजना ने अपने लिए नई चूड़ियाँ खरीदीं-थोड़ी महंगी, रंग-बिरंगी। पूजा के बाद जब उसने चूड़ियाँ पहनीं, तो अरुण ने अचानक पूछा, 'माँ, चाची ने जो चूड़ियाँ माँगी थीं, वो आपने क्यों नहीं दी?' रंजना झुँझला गई। 'बच्चों को इन बातों से क्या मतलब!' लेकिन अरुण चुप नहीं हुआ। 'बीस रुपये की ही तो थीं' उस रात रंजना को नींद नहीं आई। उसे बार-बार आराध्या का झुका हुआ चेहरा याद आ रहा था। वह सोच रही थी-क्या सचमुच वह इतनी गरीब नहीं थी कि बीस रुपये की चूड़ियाँ दे सके? या फिर उसे अपने 'संपन्न' होने का अहंकार था? कुछ दिन बाद खबर आई कि आराध्या गंभीर रूप से बीमार है। चाचाजी ने फोन पर रोते हुए बताया कि पैसे की कमी है। बिना देर किए रंजना और महेश गाँव पहुँचे। छोटे-से कच्चे घर में आराध्या खाट पर पड़ी थी। कलाई खाली थीं। आँखें धँसी हुईं, लेकिन चेहरा शांत। रंजना ने उसके पास बैठकर हाथ पकड़ा।

'आराध्या मैं' शब्द गले में अटक गए। आराध्या ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, 'भाभी चूड़ियाँ तो टूट जाती हैं रिश्ते नहीं टूटने चाहिए' रंजना की आँखों से आँसू बह निकले। उसने अपने हाथ से चूड़ियाँ उतारीं और आराध्या की कलाई में पहना दीं। 'मुझे माफ़ कर दो' आराध्या की आँखें बंद हो गईं। उसकी कलाई में चूड़ियों की धीमी-सी आवाज़ गूँज रही थी-जैसे किसी टूटे हुए अहंकार की अंतिम ध्वनि। उस दिन के बाद रंजना ने समझ लिया था-

संपन्नता घर की चीज़ों से नहीं, दिल की उदारता से आँकी जाती है।

सुनील कुमार महला,
फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

मेलों में मौत के झूले: खुशी के टिकट पर बिकती ज़िंदगी

-डॉ० प्रियंका सौरभ

हरियाणा के सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय मेले में झूला टूटने की घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया कि हमारे यहाँ मनोरंजन भी जान जोखिम में डालकर ही किया जाता है। जिस मेले को संस्कृति, कला और पर्यटन का उत्सव कहा जाता है, वही मेला एक पल में चीखों, अफरातफरी और मातम में बदल गया। झूले के अचानक टूटकर गिरने से एक पुलिस इंस्पेक्टर की मौत हो गई और तेरह लोग गंभीर रूप से घायल हुए। यह सिर्फ़ एक दुर्घटना नहीं, बल्कि उस व्यवस्था का परिणाम है जहाँ सुरक्षा सबसे आख़िरी प्राथमिकता बन चुकी है।

मेलों में झूले हमेशा से आकर्षण का केंद्र रहे हैं। बच्चों की हँसी, युवाओं का उत्साह और परिवारों की उम्मीदें—सब कुछ इन झूलों से जुड़ा होता है। लेकिन जब यही झूले मौत का कारण बन जाएँ, तो सवाल केवल तकनीकी खराबी का नहीं रहता, बल्कि पूरे प्रशासनिक ढाँचे की लापरवाही उजागर हो जाती है। सूरजकुंड हादसा अचानक नहीं हुआ। यह उस लापरवाही की परिणति है, जिसे सालों से "चलने दो" कहकर नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर ऐसे झूलों की अनुमति कैसे दी जाती है? क्या इनके फिटनेस सर्टिफिकेट की कोई गंभीर जाँच होती है या फिर कुछ काग़ज़ों और हस्ताक्षरों से ही सब कुछ "मैनेज" कर दिया जाता है? हर बड़े मेले से पहले प्रशासन सुरक्षा के दावे करता है—ड्यूटी पर पुलिस, एंबुलेंस, दमकल वाहन—लेकिन झूलों की तकनीकी जाँच अक्सर औपचारिकता भर बनकर रह जाती है। जिस मशीन पर दर्जनों ज़िंदगियाँ झूल रही हों, उसकी गुणवत्ता, मेंटेनेंस और ऑपरेटर की ट्रेनिंग पर कोई सख़्त निगरानी क्यों नहीं होती?

यह पहली बार नहीं है जब किसी मेले या मनोरंजन पार्क में झूला गिरने से मौतें हुई हों। देश के अलग-अलग राज्यों में समय-समय पर ऐसे हादसे होते रहे हैं—कहीं बच्चों की जान गई, कहीं महिलाएँ घायल हुईं, कहीं पूरा परिवार उजड़ गया। हर बार वही कहानी दोहराई जाती है—जाँच के आदेश, मुआवज़े की घोषणा और कुछ दिनों का शोर। फिर सब कुछ भुला दिया जाता है, अगली दुर्घटना तक।

सूरजकुंड हादसे में एक पुलिस इंस्पेक्टर की मौत होना इस त्रासदी को और गंभीर बना देता है। जो व्यक्ति जनता की सुरक्षा के लिए तैनात था, वही स्वयं व्यवस्था की लापरवाही का शिकार हो गया। यह घटना प्रतीक है उस विडंबना की, जहाँ सुरक्षा देने वाला भी सुरक्षित नहीं है। सवाल यह है कि अगर एक अधिकारी की जान यूँ ही चली गई, तो आम नागरिक की सुरक्षा की क्या गारंटी है?

प्रशासन अक्सर ठेकेदारों पर दोष मढ़कर पल्ला झाड़ लेता है। कहा जाता है कि झूला निजी संचालक का था, मेंटेनेंस उसकी ज़िम्मेदारी थी। लेकिन क्या प्रशासन की ज़िम्मेदारी यहीं खत्म हो जाती है? क्या बिना कड़ी जाँच के किसी भी ठेकेदार को मौत के झूले लगाने की खुली छूट दी जा सकती है? अगर हाँ, तो फिर हादसे के बाद सिर्फ़ ठेकेदार को दोषी ठहराना एक तरह का धोखा ही है।

असल में यह समस्या सिस्टम की है। मेले अस्थायी होते हैं, लेकिन लापरवाही स्थायी। सुरक्षा मानकों को "अतिरिक्त खर्च" समझा जाता है और मुनाफ़े को सबसे ऊपर रखा जाता है। झूले पुराने होते हैं, कई बार दूसरे राज्यों से लाकर बिना समुचित जाँच के लगा दिए जाते हैं। ऑपरेटर अक्सर अप्रशिक्षित होते हैं, जिन्हें न मशीन की तकनीक की समझ होती है और न आपात स्थिति से निपटने की ट्रेनिंग।

दुखद यह भी है कि हादसे के बाद प्रशासन की संवेदनशीलता केवल मुआवज़े की घोषणा तक सीमित रह जाती है। मृतक के परिवार को कुछ लाख रुपये देकर समझ लिया जाता है कि जिम्मेदारी पूरी हो गई। लेकिन क्या किसी की जान की कीमत कुछ लाख रुपये हो सकती है? क्या मुआवज़ा उस दर्द, उस खालीपन और उस अन्याय की भरपाई कर सकता है?

सवाल यह भी है कि क्या हमारे यहाँ मनोरंजन का मतलब ही जोखिम बन गया है? क्या मेले, झूले और उत्सव आम आदमी के लिए "लक आज़माने" की जगह बन चुके हैं—जहाँ ज़िंदा लौटना भी किस्मत पर निर्भर हो? यह सोच किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मनाक है।

सूरजकुंड मेला अंतरराष्ट्रीय पहचान रखता है। देश-विदेश से लोग यहाँ आते हैं। अगर ऐसे प्रतिष्ठित आयोजन में सुरक्षा का यह हाल है, तो छोटे कस्बों और गाँवों के मेलों की स्थिति का अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं है। वहाँ न जाँच होती है, न एंबुलेंस समय पर पहुँचती है और न ही किसी की जवाबदेही तय होती है।

अब ज़रूरत है केवल संवेदना जताने की नहीं, बल्कि ठोस कार्रवाई की। हर मेले और मनोरंजन आयोजन के लिए सख़्त सुरक्षा मानक तय होने चाहिए। झूलों की तकनीकी जाँच स्वतंत्र विशेषज्ञों से कराई जाए, न कि औपचारिक समितियों से। ऑपरेटरों की ट्रेनिंग अनिवार्य हो और ज़रा-सी लापरवाही पर लाइसेंस रद्द किया जाए। सबसे अहम बात—हादसे की स्थिति में सिर्फ़ मुआवज़ा नहीं, बल्कि आपराधिक ज़िम्मेदारी भी तय की जाए।

आज सूरजकुंड में झूला गिरा है। कल यह किसी और मेले में गिरेगा, अगर हमने अभी भी आँखें मूँदे रखीं। सवाल यह नहीं है कि अगला हादसा कहाँ होगा, सवाल यह है कि क्या हम हर बार मौत के बाद ही जागेंगे? मेलों का मकसद खुशी बाँटना होता है, मौत नहीं। लेकिन जब खुशी के टिकट पर ज़िंदगी बिकने लगे, तो समझ लेना चाहिए कि यह सिर्फ़ हादसा नहीं, एक अपराध है—और उस अपराध की ज़िम्मेदारी तय करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नवांकुर पीढ़ी को गेमिंग की लत से छुड़वाने की चुनौती?

डॉ.रमेश ठाकुर

पिछले ही सप्ताह भोपाल की छत्रसाल कॉलोनी के एक व्यवसायी के 8वीं क्लास में पढ़ने वाले इकलौते बेटे ने गेमिंग में फंसकर आत्महत्या की थी। घटना चर्चाओं में थी कि वैसा ही एक और मामला गाजियाबाद में घट गया। सिलसिलेवार तरीके से इस तरीके के केस रोजाना प्रकाश में आ ही रहे हैं। बीते 24 महीनों में करीब 180 घटनाएं देशभर में रिपोर्ट की गई हैं। एनसीआरबी के आंकड़ों में जिस हिसाब से 5 सालों में उछाल आया है वह निश्चित रूप से रोंगटे खड़े करता है। कौनसी तरकीब अपनाई जाए, जिससे बच्चें फिर से गेमिंग के चुंगल से निकलकर अपने पारंपरिक देशी किस्म के खेलकूदों की ओर मुड जाएं।

दरअसल, ऐसी जरूरत गाजियाबाद में तीन बहनों के सुसाइड के बाद और ज्यादा महसूस होने लगी है। क्यों मॉडर्न बच्चे मैदानी खेलों को छोड़कर मोबाइल गेमिंग जैसी आफतों में घुसते जा रहे हैं। ऐसे सवालों का उत्तर बिना देर किए सामुहिक स्तर पर समाज के प्रत्येक वर्गों को खोजना चाहिए। टीनएजर्स में गेमिंग की लत जानलेवा बीमारी जैसी हो गई है जिसका ताजातरीन उदाहरण सामने है। कोरियन गेमिंग की आड़ में गाजियाबाद की तीन सगी नाबालिग बहनों ने 'लवर गेम टास्क' में खुद को फंसाकर मौत को गले लगाना पड़ा। उनके सुसाइड की खबर समाज में आग की तरह फैली हुई हैं। दरअसल तीनों बहनों ने मौत को जिस अंदाज से अपनाया उसने अभिभावकों को सबसे ज्यादा झकझोरा है। मृतकों ने अपने पिता के नाम चिट्ठी लिखकर मौत की वजह भी बताई। आठ पन्नों के सुसाइट में उन्होंने अपनी अधूरी चाहत की पूरी दास्तां को विस्तार से लिखा। ऐसी-ऐसी वजहें लिखीं, जिन्हें पढ़-सुनकर समाज सोचने पर विवश हुआ है।

घटना की शुरूआती पड़तालें बताती हैं कि गेंम की गिरफत में तीनों बहनें ऐसी जकड़ी कि निकल ही नहीं पाई, निकलने की तमाम नाकाम कोशिशें जरूर की? लेकिन दलदल में इतनी फंस चुकी थी, वहां से निकला उनके लिए नामुकिन हो गया। अंत में तीनों ने नौवीं मंजिल से छलांग लगाकर अपनी जीवन लीला को समाप्त करना ही मुनासिब समझा। पुलिस घटना की तफ्तीश में है। मामला जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है, नई-नई अचंभित करने वाली बातें सामने आ रही हैं। कुछ ऐसी भी बातें जिनपर एकाएक विश्वास करना मुस्किल है। पुलिस की थ्योरी और पड़ोसियों की माने तो तीनें लड़कियां चौबीसों घंटे गेंम में रहती थीं। तीनों ही कोरियन लड़कों से शादी करने पर आमादा थी। गेंमिंन के जरिए कोरियन कल्चर को उन्होंने अपने दिल-दिमाग में इस कदर बिठा हुआ था कि कोरिया के बिना उनका जीवन बेकार है। उनकी हरकतों से परिवार भी, बीते दो सालों से परेशान और चिंतित था। पिता ने तीनों से उनका मोबाइल भी छीन लिया था, जिसके चलते उन्होंने लड़ना-झगड़ा भी शुरू कर दिया था। इसके अलावा लड़कियां रोजाना अपने परिवार पर कोरिया ले जाने का दबाव भी डालने लगी थीं। सुसाइड में तीनों बहनों ने दुखभरी इमोजी भी बनाई, जिसमें पिता चेतन कुमार को 'सॉरी पापा' लिखकर, अंत में अलविदा शब्द भी लिखा।

ये बात अब तथ्यात्मक हो चुकी है कि ज्यादातर गेम साइको टाइप लत परोसने लगे हैं। बच्चों को ज्यादा से ज्यादा अपनेपन का एहसास कराने की जरूरत है। एक बार जो इसकी गिरफ्त में फंसा, तो आसानी से छुटकारा नहीं पा सकता। इस झकझोर देने वाली घटना को ध्यान में रखकर ये समझा होगा कि आखिर कोरियाई कल्चर टीनएजर्स को क्यों लुभाने रहा है? दरअसल, कोरियाई कल्चर की कुछ खासियतें हैं। उनका आधुनिक ड्रामा और के-पॉप प्यार और पारिवारिक भावनाएं लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं। उनके अपनेपन से लोग आसानी से उनसे जुड़ जाते हैं। कोरिया की आधुनिक और पारंपरिक जीवनशैली, के-फूड, फैशन और के-ब्यूटी भी नवयुवाओं को खासा आकर्षित करती है। हिंदुस्तान में इस समय ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कोरियन फिल्म, ड्रामा, सीरियल और मूवीज को खूब पसंद किए जा रहे हैं। इस सबसे बढ़कर नवाचर युवाओं पर उनका गेंमिंग सेक्टर ज्यादा प्रभाव डाल रहा है।

नवांकुर युवा होती जनरेशन पर ऑनलाइन गेमिंग के गहरे मानसिक असर से बचाने की बड़ी चुनौती सामने खड़ी हो गई है। गाजियाबाद जैसी घटनाओं के चलते नाबालिगों का असमय चले जाना, अभिभावकों को भीतर तक आघात देता है। बदले युग की आधुनिक तस्वीरें निश्चित रूप से डरावनी हैं। मैदान, पार्क, खेलकूद की तमाम जगहें बच्चों के बिना सुने पड़े हैं। उन्हें छोड़कर बच्चें मोबाइलों में घुसे हैं। स्कूलों से आने के बाद बच्चे मोबाइल्स पर झपट्टा मारते हैं। इस दुखद घटना से हम सभी को सीखने की जरूरत है। घटना 4 फरवरी सुबह करीब सवा दो बजे गाजियाबाद के 'भारत सिटी सोसाइटी' की है। पिता चेतन ने दो शादियां की थी, पहली बीवी से दो बेटियां हुई लेकिन बेटे के चाहत में चेतन ने अपनी साली से ब्याह किया, उससे भी बेटी हुई। तीनों की उम्र महज 16, 14 और 12 वर्ष के आसपास थी। तीनों एक ही कमरे में ज्यादातर समय साथ बिताती थीं। कोविड के बाद किन्हीं वजहां से उनका स्कूल जाना बंद हुआ। उसके बाद कथित तौर पर एक मोबाइल गेमिंग ऐप के प्रभाव में आ गईं। दरअसल, यही बात अपने आप में सवाल खड़े करती है। बिना किसी हस्तक्षेप के बच्चे इतने साल अपनी पढ़ाई को कैसे गंवा सकते हैं? क्या उन्हें कोई दिक्कत थी। सीखने-पढ़ने में कोई कठिनाईयां थीं। या फिर मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्याएं थीं। इसके अलावा कोई सामाजिक अलगाव या कुछ और समस्याएं थीं, जिस पर परिवार ने ध्यान नहीं दिया? इन सवालों के तय तक जांच-पड़ताल करने की जरूरत है। क्योंकि एकाएक गेम की लत के चलते तीनों का दुनिया छोड़ देना, गले नहीं उतरता? फिर अगर, मौत का कारण गेम है तो इतना समझ लेना चाहिए, इस समस्या ने सभी के दरवाजों पर दस्तक दे दी है। अपने बच्चों को कैसे बचाना है, ये खुद पर निर्भर करता है। क्योंकि हमारे देश में ऐसा संभव नहीं है कि ऑस्ट्रेलिया की भांति हमारे यहां भी 16 वर्ष तक के बच्चों को सोशल मीडिया पर बैन लग सकता है। ये अभिभावकों के लिए खुली चुनौती और चेतावनी जैसी है। ऐसी चेतावनी जो बच्चों को गेमिंग जैसी बीमारी से बचाने का आह्वान करती है। बच्चों पर निगरानी रखनी होगी।

टीम पार्षद नवीन पंडित ने कानपुर में दो विद्यालयों के बच्चों के लिए उपलब्ध कराई बेंचे

- मेज कुर्सियों और बेंचों के अभाव में अभी तक जमीन में बैठकर पढ़ने को मजबूर थे निराला नगर और लाल क्वार्टर स्कूल के बच्चे

सुनील बाजपेई

कामपुर। लाल क्वार्टर स्कूल गोविंद नगर और निराला नगर के बच्चे अब जमीन पर बैठकर पढ़ने लिखने के बजाय अब बेंच पर बैठकर शिक्षा ग्रहण करेंगे। उनके बैठने के लिए बेंच की यह व्यवस्था समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित की ओर से की गई है। यहां गोविंद नगर के निराला नगर के विद्यालयों में जहां बच्चे जमीन पर बैठकर पढ़ रहे थे। अब उनको बेंचे बनवाकर समर्पित कर विद्यालय को सौंपा गया। पार्षद दल के नेता नवीन पंडित द्वारा यह व्यवस्था करवाएं जाने से विद्यालय में बच्चों के चेहरे खिल उठे और उन्होंने तालियां बजाकर वेलकम अंकल वेलकम अंकल ,भगवान आप लोगों को खूब तरक्की दे। कहकर अभिवादन भी किया। इसके लिए आज गोविंद नगर के पार्षद नवीन पंडित के नेतृत्व में समाज सेवी श्याम कुकरेजा, दिनेश आहूजा, राजन आहूजा, प्रेम कुमार खंडूजा, रोहित शुक्ला, बबली भैया, विपुल गेरा, संदीप पासवान, विनोद कुमार, मनीष कुमार और राजकुमार सिंह सहित तमाम लोग पहले गोविंद नगर विद्यालय पहुंचे ,जहां पर 40 बच्चों की बैठने की व्यवस्था की गई।

इसके बाद भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित की अगुवाई वाली यह टीम निराला नगर कंपोजिट पब्लिक स्कूल भी पहुंची और यहां भी 40 बच्चों की बैठने की व्यवस्था की गई।

अवगत करा दें कि भाजपा पार्षद दल के नेता जुझारू नवीन पंडित के नेतृत्व में पनकी में एक विद्यालय के बच्चों को बैठने की व्यवस्था पहले ही की जा चुकी है। भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने कहा कि हमारे सहयोगी दिनेश आहूजा ,श्याम कुकरेजा ने हमारा सहयोग किया है। मैं इन सब का आभारी हूं। और ऐसे पुनीत कार्यों में हमारे साथ कंधे से कंधे मिलाकर संघर्ष करें,जिस पर जिस पर उन्होंने पूरा भरोसा दिया कि जरूरत पड़ने पर और भी विद्यालयों की मदद इसी तरह से की जाएगी। आप इसी प्रकार से स्कूल ढूंढते रहे और हम लोग यहां पर मदद करते रहेंगे। इस अवसर पर भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित, पार्षद वेलफेयर एसोसिएशन के संरक्षक अमित पांडेय का विद्यालय की प्रधानाचार्य शमिता और दूसरे विद्यालय की प्रधानाचार्य बच्चों द्वारा कोटि कोटि अभिनंदन भी किया गया।

व्यंग्य : फुटनोट की महान विभूति

विवेक रंजन श्रीवास्तव

इस देश की सार्वजनिक जीवन की सबसे दिलचस्प विशेषता यह है कि यहाँ कर्म से अधिक पहचान का मूल्य है । निष्ठा , लेबल , विचार धारा , सदाचार पर भारी हैं। जो दिखाई देता है वही माना जाता है और जो माना जाता है वही सम्मानित होता है। मंच पर बैठे चेहरे बदलते रहते हैं पर मंच के पीछे रखी कुर्सियाँ स्थायी होती हैं। कुछ लोग इन्हीं कुर्सियों की छाया में बड़े होते हैं। कुछ पूरी धूप में तपते रहते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जो धूप और छाया दोनों से ईमानदारी से गुजरते हैं पर अंत में किसी भी मौसम के आधिकारिक प्रतिनिधि नहीं बन पाते।

यहाँ विचारधारा कम, वेशभूषा अधिक बोलती है। अगर आपके माथे पर सही तिलक है, चाल में सही ताल है । सम्बन्ध सीधे हों या परोक्ष , सही अवसरों पर नजर है, तो आपकी योग्यता प्रमाणित मान ली जाती है। इसके विपरीत अगर आप वही काम बिना विशिष्ट परिधान के करते हैं, वही अनुशासन बिना ढोल के निभाते हैं और वही विचार बिना घोषणा के जीते हैं, तो आप संदिग्ध ठहराए जाते हैं। आपको न तो अपना कहा जाता है, न पराया। आप उपयोगी हैं पर सम्मान के लिए अनिवार्य नहीं।

सत्ता और सम्मान के इस गलियारे में सबसे ज्यादा भीड़ उन्हीं की होती है जो समय पर सही जगह खड़े हो जाते हैं। यहाँ आदर्शों की दुकान है, पर तमगे उन्हीं को मिलते हैं जिनके पास अधिकृत पहचान पत्र हो। बाकी लोग आदर्शों के साथ सोचते रह जाते हैं कि शायद अगली बार उनका नंबर आएगा। वे भूल जाते हैं कि यहाँ कतार नहीं, चयन होता है और चयन में खड़े रहने से ज्यादा जरूरी है पहचाने जाना।

इस पूरे परिदृश्य में सबसे मजेदार भूमिका निरीह तटस्थों की है। वे नारे नहीं लगाते, इसलिए संदेह के घेरे में रहते हैं। वे गलत को गलत भी कहते हैं, इसलिए अविश्वसनीय माने जाते हैं। वे समर्थन करते हैं, पर अंध भक्ति नहीं ।वे अपने समय की विसंगतियों को पहचानते हैं, पर तालियों के लिए नहीं, आत्मसंतोष के लिए लिखते बोलते काम करते हैं। यही उनकी सबसे बड़ी भूल है।

सत्ता को शोर पसंद है, स्पष्ट पक्षधरता पसंद है। जो चुपचाप सही काम करता है, वह व्यवस्था के लिए असुविधाजनक होता है क्योंकि वह उदाहरण बन जाता है। उदाहरण व्यवस्था को डराते हैं। व्यवस्था चाहती है अनुयायी, प्रश्नचिह्न नहीं। इसलिए जो लोग बिना झंडा उठाए उसी दिशा में चलते हैं, उन्हें सबसे पहले हाशिए पर धकेल दिया जाता है। न वे विद्रोही कहलाते हैं, न समर्थक , वे बस असुविधाजनक होते हैं।

अजीब स्थिति बनती है उनकी जिन्होने कोई खेमे को अपनाया नहीं, फिर भी हर खेमे के सच में शामिल होते हैं। एक ओर उन्हें कहा जाता है कि तुम हमारे नहीं हो, दूसरी ओर यह भी स्वीकार किया जाता है कि तुम्हारी बातों में दम है। यह दम ही उनके लिए अभिशाप बन जाता है। क्योंकि दमदार तटस्थता सबसे खतरनाक होती है। वह सवाल उठाती है, बिना यह बताए कि सवाल किसके पक्ष में है।

यहाँ विचारधारा को अक्सर गणवेश समझ लिया जाता है। जो गणवेश में नहीं, वह या तो गुप्त शत्रु है या असमंजस में पड़ा हिस्सा मात्र । यह मान लिया जाता है कि बिना पहचान के कोई समर्पण संभव नहीं। जबकि सच्चाई यह है कि सबसे गहरा समर्पण वही होता है जो प्रचार का मोहताज नहीं होता। लेकिन इस सच्चाई की कीमत बहुत महँगी है। उसे कोई पुरस्कार नहीं मिलता, कोई नियुक्ति नहीं, कोई मंच नहीं।

इतिहास ऐसे लोगों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने समय में सही कहा, सही किया, पर गलत जगह खड़े रहे। वे न तो सत्ता के गीतकार बने, न विरोध के पेशेवर चेहरे। वे बीच की उस जमीन पर खड़े रहे जहाँ से दृश्य सबसे साफ दिखता है, पर वहीं सबसे ज्यादा अकेलापन भी मिलता है। उनके हिस्से में न जयकार आई, न समर्थन, बस उपेक्षा मिल पाई। ऐसे लोग सम्मान की चयन सूची के नॉमिनेशन बस बने रह जाते हैं।

जो वास्तव में उस अनुशासित, समर्पित और राष्ट्रकेंद्रित कार्यशैली को अपने जीवन में उतारते हैं, पर उसे नाम की माला नहीं पहनाते, वे अनदेखे रह जाते हैं। उन्हें वह खेमा संदेह से देखता है जिसकी वे अपने आदर्श की मूल भावना में आलोचना नहीं करते, और वह खेमा तो उनसे कतराता ही है जिसकी विसंगतियों पर वे उंगली रखते हैं। सत्यवादी होना यहाँ सबसे असुविधाजनक स्थिति है। क्योंकि सत्य किसी का स्थायी समर्थक नहीं होता। वह सबको आईना दिखाता है और आईना हर सत्ता को चुभता है। इसलिए सबसे सुरक्षित स्थान या तो पूरी तरह पक्ष में होना है या पूरी तरह विपक्ष में। बीच में खड़ा व्यक्ति इतिहास में नहीं, फुटनोट में भी जगह नहीं पाता।

अब सामाजिक न्याय व धर्मनिरपेक्षता का झंडा बुलंद करेगी भाजपा

कमलेश पांडेय

कभी 'मंडल' के बाद 'कमंडल' की सियासत शुरू करके राष्ट्रीय व सूबाई राजनीति में कांग्रेसियों, समाजवादियों और उनके नेतृत्व वाले गठबंधन को निपटाने वाली भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) अब केंद्र व राज्यों में 'ओबीसी नेतृत्व' के मजबूत होते ही स्वघोषित 'हिंदुत्व' के एजेंडे से भटकते हुए उसी कथित सामाजिक न्याय व सेक्युलरिज्म का झंडा बुलंद करती दिखाई दे रही है, जिसकी जनविरोधी सियासत करने वाले दल हाशिए पर चले गए!

बताया जाता है कि अपने वर्तमान नेतृत्व को चुनावी मजबूती यानी बहुमत दिलाते रहने के लिहाज से भाजपा ने भी देश की उसी घिसी पिटी सवर्ण विरोधी 'सामाजिक न्याय' और मुस्लिम परस्त 'अल्पसंख्यकवाद' की राजनीतिक पीच पर नए तरीके से शैक्षणिक बॉलिंग-बैटिंग शुरू की है, ताकि वह लोकसभा चुनाव 2024 के अप्रत्याशित परिणाम के सदमे से उबर सके। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के परिणामों ने भी उसकी हौसलाअफजाई की है!

इसलिए जहां निर्वाचित सवर्ण नेतृत्व भी रणनीतिक खामोशी दिखा रहा है, वहीं सामान्य जाति के लोग भाजपा-संघ की सुनियोजित चाल के खिलाफ सुलग रहे हैं ।दरअसल, भाजपा सरकार नियंत्रित 'यूजीसी' के एक नापाक करतब से और उसे पर्दे के पीछे से शह देते हुए अमलीजामा पहनाने वाली मध्यप्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के साल 2023 वाले समनुरूप दिशानिर्देश से और बिहार के तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर के हालिया निर्देशों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिंदूहित चिंतक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उनका सियासी मुखौटा समझी जाने वाली भाजपा के ओबीसी-दलित रणनीतिकार और मातहत अधिकारी सत्ता मद में इतने नेता मदांध हो चुके हैं कि इस मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगाए हुए रोक की भी उन्हें परवाह नहीं है।

मसलन ऐसा करके अपने ही पुराने नारों और मुद्दों को दरकिनार करते हुए देश व समाज को तोड़ने वाले दलित, पिछड़ा व अल्पसंख्यक विमर्श को पुनः हवा देने लगी है, जबकि समग्र हिन्दू हित में जातिवादी और पूंजीवादी सोच-समझ के सम्पूर्ण उन्मूलन की दिशा में उसे सधे हुए रणनीतिक कदम बढ़ाने चाहिए। ऐसे में भारतीय समाज का इंजन समझे जाने वाले सवर्णों की सामाजिक व राष्ट्रीय दुविधा बढ़ेगी, जिससे देर सबेर 'हिंदुत्व' का गतिशील विचार रथ भी थमेगा और दुनियावी चक्रब्यूह संरचना संकट में फंसेगा। ततपश्चात भाजपा की सरकारें भी लुढ़क कर किस सियासी गड्ढे में जा फंसेगी, इसकी शायद कल्पना उन्होंने भी नहीं की होगी।

ऐसे अदूरदर्शी रणनीतिकारों को पता होना चाहिए कि भारत की सियासत में धुर सवर्ण विरोधी एजेंडा अपनाने वाले दल हाशिए पर सिमटकर देशद्रोही सियासत की ओर उन्मुख हो गए। बताया जाता है कि कांग्रेस की धुर मुस्लिम तुष्टिकरण और जातीय समीकरण वाली जड़वत सियासी नीतियों से अपेक्षाकृत प्रगतिशील सवर्णों का मन ऊब गया तो वे कांग्रेसी से समाजवादी बने पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई व पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री राजनारायण सिंह जैसे समाजवादियों ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया और देश की सत्ता हथिया ली।

तब 1960 और 1970 के दशक में कांग्रेस को कमजोर करने और उसके पक्षधर दलितों-मुसलमानों को उससे दूर करके अपने पक्ष में मिलान के लिए ही राममनोहर लोहिया जैसे समाजवादी नेताओं ने पिछड़ावर्ग को गोलबंद करते हुए नारा दिया था- ₹पिछड़ा पावे सौ में साठ।₹ इसी रणनीति के तरह 1977 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने ओबीसी के हितार्थ मंडल आयोग का गठन किया था। उसी मंडल आयोग की रिपोर्ट को 1989 में लागू करके समाजवादियों की तत्कालीन जनता दल सरकार के प्रधानमंत्री वी पी सिंह ने जिस ओबीसी सियासत को हवा दी, उसका मकसद तत्कालीन उपप्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल को काबू में रखना था। इसके बाद जो हुआ देशवासी वाकिफ हैं।

दरअसल, इन सब जातिवादी और सेक्युलर सियासत के पीछे की गहरी राजनीतिक चाल यह है कि पूंजीवाद समर्थक कांग्रेस और भाजपा एक ही सियासी सिक्के के दो पहलू हैं और इन्होंने कभी समाजवादियों को आगे करके वामपंथियों को कमजोर किया तो कभी समाजवादियों में फूट दलकरके भारत में पूंजीवादी हितों को संरक्षित किया ।बताया जाता है कि पूंजीवाद एजेंडे को सामाजिक कवच प्रदान करने के लिए ही ये पार्टियां पुनः जाति आधारित सामाजिक न्याय और धर्म आधारित अल्पसंख्यकवाद की सियासत को संविधान बचाने की आड़ लेकर नए सिरे से धार दे रही हैं।

वहीं, भाजपा भी अब इसी सियासी पीच पर लौटने की जो बेताबी दिखा रही है, उससे अब यह साफ हो चुका है कि भाजपा का हिंदुत्व भी 'नेहरू कांग्रेस' के मुस्लिम लीगी जिन्ना विरोधी हिंदुत्व सरीखा छलावा ही निकला! जबकि इनकी सवर्ण विरोधी राजनीति से सवर्ण नेताओं की तो सियासत चमकी, लेकिन जमींदारी से लेकर नौकरी और कारोबार तक में उन्हें हाशिए की ओर जाना पड़ा। अब तो उन्हीं विदेशी कम्पनियों की देश में पुनः आवभगत होने लगी है, जिनकी साजिशों से कभी भारत गुलाम बना था और स्वतंत्रता संघर्ष में सवर्णों को भारी कीमत चुकानी पड़ी थी।

बताया जाता है कि गुलाम भारत की राजनीति में जब अंग्रेज-अंग्रेजियत विरोधी मुहिम तेज हुई, तो चालाकी से उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम विमर्श तेज कर दिया। परिमाण स्वरूप देश और समाज दोनों टूटा। इसी क्रम में जब हिन्दू, मुसलमानों के खिलाफ एकजुट होने लगे तो चतुर अंग्रेजों ने 1933 में जातीय जनगणना करवाकर दलित, पिछड़ा और सवर्ण विमर्श जैसी हिन्दू विरोधी सियासत शुरू की, जिससे सामाजिक विखंडन की गति तेज हुई। तब उनकी इस फूट डालो, शासन करो वाली खलनीति का गुप्त एजेंडा था ब्रिटिश प्रभाव ईस्ट इंडिया कम्पनी को मजबूती देने वाले जमींदारों को शह देना और उनके खिलाफ देशवासियों को गुप्त मदद देकर भड़काने वाले राष्ट्रवादी जमींदारों व उनके सिपहसलारों को कमजोर करना। क्योंकि 1857 के बाद ब्रिटिश अधिकारी ब्रितानी हितों को लेकर सजग हो चुके थे।

लेकिन इसी दौर में जब 1917 की रूसी क्रांति के बाद भारत में भी पूंजीवादी ताकतों के खिलाफ किसान-मजदूर-कामगार समर्थक वर्गवादी वामपंथी राजनीति तेज हुई तो अंग्रेजों के समक्ष दोहरी चुनौती आ गई। इसलिए उन्होंने पुनः हिंदुओं में जातीय विभाजन तथा मुस्लिमों में साम्प्रदायिक विभाजन को और गहरा किया। लेकिन जब सजग भारतीय बिखरने के बजाए जनविरोधी पूंजीवादी ताकतों के खिलाफ एकजुटता दिखाई तो उन्होंने निर्वाचन क्षेत्रों, शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण का राग अलापकर मुसलमानों और दलितों को अपने खेमें में रखकर आजादी के आंदोलन को कमजोर किया।

इसी बीच औद्योगिक क्रांति और शैक्षणिक बदलाव जनित विस्तार के फलस्वरूप भूमि जमींदारी का स्वरूप परिवर्तित होकर पूंजीवादी कम्पनी राज की तरफ भी कुछ कुछ शिफ्ट होने लगा था। इसी को हतोत्साहित करने के लिए अंग्रेजों ने हिंदू-मुस्लिम समाज को तोड़े रखने के निमित्त हिंदू और सवर्ण विरोधी कानूनी स्टैंड लेकर व लाभान्वित वर्गों के मजबूत नेताओं को तोड़कर अपनी ओर करना शुरू कर दिया। लेकिन तबतक भारतीय राजनेता भी परिपक्व व समझौतावादी होकर अपने राष्ट्रीय आजादी जैसे अकाट्य लक्ष्यों के प्रति पूरी निष्ठा के साथ समर्पित होकर एकजुटता दिखा रहे।

इससे राष्ट्रवादी समाज एकजुट रहा और दो राष्ट्रों के सिद्धांतों के आधार पर देश विभाजन तक कबूल कर लिया, लेकिन अंग्रेजों को भारत से हटाकर ही दम लिया। इसी कड़ी में पुष्पित पल्लवित हुए नौकरशाहों, न्यायविदों, उद्योगपतियों और राजनेताओं ने अपने अथक संघर्षों की प्रशासनिक कीमत वसूलने की सियासत शुरू कर दी और बजाप्ता उन्हें संवैधानिक व कानूनी रूप दिया। उसी दौर में जिन्ना को पाकिस्तान, अंबेडकर को हिंदुस्तान में दलित-आदिवासी राज और नेहरू को सत्तागत जनतांत्रिक नेतृत्व मिला।

चूंकि लोकतांत्रिक भारत में जवाहर लाल नेहरू को क्षणभंगुर सत्ता मिली थी और सरदार पटेल की सियासी चुनौतियों का ख़तरा उन्हें था। इसलिए उन्होंने इसे स्थायित्व देने की मंशा से सियासी तिकड़म शुरू किया और दलित-मुस्लिम वोटों की महत्ता के दृष्टिगत डॉ अंबेडकर को आगे करके जो स्थायी संवैधानिक षडयंत्र रचा, उसकी राजनीतिक कीमत आज का सवर्ण समुदाय चुका रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि अपने परिवार की राजनीतिक सत्ता सदैव कायम रखने के लिए उन्होंने आजाद भारत में भी फूट डालो और शासन करो जैसी समाज विरोधी नीतियों का अनुसरण लिया और प्रशासनिक अदूरदर्शिता दिखाई।

आजादी के तत्काल बाद यानी जवाहरलाल के ही दौर में जब श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने उन्हें नीतिगत टक्कर दी तो उन्हें रास्ते से हटवा दिया गया, जैसा कि आरोप लगे थे। हालांकि उनके द्वारा स्थापित जनसंघ की कब्र पर खड़ी भाजपा ने जो सियासी पैंतरे दिखाई, उसने आधुनिक भारत के निर्माता जवाहरलाल नेहरू और उनकी बेटी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के सभी राजनीतिक पापों को अवधारणात्मक तौर पर धो दिया।

इसे ठीक करना होगा' : सीजेआई सूर्यकांत ने फैसले सुनाने में देरी पर कहा, हाईकोर्ट चीफ जस्टिस कॉन्फ्रेंस में उठाएंगे मुद्दा

संजय कुमार बाटला

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सीजेआई) ने मंगलवार को कुछ हाईकोर्ट जजों द्वारा कई महीनों तक फैसले सुरक्षित रखने के बाद सुनाने में हो रही देरी पर अपनी चिंता दोहराई।
सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि वह 7-8 फरवरी को होने वाली हाईकोर्ट चीफ जस्टिस की आगामी कॉन्फ्रेंस में इस मुद्दे को उठाएंगे।
सीजेआई सूर्यकांत ने कहा, यह भी एजेंडा में से एक है जिसे हमने पहले ही उठाया है और इस पर चर्चा करना चाहेंगे।
सीजेआई सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस विपुल पंचोली की बेंच चार दोषियों द्वारा दायर रिट याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जो झारखंड हाईकोर्ट द्वारा तीन साल से अधिक समय तक उनकी अपीलों पर फैसला सुनाने में देरी से परेशान थे। इससे पहले कोर्ट के दखल के बाद हाईकोर्ट ने फैसले सुनाए। कोर्ट ने सभी हाईकोर्ट में इस मुद्दे को उठाने के लिए मामले का दायरा भी बढ़ाया और सभी हाईकोर्ट से लंबित फैसलों के बारे में रिपोर्ट मांगी। पिछले नवंबर में हुई सुनवाई में कोर्ट ने प्रस्ताव दिया कि हाईकोर्ट सुरक्षित रखे गए फैसलों की संख्या के बारे में जानकारी प्रकाशित करें।
मामले में एमिक्स क्यूरी एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड फौजिया शकील ने सभी हाईकोर्ट से संकलित रिपोर्ट रिकॉर्ड पर रखीं।
एक संबंधित मामले में पेश हुए सीनियर एडवोकेट मुकुल रोहतगी ने कोर्ट को बताया कि हाईकोर्ट के जज ने 4 दिसंबर को फैसला सिर्फ मौखिक रूप से सुनाया और अब तक फैसला वेबसाइट पर अपलोड नहीं किया गया।
उन्होंने कहा, ₹चीफ जस्टिस को इस पर ध्यान देना चाहिए; यह कोर्ट के लिए अपमानजनक है... कोई संदेश जाना चाहिए। हम क्लाइंट को क्या बताएं? इस तरह की मुकदमेबाजी संस्था की गरिमा में इजाफा नहीं करती है।
सीजेआई ने जवाब दिया कि वर्तमान में न्याय वितरण तंत्र दो तरह के जजों से लैस है।
दो तरह के जज होते हैं, एक तरह के - बहुत मेहनती जज, अगर आप उनकी कोर्ट में जाएंगे तो वे आपकी दलीलें सुनेंगे, जब तक वे उठेंगे, तब तक वे 10-12 मामलों को रिज़र्व कर लेंगे। आखिरकार अगर आप 7-10 मामले सुनते रहेंगे तो आपको पता चल जाएगा कि आपकी लिखने की क्षमता कितनी है....लेकिन कुछ जज ऐसे भी हैं, दुर्भाग्य से, वे फैसले नहीं सुनाते - जिससे भी दिक्कतें होती हैं। तो यह सिस्टम के सामने एक चुनौती है, हम किसी व्यक्ति के खिलाफ बात नहीं कर रहे हैं....लेकिन यह न्याय देने की प्रणाली की एक पहचानी जाने

वाली कमी है, इसे ठीक किया जाना चाहिए, इसे बहुत प्रभावी ढंग से ठीक किया जाना चाहिए। इसके लिए गंभीर सहयोग की ज़रूरत है, जो किया जाना चाहिए।₹
रोहतगी ने जब कहा कि बेंच को फैसले सुनाने के लिए समय सीमा तय करने के लिए कुछ निर्देश जारी करने चाहिए तो जस्टिस बागची ने कहा कि ऐसे निर्देश पहले के कई फैसलों में पहले से ही मौजूद हैं।
इस मौके पर सीजेआई ने एक और उभरते हुए ट्रेंड की ओर इशारा किया - हाईकोर्ट के जज सुनवाई पूरी करने के बाद फैसला रिज़र्व करने के बजाय, मामले को मुख्य कॉज़लिस्ट में डाल देते हैं और उसे टालते रहते हैं। यह सुप्रीम कोर्ट के उन निर्देशों से बचने का एक तरीका है, जिसमें रिज़र्व मामलों में फैसले सुनाने में देरी न करने के लिए कहा गया।
सीजेआई ने वकीलों से निम्नलिखित मामलों में समाधान पर विचार करने के लिए कहा:
(1) जहां मामला निर्देशों के लिए स्थगित किया गया, लेकिन असल में मुख्य दलीलों के लिए तैयार था और सुना जा सकता था और रिज़र्व किया जा सकता था।
(2) फैसले सुनाने के समय वकीलों के फायदे के लिए फैसले की अनिवार्य तैयारी की ज़रूरत, सिवाय इसके कि जब जज किसी 'खास इमरजेंसी' के कारण सिर्फ़ ऑपरेटिव ऑर्डर सुनाते हैं।
दूसरे पहलू पर, सीजेआई ने साफ किया कि 'खास इमरजेंसी' विध्वंस, जमानत आदि के मामले हो सकते हैं। हालांकि, यहां भी फैसले 2 महीने की अवधि के भीतर उपलब्ध होने चाहिए।
पिछले साल रतिलाल झावरभाई परमार और अन्य बनाम गुजरात राज्य और अन्य के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि ऑपरेटिव हिस्से को सुनाने के 2-5 दिनों के भीतर तर्कपूर्ण फैसला दिया जाना चाहिए।
रविंद्र प्रताप शाही बनाम उत्तर प्रदेश राज्य के मामले में यह माना गया कि अगर फैसला सुनाने की तारीख से तीन महीने के भीतर फैसला नहीं सुनाया जाता है तो रजिस्ट्रार को मामला हाईकोर्ट चीफ जस्टिस के सामने रखना होगा। राजन बनाम स्टेट ऑफ़ हरियाणा मामले में भी कोर्ट ने हाईकोर्ट्स से फ़ैसलों को अपलोड करने में देरी न करने का आग्रह किया।
इस मामले की सुनवाई अब 16 फरवरी को होगी।
CASE DETAILS : PILA PAHAN@ PEELA PAHAN VS. THE STATE OF JHARKHAND। W.P.(CRL.) NO. 000169 / 2025

जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं हैं परीक्षाएँ

डॉ. विजय गर्ग

आज के समय में परीक्षाएँ जीवन का केंद्रबिंदु बनती जा रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवन की सफलता और असफलता का पूरा निर्णय कुछ घंटों की परीक्षा और कुछ अंकों की सूची में सिमट गया हो। बच्चे, अभिभावक और समाज—सभी अनजाने में यह मान बैठे हैं कि परीक्षाएँ ही जीवन का अंतिम लक्ष्य हैं। जबकि सच्चाई यह है कि परीक्षाएँ जीवन का एक पड़ाव हैं, पूरा जीवन नहीं।

परीक्षाएँ साधन हैं, साध्य नहीं

परीक्षाओं का उद्देश्य व्यक्ति की समझ, ज्ञान और तैयारी का आकलन करना है। वे यह नहीं माप सकतीं कि कोई व्यक्ति कितना संवेदनशील, रचनात्मक, नैतिक या मानवीय है। इतिहास गवाह है कि जीवन में महान कार्य करने वाले अनेक लोगों ने परीक्षाओं में औसत या असफल प्रदर्शन किया, लेकिन उन्होंने अपने आत्मविश्वास, परिश्रम और उद्देश्य के बल पर असाधारण मुकाम हासिल किया।

अंकों से बड़ा है आत्मबोध

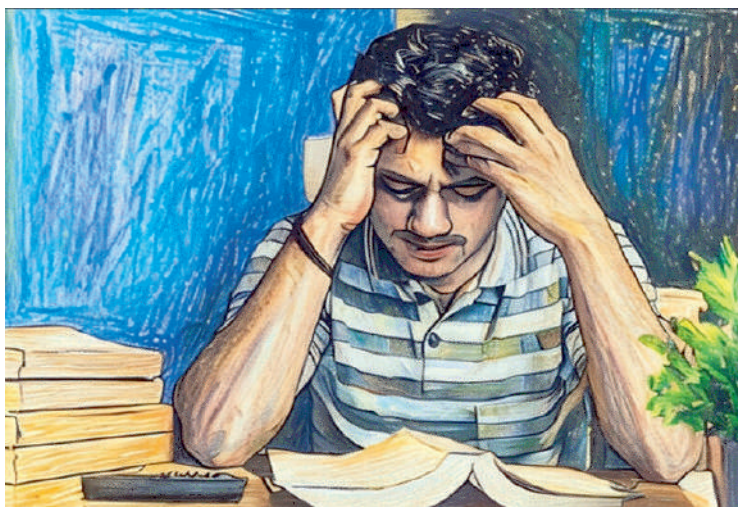

अंक केवल काग़ज़ पर दर्ज संख्याएँ हैं, जबकि जीवन बहुआयामी अनुभवों का नाम है। परीक्षाएँ यह नहीं बतातीं कि कोई व्यक्ति संकट में कैसा व्यवहार करता है, असफलता

से कैसे उबरता है या समाज के प्रति उसकी संवेदनशीलता कितनी गहरी है। वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को सोचने, समझने और सही निर्णय लेने में सक्षम बनाए।

दबाव और तनाव की बढ़ती कीमत

परीक्षाओं को अंतिम लक्ष्य मान लेने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम है—तनाव। अत्यधिक अपेक्षाएँ, तुलना और भय बच्चों को मानसिक रूप से कमजोर कर देती हैं। पढ़ाई का उद्देश्य ज्ञान अर्जन की जगह अंक अर्जन बन जाता है। परिणामस्वरूप रचनात्मकता, जिज्ञासा और सीखने का आनंद खो जाता है।

जीवन की परीक्षा हर दिन होती है

जीवन की असली परीक्षाएँ परीक्षा कक्ष के बाहर होती हैं—जब हमें ईमानदारी और लाभ में से एक चुनना होता है, जब असफलता के बाद फिर से खड़ा होना पड़ता है, जब दूसरों के प्रति करुणा दिखानी होती है। ये वे परीक्षाएँ हैं जिनका कोई प्रश्नपत्र नहीं होता, पर जिनका परिणाम जीवन की दिशा तय करता है।

अभिभावकोंऔरसमाजकीभूमिका

अभिभावकों और शिक्षकों का दायित्व है कि वे बच्चों को यह समझाएँ कि परीक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सर्वोपरि नहीं। बच्चों को उनकी रुचियों, क्षमताओं और व्यक्तित्व के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। तुलना के बजाय सहयोग और प्रतिस्पर्धा के बजाय आत्म-विकास को महत्व देना समय की माँग है।

सफलता की व्यापक परिभाषा

सफल वही नहीं है जिसके पास सबसे अधिक अंक या डिग्रियाँ हों, बल्कि वही सफल है जो संतुलित, संवेदनशील और समाज के लिए उपयोगी हो। जीवन का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि एक बेहतर इंसान बनना है।

निष्कर्ष

परीक्षाएँ जीवन की यात्रा में मील के पत्थर हो सकती हैं, मंज़िल नहीं। जब हम यह समझ लेते हैं, तब पढ़ाई बोझ नहीं, साधना बन जाती है। जीवन का अंतिम लक्ष्य ज्ञान, चरित्र और मानवता का विकास है—परीक्षाएँ नहीं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

यूजीसी मतलब आ बैल मुझे मार

विनय कुमार मिश्र

ऐसा माना जाता है कि भाजपा सवर्णों की पार्टी है। सवर्ण का हित इसी पार्टी को वोट देने में है। समय-समय पर ऐसा सिद्ध भी हुआ है क्योंकि कुछ पार्टियों तो इन्हें पानी पी पीकर गालियां देती थी लेकिन आजकल सवर्णों पर डोरे डाल रहीं हैं, इनके समर्थन में बोल रहीं हैं। एकाएक भाजपा को पता नहीं क्या हो गया है कि जहां सभी पार्टियां सवर्णों को अपने पक्ष में करने में लगी हुई है, वहीं भाजपा इन्हें क्रोधित होने का मौका देने के साथ-साथ इन्हें बगावत के लिए मजबूर कर रही है। आखिर क्या सोच रही है कि वह ऐसा करके अन्य लोगों का वोट जिन्हें खुश कर रही है उनका वोट पा पाएगी।

देश भर में हो रहे हो हल्ले मंडल आयोग की याद दिला रहे हैं। मंडल आयोग लागू होने के बाद अन्य पार्टियों का भी देख लीजिए. जो भी इसके जिम्मेदार थे, जिन जिनका इसमें हाथ था, वह आज सत्ता से कोसों दूर है लेकिन अभी वही गलती भाजपा करके सत्ता से कोसों दूर होना चहती है।

भाजपा की ग्रह दशा की अगर बात की जाए तो हमें लगता है कि कुछ अच्छा नहीं चल रहा है। एक यूजीसी का जबरदस्त विरोध तो दूसरी तरफ एसआईआर से परेशान लोग पानी पी पीकर अनाप सनाप बके जा रहे हैं। आज तक सवर्ण भाजपा को इसलिए चुनते और वोट देते आये हैं कि वह उनका हित और रक्षा करेंगी लेकिन एकाएक यह भाजपा को क्या हो गया कि ऐसे बिल की बात सोच ली। कोर्ट का अगर आदेश था तो वह कमेंटी में सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व देती। झूठा आरोप लगाने वालों पर सख्त कार्रवाई का प्रवधान करतीं तो बात कुछ अलग होंती लेकिन जिस रूप में यह कानून लाया जा रहा था, वह सच में काला कानून था। इससे उन बच्चों का भविष्य चौपट हो जाता जो भविष्य बनाने जातें हैं। सवर्णों के साथ घात किया जा रहा था। इस कानून के आ जाने से सवर्ण असहाय महसूस करता तथा कोई भी झूठे मुकदमों में फसा कर इनका भविष्य चौपट कर देता। झूठा मुकदमा करने वाला जिंदगी के मज़े करता और निर्दोष जेल की सलाखों के पीछे काल कोठरी में सवर्ण होने का दंश झेलता। इतने अंधे और बहरे है कि कई ऐसे बनें कानूनों की खामियां नहीं दिखीं।

जो जेल की हवा, झूठा मुकदमा झेल जाता, वह अंत में क्या करता, क्या बनता, समाज के प्रति क्या सोचता। आखिर यह कानून लाकर सरकार क्या संदेश देना चाहती थीं कि अब शिक्षण संस्थानों में भी भेदभाव, जातिवाद, अपराध, वैमनस्यता आदि भी पढ़ाए जाएंगे। शिक्षा का मतलब मानवीय होता है. शिक्षा इन सबसे ऊपर होती है। जब आप शिक्षण संस्थानों में इसकी नींव रख देंगे, तब तो पूरी शिक्षा व्यवस्था ही चौपट हो जाएंगी। फूट डालो राज करो की नीति छोड़िए और देश की सोचिए। देश अभी बहुत से संकटों से गुजर रहा है। अगर समानता नहीं होंगी तो हमारा देश धीरे-धीरे कमजोर होता जायेगा। जो कानून बने, उसमें समानता हों, भेदभाव की कोई जगह न हो, जातिगत मुद्दे की बात न हो।

घुसपैठिया मंत्र जपता भस्मासुर : (आलेख : बादल सरोज)

भारत में आम तौर से तीन दिन कुछ विशेष माने जाते हैं। ये सभी भारतीयों के होते हैं। इन तीन दिनों में, जो अमूमन नहीं बोलते, वे भी मेल-मिलाप, शांति, एकजुटता, देश और उसके संविधान की ताकत वगैरा-वगैरा की बातें बोलते हैं। गाँव, कस्बे, शहर, बसाहटें इसी तरह के गानों–गीतों से गूँजती रहती हैं। देश प्रेम उफान पर होता है। ये दिन – 26 जनवरी गणतंत्र दिवस, 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस और 2 अक्टूबर गांधी जी का जन्म दिवस – पवित्रता की इस हद तक पावन माने जाते हैं कि इस दिन शराब और मांसाहार की दुकाने भी बंद रखे जाने का चलन है।

मगर नफरती अफीम के थोक व्यापारियों ने सारी शर्म और हया छोड़कर, क़ानून-विधान को तोड़कर इन दिनों को भी – इन दिनों को खासतौर से – जहरखुरानी के दिनों में बदल कर रख दिया है। इस बार की 26 जनवरी से कुनबे ने जो तूमार खड़ा किया है, वह अब तक जारी है। यह जिस तरह उत्तरोत्तर तेज से तेजतर किया जा रहा है, उससे लगता है कि आने वाले दिनों में इसे एक अंधड़ में बदले जाने की पूरी तैयारी है : लगता है संघ की 100 वी सालगिरह इसी तरह मनाई जाने वाली है।

असम के मुख्यमंत्री – जिन्हें स्वयं अमित शाह ने देश के सबसे भ्रष्ट और बेईमान मुख्यमंत्री का तमगा दिया था, जिनके घोटालों और भ्रष्टाचार का पोथन्ना वे आमसभाओं में लहरा-लहरा कर दिखाया करते थे, वही -- हिमंता विषशर्मा -- इन दिनों इनके पोस्टर बॉय और आग लगाऊ प्रवक्ता बने हुए हैं। ठीक गणतंत्र दिवस के अगले दिन तिनसुकिया के डिगबोई में भाषण देते हुए उन्होंने हिन्दू असमियों का आव्हान किया कि वे मुसलमानों को हर तरह से परेशान करें और उनका जीना मुहाल कर दें। इसके तरीके सुझाते हुए उन्होंने कहा कि अगर रिक्शे वाला मियां 5 रूपये माँगता है, तो उसे सिर्फ 4 रूपये दो।

उन्होंने यह भी कहा कि 'लोग मुझे जितना चाहे गाली दे, मेरा काम मियां लोगों की ज़िंदगी मुश्किल बनाना है।' वे यहीं तक नहीं रुके और बोले कि 'हिमंता बिस्वा शर्मा और भाजपा सीधे तौर पर मियां समुदाय के खिलाफ है।' उन्होंने लोगों से भी मियां समुदाय को 'परेशान करने' की अपील की। उनका कहना था कि 'जब तक उन्हें परेशानी नहीं होगी, वे असम नहीं छोड़ेंगे।' इसी भाषण में उन्होंने एलान किया कि असम में विशेष गहन संशोधन – एसआईआर - प्रक्रिया के दौरान 4 से 5 लाख 'मियां' वोटरों के नाम मतदाता सूची से हटा दिए जाएंगे।

ये बयान सिर्फ आपत्तिजनक ही नहीं हैं, बल्कि आपराधिक और दण्डनीय भी हैं। भारतीय न्याय संहिता, 2023 की कम-से-कम पांच धाराएं इन पर लागू होती हैं : इनमें धारा 196 (समूहों के बीच वैमनस्य फैलाना और सामाजिक सौहार्द को नुकसान पहुंचाने वाले कृत्य), 197 (राष्ट्रीय एकता के प्रतिकूल बयान), 299 (धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से किए गए दुर्भावनापूर्ण कृत्य), 302 (धार्मिक भावनाओं को आहत करने के इरादे से बोले गए शब्द) और 353 (सार्वजनिक उपद्रव को बढ़ावा देने वाले बयान) शामिल है।

इन सबके तहत गिरफ्तारी के साथ जनप्रतिनिधित्व क़ानून के हिसाब से इस व्यक्ति को मुख्यमंत्री पद से हटाया जाना चाहिए, विधायकी छीनी जानी चाहिए और आगामी 6 वर्षों के लिए चुनाव लड़ने और मतदान करने के अधिकार से भी वंचित कर दिया जाना चाहिए।

मगर बजाय ऐसा कुछ करने के देश के गृहमंत्री ने स्वयं असम पहुंचकर इस जहरीले प्रचार में अपनी आवाज भी मिला दी। बिहार और झारखण्ड की तरह असम में भी घुसपैठिया राग से अपने चुनावी अभियान की शुरुआत की। 30 जनवरी को एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि, 'आज, असम की दूसरी राजधानी से मैं वादा करता हूं कि अगर मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा शर्मा के नेतृत्व में भाजपा सरकार तीसरी बार सत्ता में आती है, तो हर अवैध प्रवासी को चिह्नित कर असम से बाहर निकाला जाएगा।' उन्होंने दावा किया कि 'घुसपैठियों की संख्या शून्य से बढ़कर 64 लाख हो गयी -- कुछ अखबारों में छपी खबरों में इसे 74 लाख बताया गया है।

उन्होंने दावा किया कि असम के सात जिलो -- धुबरी, बारपेटा, दरांग, मारिगांव, बोंगाईगांव, नौगांव और गोलपारा -- में घुसपैठिए बहुसंख्यक बन गए। इन जिलों में घुसपैठियों की आबादी जरा भी नहीं थी। कांग्रेस के 20 साल के अंदर यहां 64 लाख घुसपैठिये की आबादी हो गई। यह बात वे अमित शाह कह रहे थे, जो खुद पिछले साढ़े ग्यारह वर्षों से इस देश के गृह मंत्री हैं और जिसे 'एक बार फिर जिता कर' असम को घुसपैठिया मुक्त बनाने' का वादा कर रहे हैं, वह हिमंता विषशर्मा ही असम का मुख्यमंत्री है। मगर ऐसा बोलते हुए वे सिर्फ उकसावेपूर्ण गलत बयानी ही नहीं कर रहे थे, बल्कि सरासर झूठ भी बोल रहे थे।

जिन कथित 74 लाख घुसपैठियों का दावा गृह मंत्री ने किया, वह कितना झूठा है, यह असम में हुई एनआरसी – नागरिकता की जांच के बाद हुए रजिस्ट्रेशन – ने उजागर कर दिया था। सघन से भी सघनतम हुई इस नागरिकता पड़ताल के बाद 31 अगस्त 2019 को असम एनआरसी की अंतिम सूची प्रकाशित हुई। इसमें कुल मिलाकर 19 लाख 6 हजार लोग ऐसे निकले थे, जो अपनी नागरिकता के प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाए थे। ध्यान रहे, नागरिकता प्रमाण प्रस्तुत न कर पाने का मतलब अवैध नागरिक या विदेशी होना नहीं है।

बहरहाल इनमें भी, जिन्हें हिमंता मियाँ भाई और अमित शाह घुसपैठिया कहते हैं, उनकी संख्या ज्यादा नहीं निकली। खुद मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने 2024 में दिए गए एक बयान में माना था कि नागरिकता सूची से बाहर किए गए 19 लाख लोगों में लगभग 12 लाख गैर-मुस्लिम (जिनमें अधिकांश हिंदू हैं) शामिल हो सकते हैं। नजरिया अनुमान के अनुसार इनमे कोई 5 लाख बंगाली हिन्दू, करीब 2 लाख कोच–राजबोंगशी सहित असमिया हिंदू और डेढ़ लाख से अधिक गोरखा शामिल है। बाकी आदिवासी समुदाय के थे। अन्य रिपोर्ट्स और छनकर आये आंकड़ों में भी नागरिकता सूची से बाहर रह गए असमियाओं में हिंदू और अन्य समुदायों का आंकड़ा 7 लाख से 12 लाख के बीच बताया गया है।

उभरते जनरोष और पांसा सही जगह न पड़ते देख मोदी सरकार ने सीएए – नागरिकता संशोधन अधिनियम का झुनझुना बजाया और कहा कि जो ₹वास्तविक₹ भारतीय नागरिक, विशेषकर हिंदू, सूची से बाहर रह गए हैं, उन्हें इस कानून के माध्यम से सुरक्षा प्रदान की जाएगी। मगर यह तो साफ हो ही गया कि विदेशी घुसपैठ का जो हल्ला मचाया गया था वह बेबुनियाद था; बदनीयत से भरा था।

इतने जाहिर उजागर तथ्यों से भरे सत्य के बाद भी इस कदर झूठ की बाढ़ क्यों लाई जा रही है? घुसपैठिया जाप क्यों किया जा रहा है? इसलिए कि इस कुनबे और उसके पाले-पोसे कारपोरेट मीडिया ने घुसपैठिया को मुसलमान का समानार्थी शब्द बना दिया है। सौ साल पहले जिस मुसलमान विरोधी घृणा को उकसाने के जरिये मनु के राज की बहाली के लिए समग्र हिन्दू एकता बनाने की परियोजना शुरू की गयी थी, वह मुस्लिम आबादी के इलाकों को पाकिस्तान का संबोधन देते हुए घुसपैठिया को संज्ञा बनाने तक आ पहुंची है।

बंगाल में इसी भाजपा के नेता शुभेंदु अधिकारी पुराने हिन्दू महासभाइयों की तरह 'कोई मुसलमान मुझे वोट न दे' से होते हुए अब अपने पास मदद के लिए आने वाले मुस्लिम नागरिकों को 'पहले धर्मपरिवर्तन करके हिन्दू बनो, उसके बाद मेरे पास आओ।' जैसी हिदायतें सार्वजनिक रूप से दे रहे हैं। भस्मासुर अब घुसपैठिया मन्त्र जपता हुआ तेजी से समाज में कटुता पैदा करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। कभी धर्मनिरपेक्षता उसके निशाने पर हुआ करती थी – अब गणतन्त्र, संविधान और देश की एकता को विखंडित करना उसका इरादा है।

जहरीली मुहिम देश भर में अपना असर दिखा रही है। उत्तराखंड के कोटद्वार में एक मुस्लिम दुकानदार को हिंदुत्व समर्थकों द्वारा दुकान का नाम बदलने के लिए परेशान किया जा रहा था, जब दीपक कुमार नाम के एक युवा ने उनका विरोध किया, तो उत्पाती हुड़दंगिये ही नहीं, भाजपा की सरकार भी उसके खिलाफ सक्रिय हो गयी। संघ से जुड़े संगठनों के लोग दीपक के जिम पर प्रदर्शन करने पहुंच गए। पुलिस ने बजाय संरक्षण देने के दीपक के ख़िलाफ़ ही एफआईआर दर्ज कर ली।

हिमाचल प्रदेश के नूरपुर के एक बाज़ार में इसी कुनबे से जुड़े एक उन्मादी द्वारा दो कश्मीरी शॉल विक्रेताओं को परेशान करने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। इस मामले में भी, आखिरी खबर मिलने तक, पुलिस ने इस संबंध में एफआईआर दर्ज करने से इंकार कर दिया था।

छत्तीसगढ़ के गरियाबंद ज़िले के दुतकैया गांव में इसी तरह के उकसावे पर सैकड़ों लोगों की भीड़ ने भी लाठी, ईंट, पत्थर और केरोसिन की बोतलें लेकर गाँव के 10 मुस्लिम परिवारों पर हमला कर दिया। वाहनों और घरों में आगजनी कर दी। ध्यान देने की बात यह है कि इस घटना में कम से कम छह पुलिस कर्मी घायल हुए। पुलिस ने दंगे के सिलसिले में तो दो एफआईआर दर्ज कर भी लीं, लेकिन छग सरकार की हिदायत के चलते पुलिस बल पर हमला करने वालों के ख़िलाफ़ फिलहाल कोई केस दर्ज नहीं किया है।

ऐसी घटनाएं और भी हैं – यहाँ सिर्फ तीन को दर्ज किया है और इन तीनों में समानता यह है कि तीनों ही मामलों में सरकार, प्रशासन और पुलिस बलवा करने वाले अपराधियों के साथ, उनके संरक्षक और मददगार की भूमिका में था।

बात सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। सरकार हर अवसर, हर मौके, हर प्रतीक को अपने एजेंडे के अनुरूप ढालने और उसे साम्प्रदायिक विभाजन का जरिया बनाने में लगी है। इस बार की गणतंत्र दिवस की परेड में देश के राष्ट्र गान वन्दे मातरम का कुछ इसी तरीके और इरादे के साथ काम पर लगाया गया। इस बार बंगाल चुनावों के हिसाब से खासतौर से इसे न सिर्फ इस्तेमाल किया गया बल्कि सर्वोत्कृष्ट झांकी और इसके री-मिक्स को सबसे बेहतर गाने के रूप में भी सम्मानित किया गया।

अब मुहिम सिर्फ मैदानी नहीं रही है, उसे वैचारिक रूप से भी ठीये पर पहुंचाया जा रहा है। गांधी शहादत दिवस पर संघ के विचारक कहे जाने वाले राम माधव का इंडियन एक्सप्रेस में छपा लेख इसका एक उदाहरण है। इस लेख में वे गांधी की महानता के लिए कुछ शब्द लिखने के साथ उनकी कथित दुविधाओं का ब्यौरा देते हुए उनके हत्यारे नाथूराम गोडसे के काम को भी एक तरह से सही बताने तक जा पहुचते हैं।

वे लिखते हैं कि "30 जनवरी 1948 को, नाथूराम गोडसे ने एम.के. गांधी की हत्या उन अपराधों के लिए की, जिनके लिए वह गांधी को जिम्मेदार मानता था। उसने गांधी पर ₹देश के विभाजन पर सहमति देकर घोर विश्वासघात₹ करने का आरोप लगाया। उसका तर्क था कि यदि गांधी ने ईमानदारी से पाकिस्तान का विरोध किया होता, तो न तो एम.ए. जिन्ना और न ही अंग्रेज इसे बना पाते।" इसके बाद वे "यह तो निर्विवाद है कि गोडसे ने गांधी की हत्या करके गलत किया।" कहने के बाद वे सवाल उठाते हैं कि ".....लेकिन क्या गांधी की हत्या करने के पीछे उसके कारण भी गलत थे?" राम माधव कोई छोटे-मोटे हाशिये के व्यक्ति – फ्रिंज एलिमेंट - नहीं हैं। इसलिए उनका यह गोडसे जस्टिफिकेशन सामान्य कहकर नहीं टाला जा सकता। यह भोपाल की पूर्व सांसद साध्वी प्रज्ञा के कहे का सुधरा हुआ रूप ही कहा जाना चाहिए। प्रज्ञा के बयान पर उन्हें 'दिल से कभी माफ़ नहीं करूँगा' कहने वाले मोदी इस बार चुप है। इसी बात पर नहीं, हर बात पर चुप हैं।

न तो साम्प्रदायिक उन्माद का यह ज्वार अपने आप है, ना हीं प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी ही अनायास है। कॉर्पोरेट हित की धुरी पर चल रही दिवालिया विदेश नीति ने चंद देसी-विदेशी धनपिशाचों के मुनाफे की खातिर देश को भंवर में फंसा दिया है। इतना असहाय और निरुपाय, इतना लाचार यह देश कभी नहीं रहा।

इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत के साथ ट्रेड डील -- व्यापार करार -- का एलान किया है। अमरीकी कृषि और डेरी उत्पादों के लिए बाजार खुला छोड़ देने की इस डील का पहले से ही लड़खड़ा रही खेती-किसानी पर जो विनाशकारी प्रभाव पड़ने वाला है, उसकी तुलना अंग्रेजी राज में की गयी ग्रामीण अर्थव्यस्था की तबाही से ही की जा सकती है। रही-सही कसर अमरीका से आने वाले उत्पादों पर शून्य टैरिफ़ और महंगे तेल से पूरी हो जायेगी। इसके बाद जो बचेगा वह वही हिन्दू राष्ट्र होगा, जिसे बनाने का सपना संघ सौ साल से साधे हुए है। इसीलिए बात बात पर चिल्ल-पौ करने वाला संघ मुसक्का मारे बैठा है।

डील जितनी खराब है, उतना ही खराब इसके एलान का तरीका और ट्रम्प द्वारा इस्तेमाल की गयी भाषा है। कोई भी सार्वभौम राष्ट्र इस पर सख़्त आपत्ति करता। छोटे से छोटा देश भी अपनी गरिमा की हिफाजत करता। मगर 140 करोड़ के प्रतिनिधि बने बैठे आत्ममुग्ध की घिग्गी बंधी हुई है। विक्टोरिया और एलिजाबेथों के आगे नतमस्तक, शरणागत, आज अमरीका के सबसे दुष्ट नेतृत्व के पांवों में लहालोट हुये पड़े हैं। इन सबसे ध्यान बंटाना है, इसलिए उन्माद भड़काना है।

इतिहास बताता है कि हुकमरानों ने जब-जब धोखे दिए हैं, हथियार डाले हैं, तब-तब अवाम ने मोर्चे संभाले हैं। इस बार भी मेहनतकशो की अगुआई में देश का अवाम इन दोनों साजिशों के विरुद्ध अड़ने और लड़ने को तैयार है। मजदूर-किसानों के साझे मोर्चो का 12 फ़रवरी की हड़ताल इसी तरह का एक मोर्चा है।

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं। संपर्क : 94250-06716)

डिजिटल प्रदूषण-बचपन पर मंडराता संकट- सोशल मीडिया इस्तेमाल पर लगाम की तैयारी- गाजियाबाद सुसाइड बड़ा ट्रिगर पॉइंट-एक समग्र वैश्विक विश्लेषण

डिजिटल युग में बचपन, समाज संस्कृति पर मंडराता संकट- सोशल मीडिया ऑनलाइन गेमिंग और सामाजिक जिम्मेदारी का वैश्विक विमर्श

संभवत :सोशल मीडिया का बच्चों के लिए बैन- गाजियाबाद में सोशल मीडिया लत व ऑनलाइन गेमिंग के कारण तीन सगी बहनों की आत्महत्या को चर्चा का ट्रिगर पॉइंट माना जा रहा -**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर मानव सभ्यता ने हजारों वर्षों में जिन मूल्यों, सामाजिक रिश्तों और विश्वास की संरचनाओं को गढ़ा है, वे आज डिजिटल तकनीक की अभूतपूर्व गति से चुनौती का सामना कर रहे हैं।सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेमिंग ने संवाद, मनोरंजन और सूचना के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। यह परिवर्तन अपने आप में न तो पूरी तरह नकारात्मक है और न ही पूर्णतः सकारात्मक, लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब समाज, विशेषकर बच्चे इस परिवर्तन के मनोवैज्ञानिक, नैतिक और सामाजिक प्रभावों के लिए तैयार नहीं होते। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भारत जैसे देश में, जहां आध्यात्मिक परंपरा, पारिवारिक मूल्य और सामाजिक सहभागिता जीवन की आत्मा रहे हैं, वहां डिजिटल प्लेटफॉर्म का अनियंत्रित प्रभाव एक गंभीर चेतावनी के रूप में उभर रहा है।सामाजिक सद्भाव, विश्वास और सोशल मीडिया की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन करना बहुत जरूरी है, भारतीय समाज की विशेषता उसका सामाजिक ताना-बाना है, जो केवल कानून या संस्थाओं से नहींबल्कि आपसी विश्वास, परंपराओं और सामूहिक चेतना से बना है। सोशल मीडिया ने इस ताने-बाने को एक ओर जोड़ने का माध्यम दिया है, वहीं दूसरी ओर गलत सूचना, घृणा, तुलना और आभासी प्रतिस्पर्धा के जरिए इसे कमजोर भी किया है ।नवीनतम आर्थिक सर्वे द्वारा सोशल मीडिया के सामाजिक प्रभावों पर चिंता जताना इस बात का संकेत है कि अब यह विषय केवल नैतिक बहस का नहीं, बल्कि नीति और भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा से जुड़ा प्रश्न बन चुका है ।हालांकि, यह भी स्पष्ट है कि हर समाधान केवल सरकारी नीतियों से नहीं आ सकता। समाज, शैक्षणिक संस्थान, सिविल सोसायटी और सबसे बढ़कर माता-पिता की भूमिका यहां निर्णायक बन जाती है। सरकार नियंत्रण और दिशा दे सकती है, लेकिन बच्चों के दैनिक जीवन में डिजिटल संतुलन लाने की जिम्मेदारी सामूहिक प्रयास से ही निभाई जा सकती है।

साथियों बात अगर हम गाजियाबाद घटना के बाद भारत में सोशल मीडिया का बच्चों के लिए बैन पर विचार करने की करें तो, मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार आर्थिक सर्वे में बच्चों पर डिजिटल प्रदूषण पर चिंता जताए जाने के बाद से यह मुद्दा विचारणीय था लेकिन गाजियाबाद में सोशल मीडिया लत व ऑनलाइन गेमिंग के कारण तीन सगी बहनों की आत्महत्या को देश के नीति निर्माताओं की चर्चा का ट्रिगर पॉइंट माना जा रहा है ।आर्थिक सर्वेक्षण-26 में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के बढ़ते प्रभाव और युवाओं की मानसिक सेहत पर उसके असर को लेकर चिंता जताते हुए बच्चों के लिए सुरक्षित डिजिटल इकोसिस्टम बनाने की दिशा में ठोस नीति बनाने का सुझाव दिया गया था। केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) सचिव ने कहा है कि सोशल मीडिया के लिए न्यूनतम आयु सीमा तय करने का मुद्दा सरकार की समीक्षा के दायरे में है। बच्चों और किशोरों पर सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव को देखते हुए सरकार विभिन्न हितधारकों से परामर्श कर रही है और उचित समय पर इस बारे में निर्णय किया जाएगा। साथियों बात अगर हम ऑनलाइन गेमिंग और सोशल मीडिया:मनोरंजन से मानसिक दबाव तक की यात्रा को समझने की करें तो, आज का बच्चा एक ऐसे डिजिटल परिवेश में बड़ा हो रहा है जहां स्क्रीन उसकी पहली खिड़की बन चुकी है ।ऑनलाइन गेमिंग और सोशल मीडिया अब केवल समय बिताने का साधन नहीं रहे, बल्कि वे बच्चों की सोच, भावनाओं और आत्म-छवि को आकार देने लगे हैं। टास्क- आधारित गेम्स बच्चों को लगातार नए लक्ष्य देते हैं, लेवल पूरा करो, चुनौती स्वीकार करो, आगे बढ़ो और यह प्रक्रिया धीरे-धीरे दबाव में बदल जाती है। कई बार इन चुनौतियों की प्रकृति भावनात्मक रूप से असुरक्षित होती है, जहां हार का डर, असफलता की शर्म और आभासी दुनिया की स्वीकृति वास्तविक जीवन से अधिक महत्वपूर्ण लगने लगती है ।विशेषज्ञों का मानना है कि जब बच्चा आभासी दुनिया को वास्तविक जीवन के समकक्ष या उससे अधिक वास्तविक समझने लगता है, तब मानसिक जोखिम कई गुना बढ़ जाता है। आत्म-सम्मान, धैर्य और भावनात्मक संतुलन पर इसका गहरा असर पड़ता है।

साथियों बात अगर हम ऑस्ट्रेलिया का उदाहरण:वैश्विक बहस की शुरुआत को समझने की करें तो, इसी खतरे को गंभीरता से समझते हुए ऑस्ट्रेलिया ने दो माह पहले एक ऐतिहासिक कदम उठाया ।16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए टिकटॉक, एक्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, स्नैपचैट और थ्रेड्स जैसे प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाया गया। न केवल नए खाते बनाने पर रोक लगी, बल्कि मौजूदा प्रोफाइल भी निष्क्रिय कर दी गईं। यह कदम अपनी तरह का पहला था और उसने पूरी दुनिया में एक नई बहस को जन्म दिया, क्या बच्चों की सुरक्षा के लिए डिजिटल स्वतंत्रता को सीमित करना जरूरी हो गया है ?यह निर्णय केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अन्य देश इस मॉडल को बारीकी से देख रहे हैं और अपने-अपने सामाजिक संदर्भ में इसके निहितार्थों का आकलन कर रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारत में बढ़ती डिजिटल लत और सुरक्षा चिंताओं को समझने की करें तो, भारत में भी हाल के वर्षों में बच्चों में डिजिटल एडिक्शन के मामले तेजी से बढ़े हैं ।गाजियाबाद और भोपाल जैसी घटनाओं ने समाज को झकझोर दिया है, जहां ऑनलाइन गेमिंग और सोशल मीडिया की लत ने मासूम जिंदगियों पर गंभीर असर डाला। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह संकट आने वाली पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करेगा। हालांकि केंद्रीय आईटी मंत्रालय की ओर से अभी कोई आधिकारिक आदेश नहीं आया है, लेकिन 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया उपयोग पर प्रतिबंध लगाने या सख्त नियम बनाने पर गंभीर मंथन चल रहा है। यह बहस केवल तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भविष्य, समाज की स्थिरता और राष्ट्रीय मानव पूंजी से जुड़ा प्रश्न है।

साथियों बात अगर हम क्या ऑनलाइन गेमिंग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है ? इसको समझने की करें तो, लगातार स्क्रीन टाइम बच्चों में अकेलापन, चिड़चिड़ापन तनाव और अवसाद को बढ़ा सकता है। कई अध्ययन बताते हैं कि डिजिटल एडिक्शन बच्चों के व्यवहार और भावनात्मक संतुलन को कमजोर करता है। जब गेमिंग टास्क बच्चों पर लगातार दबाव डालते हैं, जीतने की मजबूरी, हार का डर और सामाजिक तुलना, तो वे मानसिक रूप से टूट सकते हैं। यह स्थिति धीरे-धीरे आत्म-विश्वास की कमी और सामाजिक अलगाव में बदल जाती है।

साथियों बात अगर हम सोशल मीडिया कंपनियों की जिम्मेदारी: मुनाफा बनाम नैतिकता को समझने की करें तो, सोशल मीडिया और गेमिंग कंपनियां एल्गोरिदम के जरिए उपयोगकर्ताओं को अधिक समय तक प्लेटफॉर्म पर बनाए रखने का प्रयास करती हैं। इससे उनका आर्थिक लाभ बढ़ता है, लेकिन बच्चों के संदर्भ में यह रणनीति खतरनाक साबित हो सकती है। आयु सत्यापन, कंटेंट फिल्टर और बच्चों के लिए अलग सुरक्षा ढांचे की कमी इस समस्या को और गहरा करती है। विशेषज्ञों का मत है कि कंपनियों को केवल मुनाफे के बजाय सामाजिक जिम्मेदारी को भी अपने व्यापार मॉडल का हिस्सा बनाना चाहिए।

साथियों बात अगर हम माता- पिता की भूमिका: पहली और सबसे मजबूत सुरक्षा दीवार तथा बैन या नियमन: इसको समझने की करें तो समाधान की जटिलता, पूर्ण प्रतिबंध एक सरल उत्तर प्रतीत हो सकता है, लेकिन व्यवहार में यह जटिल है। तकनीक को पूरी तरह रोकना न तो संभव है और न ही व्यावहारिक। हालांकि, सख्त नियम, समय सीमा, आयु- आधारित एक्सेस और कंटेंट मॉडरेशन जैसे उपाय प्रभावी हो सकते हैं। कई देशों ने बच्चों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विशेष नियम बनाए हैं। भारत में भी अब इस दिशा में मांग तेज हो रही है कि बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए। माता-पिता बच्चों को इस खतरे से बचाने में केंद्रीय भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों की डिजिटल गतिविधियों पर नजर रखना, स्क्रीन टाइम सीमित करना और सबसे महत्वपूर्ण खुलकर संवाद करना, आज की आवश्यकता है ।भावनात्मक समर्थन और भरोसे का वातावरण बच्चों को आभासी दबाव से बाहर निकाल सकता है। डिजिटल उपकरणों को पूरी तरह बच्चों के भरोसे छोड़ देना जोखिम भरा हो सकता है। स्कूल और समाज: सामूहिक समाधान की दिशा में, स्कूलों में डिजिटल एडिक्शन पर काउंसलिंग और जागरूकता कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। बच्चों को खेल, कला, संगीत और सामाजिक गतिविधियों से जोड़ना डिजिटल संतुलन बनाने में मदद कर सकता है। समाज को भी यह समझना होगा कि यह केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि संतुलन ही समाधान है, डिजिटल युग को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन उसे विवेक और संवेदन शीलता के साथ अपनाया जा सकता है ।बच्चों की सुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक विकास को प्राथमिकता देना सरकार, उद्योग परिवार और समाज, सभी की साझा जिम्मेदारी है। सवाल यह नहीं है कि तकनीक रहे या न रहे, बल्कि यह है कि तकनीक किसके नियंत्रण में और किस उद्देश्य से रहे। यदि आज संतुलित और साहसी निर्णय नहीं लिए गए, तो कल इसकी कीमत आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ सकती है।

पीएम श्री सरकारी हाई स्कूल, संघेड़ा में अभिभावक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

संगरूर,7 फरवरी (जगसीर सिंह)-

पीएम श्री सरकारी हाई स्कूल, संघेड़ा में बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, परीक्षा संबंधी तनाव, चिंता, अवसाद, स्क्रीन टाइम प्रबंधन, ध्यान एवं एकाग्रता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अभिभावकों को जागरूक करने के उद्देश्य से एक अभिभावक जागरूकता एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया ।यह कार्यक्रम हेड मिस्ट्रेस श्रीमती वरिंदर के नेतृत्व में आयोजित हुआ, जिसमें अभिभावकों, शिक्षकों एवं आमंत्रित अतिथियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. तपन कुमार साहू, प्राचार्य, एस.डी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बरनाला रहे ।डॉ. तपन कुमार साहू ने अपने संबोधन में आज की जनरेशन-Z के विद्यार्थियों में बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों पर प्रकाश डाला तथा परीक्षा काल में अभिभावकों की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि शैक्षणिक सफलता कभी भी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। उन्होंने तनाव प्रबंधन, ध्यान, स्वस्थ दिनचर्या, स्क्रीन टाइम कम करने तथा एकाग्रता बढ़ाने से संबंधित व्यावहारिक सुझाव भी साझा किए। इस अवसर पर अभिभावकों के लिए तैयार किया गया मानसिक स्वास्थ्य संबंधी हैंडआउट भी वितरित किया गया।

कार्यक्रम में चेयरमैन श्री सुखदीप सिंह सोनी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। इसके अतिरिक्त श्री जसविंदर सिंह (आम आदमी पार्टी) ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की और विद्यालय द्वारा की गई इस समयोचित पहल की सराहना की ।विद्यालय स्टाफ की ओर से सुखदीप सिंह, सरबजीत कुमार, सैलर कुमार, मैडम सोनिका बंसल, मैडम करमजीत कौर, मनप्रीत सिंह एवं सतनाम सिंह ने कार्यक्रम की सफलता हेतु सराहनीय योगदान दिया।

इस अवसर पर गाइडेंस काउंसलर करमप्रताप सिंह (केपी) ने अभिभावकों से संवाद करते हुए बच्चों में तनाव, चिंता एवं भावनात्मक समस्याओं के प्रारंभिक लक्षणों की जानकारी दी तथा समय पर काउंसलिंग के महत्व पर विशेष जोर दिया।

कार्यक्रम का समापन इस संदेश के साथ हुआ कि "बच्चे की जिंदगी और खुशी अंकों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है," और अभिभावक-विद्यालय की साझेदारी से ही सुखी, संतुलित एवं आत्मविश्वासी बच्चों का निर्माण संभव है।

प्राणों का मधुमास

धीरे-धीरे समझ रही हूँ अब मैं हर एक श्वास,
बसा है जिनमें ₹आनंद₹ प्राणों का मधुमास ।

जन्म जन्मांतर की यात्रा अभी तक रही अधूरी,
गति दे रहा है परमात्मा ढूँढ रही हूँ मैं कस्तूरी,
शनैः शनैः स्वीकार रही हूँ मैं नए-नए परिवर्तन,
श्वासें ही श्रृंगारित सुरभित कर रही मेरा जीवन,
आ रहा है इस मार्ग पर चलना अब मुझे रास,
धीरे-धीरे समझ रही हूँ अब मैं हर एक श्वास ।

छुपा है इनमें ही हर एक समस्या का समाधान,
अब तक थी भ्रमित मैं इस चमक से अंजान,
बाहर देख रही जो आनंद वो तो था अपूर्ण,
बसा भीतर अनंत सागर बना सके जो संपूर्ण,
समान रूप दिया सबको प्रभु ने खजाना खास,
धीरे-धीरे समझ रही हूँ अब मैं हर एक श्वास ।

मौन का जादू और विचारों पर लगा हुआ विराम,
जैसे प्रभु की गोदी में सिर रख कर रही मैं आराम,
नहीं सताता अब भय ना रहा कोई भी अवसाद,
अद्भुत है परमेश्वर का दिया हुआ ये अमृत प्रसाद,
सब कुछ है मेरे भीतर हो गया मुझे यह विश्वास,
धीरे-धीरे समझ रही हूँ अब मैं हर एक श्वास ।

- मोनिका डागा "आनंद"
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद
रचना स्वरचित और सर्वाधिकार सुरक्षित

मुख्यमंत्री मोहन माझी ने BCPPER के लिए इकोनॉमिक प्लान लॉन्च किया

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री ने कहा कि इस रीजन के सभी शहरों में कोई न कोई अपनी पोटेंशियल, यूनिकनेस है। जैसे टेक्नोलॉजी के फील्ड में भुवनेश्वर, बिजनेस ट्रेडिशन में कटक, कल्चरल ग्लोरी में पुरी और पोर्ट-बेस्ड डेवलपमेंट में पारादीप। अब हमारा प्लान है कि इन रीजन को मॉडर्न इंफ्रास्ट्रक्चर से जोड़ा जाएगा और हर रीजन में अलग-अलग प्रोजेक्ट्स किए जाएंगे। मेटल डाउनस्ट्रीम, बायोटेक, टेक्सटाइल, केमिकल्स, टूरिज्म, एजुकेशन और IT जैसे 80 से ज़्यादा प्रोजेक्ट्स प्लान किए गए हैं। इसके साथ ही, पूरे रीजन में डेवलपमेंट और प्रॉस्पेरिटी लाने के लिए 30 से ज़्यादा पॉलिसी इनिशिएटिव्स किए जाएंगे।

महानदी जल विवाद की सुनवाई मार्च तक टली

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : महानदी जल विवाद की सुनवाई 14 मार्च तक के लिए टाल दी गई है। स्पॉट विजिट फरवरी के आखिरी हफ्ते और मार्च के पहले हफ्ते के बीच होगा। ट्रिब्यूनल के स्पॉट विजिट पूरा करने के बाद, सुनवाई 14 मार्च को होगी। ट्रिब्यूनल का टर्म 13 अप्रैल को खत्म हो रहा है। हालांकि, ओडिशा और छत्तीसगढ़ ने केंद्र सरकार से ट्रिब्यूनल का टर्म 27 मार्च, 2027 तक बढ़ाने की रिक्वेस्ट की है ।AG पीतमवर आचार्य ने कहा कि ट्रिब्यूनल चेयरपर्सन का पद खाली होने की वजह से 9 महीने से काम नहीं हुआ है और प्रोग्राम में देरी हुई है। गौरतलब है कि महानदी जल विवाद को सुलझाने के लिए मार्च 2018 में महानदी ट्रिब्यूनल बनाया गया था। नियमों के मुताबिक, विवाद को 3 साल के अंदर सुलझाना था। लेकिन पहले फेज में इसका फैसला मार्च 2023 में होना था। हालांकि, अगले फेज में राज्य सरकार के कहने पर जल संसाधन मंत्रालय ने इसका समय 13 अप्रैल, 2026 तक बढ़ा दिया था। इंटर-स्टेट रिवर वॉटर डिस्प्यूट्स एक्ट-1956 के सेक्शन 5(2) के मुताबिक, ट्रिब्यूनल की रिपोर्ट और फैसला 3 साल के अंदर जमा करना होता है। लेकिन 11 मार्च, 2021 की डेडलाइन खत्म होने के बावजूद, ट्रिब्यूनल के अपनी रिपोर्ट जमा न कर पाने के बाद केंद्र सरकार ने इस समय को 2 साल और यानी 11 मार्च, 2023 तक बढ़ा दिया। ट्रिब्यूनल ने कोरोना महामारी के कारण मार्च 2020 से जून 2021 तक काम न कर पाने का हवाला देते हुए केंद्र सरकार से डेडलाइन बढ़ाने का फिर से अनुरोध किया था। हालांकि, महानदी ओडिशा की जीवन रेखा है। राज्य के करीब 16 जिलों के लोग पीने के पानी, खेती और उद्योग के लिए इस पर निर्भर हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ सरकार ने महानदी के ऊपरी इलाकों में 60 से ज़्यादा डैम बनाकर पानी का विवाद खड़ा कर दिया। राज्य सरकार ने इस बारे में 2016 में सुप्रीम कोर्ट में शिकायत दर्ज कराई थी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर, केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय ने 12 मार्च, 2018 को तीन सदस्यों वाली जूरी के साथ महानदी जल विवाद ट्रिब्यूनल बनाया। ट्रिब्यूनल के निर्देश पर, दोनों राज्यों की टेक्निकल कमेटियों ने बार-बार दौरा किया, लेकिन यह समाधान की ओर नहीं बढ़ा। 19 मई, 2023 को महानदी जल विवाद ट्रिब्यूनल के चेयरमैन जस्टिस ए.एम. खानविलकर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल 10 दिन के ओडिशा दौरे पर आया था। इससे पहले, एक सेंट्रल ट्रिब्यूनल टीम ने छत्तीसगढ़ के बैराज इलाके का दौरा किया था। जल संसाधन विभाग ने ट्रिब्यूनल चेयरमैन के दौरे के लिए तैयारी दिखाई थी।

स्लाइट संस्थान में दो दिवसीय वर्कशॉप के दौरान ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा मिला

लोंगोवाल, 6 फरवरी (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, लोंगोवाल में 6 फरवरी को "इनोवेशन, कोलेबोरेशन और स्केलिंग के ज़रिए पारंपरिक/ऑर्गेनिक खेती के तरीकों को फिर से शुरू करना और अपग्रेड करना (2.0)" वर्कशॉप सफलतापूर्वक खत्म हुई। इस बारे में जानकारी देते हुए, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. प्रदीप कुमार जैन ने वर्कशॉप के मकसद और खास नतीजों पर रोशनी डाली।

सस्टेनेबल ग्रामीण विकास के लिए साइंटिफिक इनोवेशन और इंस्टीट्यूशनल कोलेबोरेशन के ज़रिए पारंपरिक और ऑर्गेनिक खेती के तरीकों को फिर से शुरू करने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए, स्लाइट के डायरेक्टर, प्रो. मणिकांत पासवान, एक्सपर्ट पर्सनैलिटी श्री के. ई. एन. राघवन, अकाल काउंसिल, मस्तुआना साहिब के सेक्रेटरी, श्री जसवंत सिंह खैरा और बाबा फरीद मेमोरियल एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी, लोंगोवाल ने प्रेसिडेंट श्री कमलजीत सिंह के कीमती योगदान की तारीफ़ की। इकट्ठा हुए लोगों को संबोधित करते हुए, प्रो. पासवान ने घोषणा की कि मई महीने में बाबा फरीद मेमोरियल एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी, लोंगोवाल और अकाल काउंसिल, श्री मस्तुआना साहिब के साथ मिलकर एक खास ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया जाएगा। इसका मकसद किसानों की रोजी-रोटी को मजबूत करना, पर्यावरण की स्थिरता सुनिश्चित करना और देश के सबसे अमीर कृषि राज्य पंजाब की लंबे समय तक खुशहाली को बढ़ावा देना है। 5 फरवरी की शाम को, लोंगोवाल गांव में "चाह ते चर्चा" नाम का एक इंटरैक्टिव सेशन आयोजित किया गया, जिसमें श्री राघवन ने किसानों से सीधे बातचीत की और उनके सवालों के जवाब दिए। 6 फरवरी को, श्री राघवन ने ऑर्गेनिक और नेचुरल खाद, बायो-पेस्टीसाइड और हर्बिसाइड बनाने के अलग-अलग तरीके दिखाए और ऑर्गेनिक खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए एक असरदार मॉडल के तौर पर "एक एकड़-एक गाय" खेती के कॉन्सेप्ट पर जोर दिया। लोंगोवाल और उन्नत भारत अभियान के तहत गोद लिए गए सात गांवों, बदरुख, दुग्गन, शेरों, किला भरियां, नमोल, लोहा खेड़ा और झारो के किसानों को अकाल डिग्री कॉलेज, मस्तुआना साहिब के खेती के स्टूडेंट्स के साथ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी गई। वर्कशॉप को प्रो. प्रदीप कुमार जैन, प्रो. परवीन खन्ना, डॉ. मंदीप घई, डॉ. मनोज गोयल, प्रो. नवदीप जिंदल, सनप्रीत, श्री अंशुल, श्री अंकुश और देवांगिनी ने सफलतापूर्वक ऑर्गनाइज़ और कंडक्ट किया। डायरेक्टर स्लाइट प्रो. मणिकांतन पासवान के सपोर्ट में उनके डेडिकेटेड और कोऑर्डिनेटेड प्रयासों ने प्रोग्राम को आसानी से और असरदार तरीके से चलाना पक्का किया। प्रोग्राम किसानों, स्टूडेंट्स और दूसरे स्टेकहोल्डर्स से पॉजिटिव रिस्पॉन्स के साथ खत्म हुआ, जो सस्टेनेबल और ऑर्गेनिक एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट को बढ़ावा देने के लिए स्लाइट इंस्टीट्यूट के कमिटमेंट को कन्फर्म करता है।

पूर्व केबिनेट मंत्री व वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुरेन्द्र गोयल का सम्मान समारोह कार्यक्रम

जगदीश सीरवी

हैदराबाद बालाजी नगर स्थित कुमावत समाज एसोशिएशन बालाजी नगर हैदराबाद व सर्व प्रवासी समाज बन्धुओं द्वारा शनिवार 7 फरवरी प्रातः 9.15 बजे से वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर मे पुजा अर्चना व आरती के बाद कुमावत समाज द्वारा नवनिर्मित मंदिर प्रांगण कि धन्य धरा पर सम्मान समारोह कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि सर्व समाज के लाडले आपके - अपने पूर्व कैबिनेट मंत्री व वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुरेन्द्र गोयल व गोवींद राम अडाणींया का भव्य सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जारी प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष पूनमचन्द डैया, सचिव चेतन पटेल नाराणीया ने बताया कि सम्मान समारोह कार्यक्रम में पधारे युवा दिलों की धड़कन नेक निभिक, समाज में एकता परिचय रखना है। छतीस कोम समाज के लिए कभी भी काम करने के लिए तैयार रहूंगा। समाज में गरीब परिवार को साथ लेकर चलना है मुख्य अतिथि का मंच पर राजस्थानी साफा व माला शॉल द्वारा सम्मान किया गया । विभिन्न समाजों गणमान्य पदाधिकारीयों का शॉल द्वारा सम्मान किया गया ।इस अवसर पर उपस्थित कुमावत समाज एसोशिएशन बालाजी नगर अध्यक्ष पूनमचन्द डैया, उपाध्यक्ष कालुराम चान्दोरा, सचिव चेतन पटेल नाराणीया, महामंत्री रामस्वरूप चान्दोरा , सह कोषाध्यक्ष नारायणलाल मालीया, प्रचारमंत्री जगदीश, सुरेश मालीवाड , श्रवण मालीवाड, चम्पालाल खेडावत, मंगाराम बाकेरचा, अर्जुन बावलेचा , बाबूलाल लारना , मंगला राम रेणवाल , राजूराम चांदोरा, शिव लाल मांगर, ओमप्रकाश , जगदीश नाराणीया, रामपाल भोपा, समस्त कार्यकारणी व सदस्यगण , कुमावत समाज अलवाल अध्यक्ष सोहनलाल माननीया एवं समस्त कार्यकारणी व सदस्यगण, भंवर लाला मेरोता सादनगर मारवाड़ी मार्केट एसोसिएशन के अध्यक्ष लादुराम तिलायचा, सीरवी समाज बालाजी नगर बडेर अध्यक्ष जयराम पंवार, नरेश सोलंकी, सोनाराम बर्फा, नारायणलाल बर्फा, चोलाराम, महेन्द्र सानपुरा, सीरवी टाइम्स पत्रकार दिलीप पंवार, देवासी समाज के पुजारी भुण्डाराम देवासी, राजपूत समाज हिरसिंह , जगदीश सीरवी व छतीछ कोम समाज बंधुओं उपस्थित रहे।

राउरकेला में स्क्रैप गोदामों पर पुलिस की छापेमारी

अवैध कबाड़ कारोबार और संदिग्ध सामग्री की जांच के लिए चलाया गया विशेष अभियान

राउरकेला : राउरकेला जिला पुलिस द्वारा शहर में अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से पुलिस ने विभिन्न क्षेत्रों में संचालित स्क्रैप (कबाड़) गोदामों पर व्यापक छापेमारी अभियान बीते दो दिनों से चलाया जा रहा है 1 यह कार्रवाई शहर के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में एक साथ की गई, जहां पुलिस टीमों ने कई स्क्रैप गोदामों की जांच कर दस्तावेजों और संग्रहीत सामग्री का सत्यापन किया जा रहा है1

पुलिस सूत्रों के अनुसार, कुछ केस दर्ज किये जा चुके हैं कुछ प्रक्रियारत हैं वहीं साढ़े आठ टन की जब्ती की जा चुकी है व दो सौ टन की पड़ताल जारी है1हाल के दिनों में चोरी की लोहे की सामग्री, औद्योगिक कबाड़ और संदिग्ध स्रोतों से लाई गई धातुओं की खरीद-बिक्री की शिकायतें सामने आने के बाद यह अभियान शुरू किया गया। छापेमारी के दौरान गोदाम संचालकों से खरीद-बिक्री से संबंधित रजिस्टर, बिल और वैध लाइसेंस की जांच की गई। कई स्थानों पर दस्तावेजों में अनियमितता पाए जाने की भी जानकारी मिली है, जिसकी जांच जारी है।

अधिकारियों ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य अवैध कबाड़ कारोबार पर रोक लगाना, चोरी की घटनाओं पर नियंत्रण करना और औद्योगिक क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि बिना वैध दस्तावेजों के स्क्रैप की खरीद-बिक्री करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी किन्तु जानकारों के अनुसार इस कारोबार में स्टॉफ को ही गिरफ्तार किया जाता है मालिक पर्दे के पीछे ही रहता है जिससे या तो गिरफ्तारी नहीं होती या फिर जमानत लेकर पुनः इसी कारोबार में क्रियाशील हो जाता है1

छापेमारी के दौरान पुलिस की मौजूदगी से क्षेत्र में हलचल देखी गई, वहीं गोदाम संचालकों को नियमों का पालन करने की सख्त चेतावनी दी गई। पुलिस का कहना है कि शहर में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए इस तरह के अभियान आगे भी जारी रहेंगे।

केंद्रीय जेल अमृतसर की न्यायिक जांच; कैदियों के लिए दो सप्ताह का मेडिकल कैंप लगाने के आदेश

अमृतसर, 7 फरवरी (साहिल बेरी)

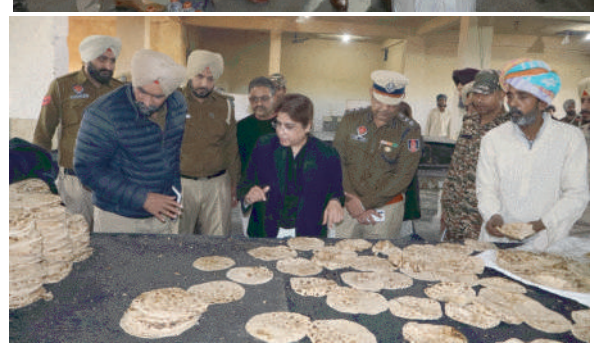

जिला एवं सत्र न्यायाधीश अमृतसर माननीय श्रीमती जतिंदर कौर ने अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (ACJM) श्रीमती परमिंदर कौर बैंस, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (CJM) श्रीमती सुप्रीत कौर तथा जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण (DLSA) अमृतसर के सचिव श्री अमरदीप सिंह बैंस के साथ केंद्रीय जेल अमृतसर का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण की व्यवस्था जेल सुपरिंटेंडेंट श्री राजीव कुमार अरोड़ा द्वारा की गई।

निरीक्षण के दौरान जेल की बैरकों, रसोई, चिकित्सा सुविधाओं, स्वच्छता व्यवस्था, सुरक्षा प्रणाली तथा जेल रिकॉर्ड की विस्तार से समीक्षा की गई। भोजन की गुणवत्ता, पीने के पानी, सफाई के मानकों और स्वास्थ्य सेवाओं की गंभीरता से जांच की गई। बैरकें और रसोई साफ-सुथरी एवं सुव्यवस्थित पाई गईं तथा समग्र व्यवस्थाएं संतोषजनक रहीं।

माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा साथ गए अधिकारियों ने अंडरट्रायल कैदियों एवं दोषसिद्ध कैदियों से बातचीत कर उनकी शिकायतें सुनीं और त्वरित निवारण हेतु आवश्यक निर्देश जारी किए। अंडरट्रायल कैदियों की समय पर अदालत में पेशी, न्यायालय के आदेशों की सख्त अनुपालना तथा मानवीय जीवन स्थितियों को बनाए रखने पर विशेष जोर दिया गया।

कैदियों द्वारा दर्ज की गई मांगों एवं चिकित्सा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सिविल सर्जन अमृतसर को केंद्रीय जेल अमृतसर में दो सप्ताह का विशेष मेडिकल कैंप लगाने के आदेश दिए गए। साथ ही मौके पर पोर्टेबल जांच सुविधाएं उपलब्ध करवाने के निर्देश भी जारी किए गए, ताकि समय पर स्क्रीनिंग, निदान एवं उपचार सुनिश्चित किया जा सके।

जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण अमृतसर के सचिव श्री अमरदीप सिंह बैंस द्वारा कैदियों के लिए कानूनी जागरूकता सत्र आयोजित किया गया, जिसमें मुफ्त कानूनी सहायता, लोक अदालतों, प्ली बार्गेनिंग तथा अन्य कानूनी सेवाओं की जानकारी दी गई। इस दौरान महिला कैदियों, वृद्ध कैदियों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों पर विशेष ध्यान दिया गया।

निरीक्षण के दौरान कानूनी सहायता क्लीनिकों, जेल लोक अदालतों तथा पैरा-लीगल वॉलंटियर्स के कार्यों की भी समीक्षा की गई और कानूनी जागरूकता एवं पुनर्वास आधारित पहलों को और मजबूत करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए।

इस निरीक्षण के माध्यम से जिला न्यायपालिका एवं जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण अमृतसर ने न्याय तक पहुंच, कैदियों के कल्याण तथा सुधारात्मक जेल प्रशासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। जेल सुपरिंटेंडेंट द्वारा जारी सभी निर्देशों की पूर्ण अनुपालना का आश्वासन दिया गया।

विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने पैरेंट्स-टीचर मीट में की शिरकत, शिक्षा की गुणवत्ता पर दिया जोर

अमृतसर, 07 जनवरी (साहिल बेरी)

आम आदमी पार्टी के अमृतसर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने आज सरकारी स्कूल ऑफ एमिनेंस, छेहर्टा तथा सरकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, घनुपुर में आयोजित पैरेंट्स-टीचर मीट में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों की पढ़ाई, अनुशासन और सर्वांगीण विकास को लेकर अभिभावकों एवं अध्यापकों से विचार-विमर्श किया तथा बच्चों की शैक्षणिक प्रगति की जानकारी प्राप्त की।

डॉ. संधू ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भगवंत मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार शिक्षा क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। सरकारी विद्यालयों में नए कक्षों का निर्माण, स्मार्ट बोर्ड, पुस्तकालयों तथा खेल मैदानों का विकास किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थियों को आधुनिक एवं सुविधाजनक शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

उन्होंने शिक्षकों की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षक समाज की नींव होते हैं और बच्चों के भविष्य को संवारने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों से मन लगाकर पढ़ाई करने और अभिभावकों से बच्चों की प्रत्येक गतिविधि पर विशेष ध्यान देने की अपील की।

इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन द्वारा स्कूलों में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी भी साझा की गई। अभिभावकों ने भी अपने सुझाव देते हुए शिक्षा के स्तर को और बेहतर बनाने में पूर्ण सहयोग देने का भरोसा दिलाया।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य घनुपुर प्रदीप आनंद, प्रिंसिपल स्कूल ऑफ एमिनेंस मनमीत कौर, बीआरसी शिखा दुआ, राकेश कुमार, रुपिंदर कौर, नवदीप कौर, चेतन शर्मा, मानिक कौशल, चेयरमैन गुरदेव सिंह जज, पीए माधव शर्मा, पीए अमरजीत शेरगिल सहित विद्यालय स्टाफ, अभिभावक, विद्यार्थी एवं स्थानीय नेता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

झारखंड के गिरीडीह में नक्सलियों के विरूद्ध एस पी विमल कुमार को अपार सफलता

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची ,नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के खिलाफ गिरिडीह पुलिस और सीआरपीएफ को महत्वपूर्ण कामयाबी मिली है. सीआरपीएफ और पुलिस के ज्वाइंट ऑपरेशन में टीम ने नक्सलियों के द्वारा छिपाकर रखे गए हथियार और विस्फोटक बरामद किया गया है. यह सफलता जिला के पुलिस कप्तान डॉ. बिमल कुमार और सीआरपीएफ 154 बटालियन के कमांडेंट सुनीलदत्त त्रिपाठी को मिली सूचना पर मिली है.

सफलता की जानकारी एसपी डॉ. बिमल कुमार ने शनिवार की शाम को प्रेस वार्ता कर दी. एसपी ने बताया कि उन्हें और सीआरपीएफ 154 बटालियन के कमांडेंट को यह सूचना मिली थी कि पारसनाथ की तराई वाले इलाके में नक्सलियों ने असलहा और बारूद छिपाकर रखा

इस सूचना पर अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) सुरजीत कुमार एवं सीआरपीएफ, 154 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी कुमार ओम प्रकाश सिंह, सहायक कमांडेट सीएच तोम्बा सिंह के नेतृत्व में नक्सलियों के विरूद्ध एक संयुक्त ऑपरेशन प्लान तैयार किया गया. प्लान के तहत सीआरपीएफ एफ/154 बटालियन, समवाय एवं जिला पुलिस गिरिडीह के द्वारा ज्वाइंट ऑपरेशन शुरू किया गया. सर्च ऑपरेशन के दौरान खुखरा थाना क्षेत्र से सटे पारसनाथ पहाडी के भालकी पहाड़ी, कानेडीह के समीप बीडीडीएस टीम की सहायता से नक्सलियों द्वारा गढ्ढे में छुपा कर रखे गये भारी मात्रा में हथियार, गोला, बारूद एवं अन्य प्रतिबंधित सामग्रियों को बरामद किया गया.

एसपी ने बताया कि बरामद सामानों में 303 बोल्ट एक्शन सिंगल शॉट राइफल 11 पीस, प्वाइंट 22 राइफल 9 पीस, ग्रेनेड 6 पीस, एसएलआर ग्रेंड प्रोजेक्टर एक पीस, एएमएन बॉक्स 01 पीस, चार्ज क्लिप, 30 पीस, इलेक्ट्रिक कॉपर वायर दो बंडल शामिल है।

भगतां वाला दाना मंडी के पांचवीं बार बने अध्यक्ष अमनदीप छीना की हुई ताजपोशी

छीना ने ताजपोशी दौरान 41 मेंबरी कमेटी का किया गठन

अमृतसर 7 फरवरी (साहिल बेरी)

जिले की सबसे बड़ी दाना मंडी भगतां वाला में प्रधानगी पद को लेकर हुए चुनाव में पांचवीं बार अध्यक्ष बने अमनदीप सिंह छीना की शनिवार को ताजपोशी की गई। इस मौके अध्यक्ष अमनदीप सिंह छीना द्वारा आढ़तियों की समस्याओं तथा मंडी के विकास हेतु 41 मेंबरी कमेटी का गठन किया गया, जिस दौरान गुरभिंदर सिंह ममनके को चेयरमैन, कुलबीर सिंह रंधावा महासचिव, हरपाल सिंह खालसा सचिव, सुबेग सिंह बंडाला कैशियर, मनोज कुमार शर्मा,राकेश कुमार तुली, कंवरप्रीत सिंह मिंटू, सुखदेव सिंह वनीईके, सकतर सिंह बब्बू वडाली, रेशम सिंह भुल्लर, कुलबीर सिंह, साहिब सिंह, गुरमेज सिंह चौगावां, जरनैल सिंह बाठ, नरिंदर सिंह नामधारी, गुरभेज सिंह, गुअवतार सिंह चाटीविंड, रणजीत सिंह मिंटू पंजवड़, सतनाम सिंह तौल, गुरजीत सिंह झबाल, प्रेम सिंह सोहल, जीवा सोहल, कुलविंदर सिंह मध, जगतार सिंह मोड़ें, वीनू अरोड़ा, सतबीर सिंह गुमटाला, परषोतम सिंह बाठ (सभी सीनियर उपाध्यक्ष), सोनू लेखराज, मनोज कुमार, मुंशी राम, संजीव कुमार बिट्टू, रेशम सिंह अवान, गुलशन सिंह एजी सरां, बलदेव सिंह चाटीविंड, गुरिंदर सिंह वरपाल, सिमरजीत सिंह राजासांसी, अमृतपाल सिंह लाडी बच्चीविंड, जगजीत सिंह जग्गा, गुरदेव सिंह बाठ, जगजीत सिंह सुखमण, विक्की बिशनदास, बलजीत सिंह बंटी पंजवड़, अजयपाल ढिल्लों सरबजीत सिंह चविंडा (सभी उपाध्यक्ष) नियुक्त किए गए।

इस मौके प्रधान अमनदीप सिंह छीना ने कहा कि आढ़तियों तथा एसोसिएशन की समस्या को फहल के आधार पर हल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि उनका मुख्य उद्देश्य मंडी के विकास तथा नवीनीकरण को पहल देना है ताकि आढ़तियों तथा एसोसिएशन को किसी तरह की परेशानी उत्पन्न ना हो। अध्यक्ष अमनदीप सिंह छीना ने वोटरों को धन्यवाद करते हुए कहा कि वह आढ़तियों व ट्रेडर्स एसोसिएशन के बेहद आभारी हैं, जिन्होंने पांचवीं बार प्रधानगी का ताज पहनाया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने पहले भी बिना भेदभाव दाना मंडी के विकास तथा आढ़तियों व ट्रेडर्स एसोसिएशन की हर समस्या को हल करने का प्रयास किया है आगे भी वह जो रहते विकास कार्य है उनको जल्द पूरा करवाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

इस मौके नवनियुक्त पदाधिकारियों ने अमनदीप छीना का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह बिना किसी भेदभाव के सभी का साथ देंगे तथा उनका भी भरपूर सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि मंडी के विकास तथा आढ़तियों की समस्याओं को हल करवाने के लिए वह हर संभव प्रयास करेंगे तथा जिले में संगठन को मजबूत किया जाएगा। सभी को एकजुट करके दाना मंडी को नए मुकाम पर ले जाने का प्रयास रहेगा। यदि किसी के कोई मतभेद या मनभेद होंगे तो उन्हें भी दूर करके सभी को एक करने की कोशिश रहेगी।

जमशेदपुर के कपाली इलाके से पकड़ाये देश दहलाने वाले दो संदिग्ध

गणतंत्र दिवस पर 26 स्थानों पर धमाके का धमकी भरी मामला ,ले गयी दिल्ली पुलिस

जमशेदपुर ,,दिल्ली पुलिस की स्पैशल सेल ने जमशेदपुर के कपाली थाना क्षेत्र में बड़ी कार्रवाई करते हुए दो संदिग्धों को गिरफ्तार किया है। यह छापेमारी गणतंत्र दिवस के अवसर पर कथित आतंकी धमकी से जुड़े मामले की जांच के तहत की गई। दोनों संदिग्धों को हिरासत में लेकर आवश्यक कानूनी प्रक्रिया के बाद दिल्ली ले जाया गया है।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, कपाली थाना क्षेत्र के अलकबीर पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास स्थित एक मकान में सटीक इनपुट के आधार पर यह कार्रवाई की गई। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच की स्पेशल सेल की टीम अचानक मौके पर पहुंची और मकान में छापेमारी की। इसके बाद दो व्यक्तियों को हिरासत में लेकर पहले कपाली थाना लाया गया, जहां प्रारंभिक पूछताछ की गई।

गिरफ्तार किए गए संदिग्धों में से एक का नाम मोहम्मद शमी बताया जा रहा है, जबकि दूसरे की पहचान अभी आधिकारिक रूप से सार्वजनिक नहीं की गई है। पूछताछ के बाद दोनों को दिल्ली पुलिस अपने साथ दिल्ली ले गई। फिलहाल इस पूरे मामले पर दिल्ली पुलिस की ओर से आधिकारिक बयान नहीं मिल पाया है ।सूत्रों के मुताबिक, यह कार्रवाई 26 जनवरी

को देशभर में 26 स्थानों पर धमाका करने की कथित धमकी से जुड़े मामले में की गई है। जांच एजेंसियों को इनपुट मिला था कि आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े कुछ तत्व सक्रिय हो सकते हैं। इसी सिलसिले में दिल्ली पुलिस पहले ही 14 संदिग्धों की तस्वीरें सार्वजनिक कर चुकी है, जिन पर साजिश रचने का आरोप है।

छापेमारी के बाद कपाली और आसपास के इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। स्थानीय पुलिस भी स्थिति पर कड़ी नजर बनाए हुए है। हालांकि अभी तक किसी भी आपत्तिजनक सामग्री की बरामदगी को लेकर आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

दिल्ली पुलिस की इस कार्रवाई को गणतंत्र दिवस के मद्देनजर सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता के तौर पर देखा जा रहा है। मामले में आगे की जांच जारी है और आने वाले दिनों में और खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।

झारखंड निकाय चुनाव में एक उम्मीदवार का स्वर्णिम अतीत ऐसा भी

राजा प्रताप आदित्य को चुनाव चिन्ह मिला - छड़ी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राचीं, झारखंड में जिन 48 शहरी निकायों में चुनाव कराए जाने है , उनमें नगर निगम 20 ,नगर परिषद और 19 नगर पंचायत शामिल है। जहां कुल वार्ड की संख्या 1087 भले ही हो पर सरायकेला नगर पंचायत का जो रूतबा रहा है वह अन्यत्र दुर्लभ है । सरायकेला पहले एक नगर पालिका रहा जिसकी 1889 में सरायकेला राज परिवार ने आधारशिला रखी थी जब एक तिहाई इलाके पर अंग्रेजो का आधिपत्य रहा भारत देश में । तब जब अन्य जगह नगर के जनों को उनकी बुनियादी सुविधाएं शायद ही उपलब्ध था या वे सोच पाते थे ।

एक नगर पालिका फिर पंचायत के साथ साथ आज झारखंड स्थित ऐतिहासिक शहर सरायकेला जो कभी A श्रेणी का देशी रियासत (1620-1947) राजधानी रहा , जिसका विधिवत विलय भारतीय अधिराज्य Dominion of India मे 15 नबम्वर 1947 को सरदार पटेल के समक्ष कटक में हुआ था । उसमें हस्ताक्षरित करने वाले महत्वपूर्ण शख्स रहे महाराज आदित्य प्रताप सिंहदेव तथा गवर्नर जनरल की तरफ से भी पी मेनन।

जिस सरायकेला राजमहल ने अनेकों शासक राजाओं को दिया और दिया तीन तीन विधायक भी बिहार विधानसभा को ।सभी ओडिया थे ,ओड़िया हित , सम्मान , उन्नति की बात रखते आ रहे थे बिहार सरकार में ।

सरायकेला राज महल - सिंहभूम की राज्य देवी मां पाउडी की मंदिर के रूप में जाना जाता है यह राजमहल ।

बिहार विधानसभा में सरायकेला राज महल से जिन विधायक गण बने उनमें (अन्तिम शासक राजा)स्व आदित्य प्रताप सिंहदेव , उनके पुत्र स्व टिकायत नृपेंद्र नारायण सिंहदेव , उनके पुत्र स्व सतभानु सिंहदेव रहे हैं ।

नगर पंचायत चुनाव को लेकर आम जनों के साथ राजा तथा रानी साहिबा की एक अति महत्वपूर्ण बैठक भी उसी राजमहल के बैठकी कक्ष में शनिवार को की । जिसका उद्देश्य वर्तमान सरायकेला नगर पंचायत अध्यक्ष पद हेतु उम्मीदवार राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव ने जनता से जाननी चाही आखिर वे चुनाव लड़ेंगे या नहीं ! इस पर मुहल्ले के प्रबुद्धजनों ने उन्हें हर हाल में चुनाव लडने की अपील की । इसी क्रम में आज उन्हें समाहरणालय चुनाव कक्ष मे चुनाव चिन्ह के रुप में छड़ी प्रदान की गयी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023